DSE-3

रेखाचित्र एवं संस्मरण

एन ई पी -2020 पाठ्यक्रम पर आधारित

बी. ए. (हिन्दी)

(तृतीय सेमेस्टर के लिए)

दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र

मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी

हैदराबाद-32, तेलंगाना, भारत

© Maulana Azad National Urdu University, Hyderabad

Course : **Rekhachitra Evam Sansmaran**

ISBN: 978-XX-XXX-X-X

First Edition: March, 2025

Publisher	:	Registrar, Maulana Azad National Urdu University
Edition	:	2025
Copies	:	000
Price	:	000
Copy Editing	:	Dr. Wajada Ishrat, CODE, MANUU, Hyderabad Dr. L. Anil, CODE, MANUU, Hyderabad
Cover Designing	:	Dr. Mohd. Akmal Khan, CODE, MANUU, Hyderabad
Printing	:	Print Times & Business Enterprises, Hyderabad (Tentative)

Rekhachitra Evam Sansmaran

For

B.A. Hindi

3rd Semester

On behalf of the Registrar, Published by:

Centre for Distance and Online Education

Maulana Azad National Urdu University

Gachibowli, Hyderabad-500032 (TG), Bharat

*Director:*dir.CODE @manuu.edu.in *Publication:* CODE publication@manuu.edu.in

Phone number: 040-23008314 Website: manuu.edu.in

© All rights reserved. No part of this publication may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronically or mechanically, including photocopying, recording or any information storage or retrieval system, without prior permission in writing from the publisher (registrar@manuu.edu.in)

संपादक

डॉ. आफ़ताब आलम बेग
सहायक कुल सचिव,
दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र , मानू

Editor

Dr. Aftab Alam Baig
Assistant Registrar
CODE , MANUU

संपादक-मंडल
(Editorial Board)

प्रो. ऋषभदेव शर्मा
पूर्व अध्यक्ष, उच्च शिक्षा और शोध संस्थान,
दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, हैदराबाद
परामर्शी (हिन्दी), दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र , मानू

Prof. Rishabha Deo Sharma
Former Head, P.G. and Research Institute, Dakshin Bharat Hindi Prachar Sabha, Hyderabad
Consultant (Hindi), CODE , MANUU

प्रो. श्याम राव राठोड़
प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
अंग्रेज़ी और विदेशी भाषा वि.वि.,हैदराबाद

Prof. Shyamrao Rathod
Professor, Department of Hindi
EFL University, Hyderabad

प्रो. गंगाधर वानोडे
क्षेत्रीय निदेशक
केंद्रीय हिन्दी संस्थान, सिकंदराबाद, हैदराबाद

Prof. Gangadhar Wanode
Regional Director
Central Institute of Hindi
Secunderabad, Hyderabad.

डॉ. आफ़ताब आलम बेग
सहायक कुल सचिव,
दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र, मानू

Dr. Aftab Alam Baig
Assistant Registrar, CODE , MANUU

डॉ. वाजदा इशरत
असिस्टेंट प्रोफेसर (हिन्दी)
दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र, मानू

Dr. Wajada Ishrat
Assistant Professor (Hindi)
CODE , MANUU

डॉ. एल. अनिल
अतिथि प्राध्यापक/असिस्टेंट प्रोफ़ेसर (सं)
दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र, मानू

Dr. L. Anil
Guest Faculty/Assistant Professor (Cont.)
CODE , MANUU

पाठ्यक्रम -समन्वयक

डॉ. आफताब आलम बेग
सहायक कुल सचि, दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र
मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी, हैदराबाद

लेखक **इकाई संख्या**

- **डॉ. वाजदा इशरत,** असिस्टेंट प्रोफेसर (हिन्दी), दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र, मानू 1
- **डॉ. एल. अनिल,** अतिथि प्राध्यापक/असिस्टेंट प्रोफेसर(सं), दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, मानू, हैदराबाद 2
- **डॉ. बलजीत कुमार श्रीवास्तव,** सहायक आचार्य, बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर केंद्रीय विश्वविद्यालय, लखनऊ 3
- **संतोषी** 4
- **डॉ. शशिबाला**, पूर्व हिन्दी अध्यापक, केंद्रीय विद्यालय, राष्ट्रीय पुलिस अकादमी, हैदराबाद 5
- **डॉ. सुषमा देवी**, एसोशिएट प्रोफेसर (हिन्दी), बद्रुका कॉलेज, हैदराबाद 6
- **डॉ. सुपर्णा मुखर्जी,** सहायक प्रोफेसर, भवन्स विवेकानंद डिग्री कॉलेज, सिकंदराबाद 7
- **श्री धर्मेंद्र कुमार सिंह,** सहायक शिक्षक, यूएचएस भतखोरिया गर्ल्स, बनियाडीह, गोड्डा(झारखंड) 8

विषयानुक्रमणिका

संदेश	:	कुलपति	6
संदेश	:	निदेशक	8
भूमिका	:	पाठ्यक्रम–समन्वयक	9

खंड/ इकाई		विषय	पृष्ठ संख्या
खंड 1	**:**		
इकाई 1	:	रेखाचित्र एवं संस्मरण : परिभाषा, महत्त्व एवं अंतर	13
इकाई 2	:	रेखाचित्र एवं संस्मरण का इतिहास	28
इकाई 3	:	रेखाचित्र : अंधी चमारिन (बनारसी दास चतुर्वेदी)	39
इकाई 4	:	रेखाचित्र : तिब्बत की सीमा पर (राहुल सांस्कृत्यायन)	51
खंड 2	**:**		
इकाई 5	:	रेखाचित्र : आदमी का बच्चा (हरिशंकर परसाई)	68
इकाई 6	:	संस्मरण : आचार्य रामचंद्र शुक्ल – कुछ संस्मरण (रायकृष्ण दास)	80
इकाई 7	:	संस्मरण : महाकवि जयशंकर प्रसाद (शिवपूजन सहाय)	100
इकाई 8	:	संस्मरण : राजेंद्र बाबू (रामधारी सिंह दिनकर)	133

प्रूफ रीडर:

प्रथम : डॉ. वाजदा इशरत, असिस्टेंट प्रोफेसर (हिन्दी),
दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र, मानू

द्वितीय : डॉ. एल. अनिल, अतिथि प्राध्यापक/ असिस्टेंट प्रोफेसर (संविदा),
दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र, मानू

अंतिम : डॉ. आफताब आलम बेग, सहायक कुल सचिव,
दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र, मानू

संदेश

मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटीकी स्थापना 1998 में संसद के एक अधिनियम द्वारा की गई थी। यह NAAC मान्यता प्राप्त एक केंद्रीय विश्वविद्यालय है। विश्वविद्यालय का अधिदेश है: (1) उर्दू भाषा का प्रचार-प्रसार और विकास (2) उर्दू माध्यम से व्यावसायिक और तकनीकी शिक्षा (3) पारंपरिक और दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से शिक्षा प्रदान करना, और (4) महिला शिक्षा पर विशेष ध्यान देना। यही वे बिंदु हैं जो इस केंद्रीय विश्वविद्यालय को अन्य सभी केंद्रीय विश्वविद्यालयों से अलग करते हैं और इसे एक अनूठी विशेषता प्रदान करते हैं, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी मातृभाषा और क्षेत्रीय भाषाओं में शिक्षा के प्रावधान पर जोर दिया गया है।

उर्दू माध्यम से ज्ञान-विज्ञान के प्रचार-प्रसार का एकमात्र उद्देश्य उर्दू भाषी समुदाय के लिए समकालीन ज्ञान और विषयों की पहुंच को सुविधाजनक बनाना है। लंबे समय से उर्दू में पाठ्यक्रम सामग्री का अभाव रहा है। इस लिए उर्दू भाषा में पुस्तकों की अनुपलब्धता चिंता का विषय रहा है। नई शिक्षा नीति 2020 के दृष्टिकोण के अनुसार उर्दू विश्वविद्यालय मातृभाषा / घरेलू भाषा में पाठ्यक्रम सामग्री प्रदान करने की राष्ट्रीय प्रक्रिया का हिस्सा बनने का सौभाग्य मानता है। इसके अतिरिक्त उर्दू में पठन सामग्री की अनुपलब्धता के कारण उभरते क्षेत्रों में अद्यतन ज्ञान और जानकारी प्राप्त करने या मौजूदा क्षेत्रों में नए ज्ञान प्राप्त करने में उर्दू भाषी समुदाय सुविधाहीन रहा है। ज्ञान के उपरोक्त कार्य-क्षेत्र से संबंधित सामग्री की अनुपलब्धता ने ज्ञान प्राप्त करने के प्रति उदासीनता का वातावरण बनाया है जो उर्दू भाषी समुदाय की बौद्धिक क्षमताओं को मुख्य रूप से प्रभावित कर सकता है। ये वह चुनौतियां है जिनका सामना उर्दू विश्वविद्यालय कर रहा है। स्व-अध्ययन सामग्री का परिदृश्य भी बहुत अलग नहीं है। प्रत्येक शैक्षणिक वर्ष के प्रारंभ में स्कूल/कॉलेज स्तर पर भी उर्दू में पाठ्य पुस्तकों की अनुपलब्धता पर चर्चा होती है। चूंकि उर्दू विश्वविद्यालय की शिक्षा का माध्यम केवल उर्दू है और यह विश्वविद्यालय लगभग सभी महत्वपूर्ण विषयों के पाठ्यक्रम प्रदान करता है, इसलिए इन सभी विषयों की पुस्तकों को उर्दू में तैयार करना विश्वविद्यालय की सबसे महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है। इन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय अपनेदूरस्थ शिक्षा के छात्रों को स्व-अध्ययन सामग्री अथवा सेल्फ लर्निंग मैटेरियल (SLM) के रूप में पाठ्य सामग्री उपलब्ध कराता है। वहीं उर्दू माध्यम से ज्ञान प्राप्त करने के इच्छुक किसी भी व्यक्ति के लिए भी यह सामग्री उपलब्ध है। अधिकाधिक लोग इससे लाभान्वित हो सकें, इसके लिए उर्दू में इलेक्ट्रॉनिक पाठ्य सामग्री अथवा eSLM विश्वविद्यालय की वेबसाइट से मुफ्त डाउनलोड के लिए उपलब्ध है।

मुझे अत्यंत प्रसन्नता है कि संबंधित शिक्षकों की कड़ी मेहनत और लेखकों के पूर्ण सहयोग के कारण पुस्तकों के प्रकाशन का कार्य उच्च-स्तर पर प्रारंभ हो चुका है। दूरस्थ शिक्षा के छात्रों

की सुविधा के लिए, स्व-अध्ययन सामग्री की तैयारी और प्रकाशन की प्रक्रिया विश्वविद्यालय के लिए सर्वोपरि है। मुझे विश्वास है कि हम अपनी स्व-शिक्षण सामग्री के माध्यम से एक बड़े उर्दू भाषी समुदाय की आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम होंगे और इस विश्वविद्यालय के अधिदेश को पूरा कर सकेंगे।

एक ऐसे समय जब हमारा विश्वविद्यालय अपनी स्थापना की 25वीं वर्षगांठ मना रहा है, मुझे इस बात का उल्लेख करते हुए हर्ष हो रहा है कि विश्वविद्यालय का दूरस्थ शिक्षा निदेशालय कम समय में स्व-अध्ययन सामग्री तथा पुस्तकें तैयार कर विद्यार्थियों को पहुंचा रहा है। देश के कोने कोने में छात्र विभिन्न दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों से लाभान्वित हो रहे हैं। यद्यपि पिछले दो वर्षों के दौरान कोविड-19 की विनाशकारी स्थिति के कारण प्रशासनिक मामले और संचारचलन भी काफी कठिन रहे हैं लेकिन विश्वविद्यालय द्वारा दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों को सफलतापूर्वक संचालित करने के लिए सर्वोत्तम प्रयास किया जा रहा है। मैं विश्वविद्यालय से जुड़े सभी विद्यार्थियों को इस विश्वविद्यालय का अंग बनने के लिए हृदय से बधाई देता हूं और यह विश्वास दिलाता हूँ कि मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय का शैक्षिक मिशन सदैव उनके के लिए ज्ञान का मार्ग प्रशस्त करता रहेगा।

शुभकामनाओं सहित!

प्रो. सैयद ऐनुल हसन
कुलपति

संदेश

दूरस्थ शिक्षा प्रणाली को पूरी दुनिया में अत्यधिक कारगर और लाभप्रद शिक्षा प्रणाली की हैसियत से स्वीकार किया जा चुका है और इस शिक्षा प्रणाली से बड़ी संख्या में लोग लाभान्वित हो रहे हैं। मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी ने भी अपनी स्थापना के आरंभिक दिनों से ही उर्दू तबके की शिक्षा की स्थिति को महसूस करते हुए इस शिक्षा प्रणाली को अपनाया है। मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी का बाकायदा प्रारम्भ 1998 में दूरस्थ शिक्षा प्रणाली और ट्रांसलेशन डिविजन से हुआ था और इस के बाद 2004 में बाकायदा पारंपरिक शिक्षा का आगाज़ हुआ। पारंपरिक शिक्षा के विभिन्न विभाग स्थापित किए गए। नए स्थापित विभागों और ट्रांसलेशन डिविजन में नियुक्तियाँ हुईं। उस वक़्त के शिक्षा प्रेमियों के भरपूर सहयोग से स्व-अधिगम सामग्री को अनुवाद व लेखन के द्वारा तैयार कराया गया।

पिछले कई वर्षों से यूजीसी-डीईबी (UGC-DEB) इस बात पर ज़ोर देता रहा है किदूरस्थ शिक्षा प्रणाली के पाठ्यक्रम व व्यवस्था को पारंपरिक शिक्षा प्रणाली के पाठ्यक्रम व व्यवस्था से लगभग जोड़कर दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के मयार को बुलंद किया जाय। चूंकि मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी दूरस्थ शिक्षा और पारंपरिक शिक्षा का विश्वविद्यालय है, अतः इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए यूजीसी-डीईबी (UGC-DEB) के दिशा निर्देशों के मुताबिक दूरस्थ शिक्षा प्रणाली और पारंपरिक शिक्षा प्रणाली के पाठ्यक्रम को जोड़कर और गुणवततापूर्ण करके स्व-अधिगम सामग्री को पुनः क्रमवार यू.जी. और पी.जी. के विद्यार्थियों के लिए क्रमशः 6 खंड-24 इकाइयों और 4 खंड – 16 इकाइयों पर आधारित नए तर्ज़ की रूपरेखा पर तैयार कराया जा रहा है।

दूरस्थ शिक्षा निदेशालय यू.जी., पी.जी., बी.एड., डिप्लोमा और सर्टिफिकेट कोर्सेज पर आधारित कुल 15 पाठ्यक्रम चला रहा है। बहुत जल्द ही तकनीकी हुनर पर आधारित पाठ्यक्रम शुरू किए जाएंगे। अधिगमकर्ताओं की सरलता के लिए 9 क्षेत्रीय केंद्र (बंगलुरु, भोपाल, दरभंगा, दिल्ली, कोलकाता, मुंबई, पटना, रांची और श्रीनगर) और 5 उपक्षेत्रीय केंद्र (हैदराबाद, लखनऊ, जम्मू, नूह और अमरावती) का एक बहुत बड़ा नेटवर्क तैयार किया है। इन केन्द्रों के अंतर्गत एक साथ 155 अधिगम सहायक केंद्र (लर्निंग सपोर्ट सेंटर) काम कर रहे हैं। जो अधिगमकर्ताओं को शैक्षिक और प्रशासनिक सहयोग उपलब्ध कराते हैं। दूरस्थ शिक्षा निदेशालय (डी. डी. ई.) ने अपनी शैक्षिक और व्यवस्था से संबन्धित कार्यों में आई.सी.टी. का इस्तेमाल शुरू कर दिया है। इसके अलावा अपने सभी पाठ्यक्रमों में प्रवेश सिर्फ ऑनलाइन तरीके से ही दे रहा है।

दूरस्थ शिक्षा निदेशालय की वेबसाइट पर अधिगमकर्ता को स्व-अधिगम सामग्री की सॉफ्ट कॉपियाँ भी उपलब्ध कराई जा रही हैं। इसके अतिरिक्त शीघ्र ही ऑडियो-वीडियो रिकॉर्डिंग का लिंक भी वैबसाइट पर उपलब्ध कराया जाएगा। इसके साथ-साथ अध्ययन व अधिगम के बीच एसएमएस (SMS) की सुविधा उपलब्ध की जा रही है। जिसके द्वारा अधिगमकर्ताओं को पाठ्यक्रमों के विभिन्न पहलुओं जैसे- कोर्स के रजिस्ट्रेशन, दत्तकार्य, काउंसलिंग, परीक्षा के बारे में सूचित किया जाता है।

आशा है कि देश में शैक्षिक और आर्थिक रूप से पिछड़ी हुई उर्दू आबादी को मुख्यधारा में शामिल करने में दूरस्थ शिक्षा निदेशालय की भी मुख्य भूमिका होगी।

प्रो. मो. रज़ाउल्लाह ख़ान
निदेशक, दूरस्थ शिक्षा निदेशालय

भूमिका

"रेखाचित्र एवं संस्मरण" शीर्षक यह पुस्तक मौलाना आजाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी, हैदराबाद के राष्ट्रीय शिक्षा नीति - 2020 पाठ्यक्रम पर आधारित चारवर्षीय बीए के तृतीय सत्र (डीएसई) के दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा माध्यम के छात्रों के लिए तैयार की गई है। इसकी संपूर्ण योजना विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) के निर्देशों के अनुसार नियमित माध्यम के पाठ्यक्रम के अनुरूप रखी गई है।

19वीं शताब्दी के मध्य में जिस समय से हिंदी साहित्य के आधुनिक काल का आरंभ माना जाता है, वह भारत में मुद्रण की सुविधा और पत्रकारिता के विकास का भी समय रहा है। इस नई सुविधा के आने के कारण साहित्य में कविता से आगे बढ़कर गद्य का विकास हुआ और युगानुरूप गद्य की अनेक विधाएँ सामने आईं। इन विधाओं में 'स्मृति पर आधारित' अथवा 'अकाल्पनिक' गद्य के जो कई रूप प्रकट हुए, उनमें रेखाचित्र एवं संस्मरण का विशेष स्थान है। हिंदी में इन दोनों विधाओं (जो बड़ी हद तक जुड़वाँ विधाएँ भी कही जा सकती हैं) के विकास और स्वरूप से परिचित कराने के लिए ही यह पाठ्यक्रम 'रेखाचित्र एवं संस्मरण' निर्मित किया गया है। यही कारण है कि इस पाठ्यक्रम की आरंभिक दो इकाइयों में इन दोनों विधाओं के शास्त्रीय और सैद्धांतिक स्वरूप की स्थापना की गई है तथा हिंदी में इनके उद्भव और विकास का परिचय दिया गया है। इसके बाद तीन-तीन इकाइयों में क्रमशः रेखाचित्र और संस्मरण के उत्कृष्ट नमूने प्रस्तुत किए गए हैं। रेखाचित्रों के अंतर्गत बनारसी दास चतुर्वेदी कृत 'अंधी चमारिन', राहुल सांकृत्यायन कृत 'तिब्बत की सीमा पर', हरिशंकर परसाई कृत 'आदमी का बच्चा' तथा संस्मरण विधा के अंतर्गत रायकृष्ण दास कृत 'आचार्य रामचंद्र शुक्ल - कुछ संस्मरण', शिवपूजन सहाय कृत 'महाकवि जयशंकर प्रसाद' और रामधारी सिंह 'दिनकर' कृत 'राजेंद्र बाबू' को सम्मिलित किया गया है।

यह सारी सामग्री इस दृष्टि से प्रस्तुत की गई है कि छात्रों के बौद्धिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और सांस्कृतिक क्षितिज का तो विस्तार हो ही, उनकी सौंदर्य दृष्टि का भी विकास सुनिश्चित हो। इस प्रकार यह सामग्री छात्रों के भीतर भारतीय जीवन मूल्यों और मानवतावादी दृष्टिकोण का विकास करने में सहायक होगी। इससे छात्रों के नैतिक और भाषिक स्तर का भी विकास हो सकेगा, ऐसा विश्वास है।

इस समस्त पाठ सामग्री को तैयार करते समय सरलता, सहजता, बोधगम्यता, प्रामाणिकता और पारदर्शिता का विशेष ध्यान रखा गया है। इस कार्य में हमें जिन विद्वान इकाई लेखकों, ग्रंथकारों और संपादकों से सहायता मिली है, उन सबके प्रति हम कृतज्ञ हैं।

- **डॉ. आफ़ताब आलम बेग**
पाठ्यक्रम समन्वयक

रेखाचित्र एवं संस्मरण

इकाई 1: रेखाचित्र एवं संस्मरण: परिभाषा, महत्व, एवं अंतर

इकाई की रूपरेखा

1.1 प्रस्तावना

1.2 उद्देश्य

1.3 मूल पाठ:रेखाचित्र एवं संस्मरण: परिभाषा, महत्व, एवं अंतर

1.3.1रेखाचित्र : परिचय और परिभाषा

1.3.2रेखाचित्र की विशेषताएँ

1.3.3रेखाचित्रों का वर्गीकरण और विश्लेषण

1.3.4 संस्मरण : अवधारणा और अर्थ

1.3.5संस्मरण की परिभाषा

1.3.6संस्मरण का महत्व

1.3.7संस्मरण और रेखाचित्र में अंतर

1.4 पाठ सार

1.5 पाठ की उपलब्धियाँ

1.6 शब्द संपदा

1.7 परीक्षार्थ प्रश्न

1.8 पठनीय पुस्तकें

1.1 प्रस्तावना

प्रिय छात्रो! इस इकाई के अंतर्गत आपरेखाचित्र के विधागत स्वरूप का अध्ययन करेंगे। वास्तव में विधा (फ्रेंच -जीनर / अँग्रेजी-genre) का सामान्य अर्थ प्रकार, किस्म, वर्ग या श्रेणी है। इस पारिभाषिक शब्द का प्रयोग विविध प्रकार की रचनाओं को वर्ग या श्रेणी में बांधने के लिए किया जाता है। यह भी आप जानते हैं कि विधाओं की उपविधाएं भी होती हैं। गद्य और पद्य दो प्रमुख साहित्यिक विधाएँ हैं और निबंध आदि गद्य की विविध विधाएँ हैं। यह भी जान लेना होगा कि विधाएँ अस्पष्ट श्रेणियाँ हैं । इनकी कोई निश्चित सीमा-रेखा नहीं होती। रेखाचित्र भी एक विधा है। प्रायः रेखाचित्र गद्य में लिखे जाते रहे हैं। रेखाचित्र जैसी ही एक दूसरी विधा संस्मरण भी है। किन्तु रेखाचित्र और संस्मरण में अंतर भी है और समानता भी। रेखाचित्र आधुनिक युग की अकाल्पनिक विधा है। रेखाचित्र किसी व्यक्ति पर ही नहीं, वस्तु और पशु-पक्षी आदि पर भी लिखे जा सकते हैं। जीवन के यथार्थ अनुभवों का सहारा लेकर बनाए गए शब्द चित्र विधा के रूप में रेखाचित्र कहे जाते हैं। रेखाचित्र में यथार्थ की अनेक अंतरंगताओं को रेखांकित किया जाता है। इस इकाई में आप रेखाचित्र के विषय में विस्तारपूर्वक ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

भारतेन्दु हरिश्चंद्र के समय से हिन्दी नई चाल में ढली। इसके परिणाम स्वरूप जो साहित्य निर्माण हुआ उसके कारण हिन्दी गद्य ने अपना एक निजी स्थान बना लिया था। स्वतन्त्रता के पूर्व से हिन्दी गद्य में विभिन्न विधाओं में भी लेखन होने लगा। हिन्दी के नाटक, उपन्यास,कहानी, निबंध, जीवनी, समालोचना, संस्मरण, रेखाचित्र आदि गद्य साहित्य के अंग हैं। संस्मरण और रेखाचित्र आदि नई विधाओं में निजी अनुभवों की प्रामाणिक और विश्वसनीय अभिव्यक्ति की जाती है। संस्मरण में लेखक का अपना जीवन होता है और चाहे उसका ऐतिहासिक महत्व हो या न हो परंतु वे भी हमारी साहित्यिक अनुभूतियों के अंग हैं। संवेदना के स्पर्श के कारण ये व्यक्तिगत अनुभूतियाँ भी साहित्य की सृजनात्मक विधाओं के रूप में प्रस्तुत होने लगीं है। संस्मरण क्योंकि वैयक्तिक लेखन है इसलिए इसमें कोई प्रवृत्तिगत रुझान नहीं दिखाई देता। व्यापक अर्थ में सृष्टिमात्र के किसी अंश अथवा सम्पूर्ण स्वरूप से सम्बद्ध अपने अनुभव की प्रस्तुति या अभिव्यक्ति का नाम ही संस्मरण है। दूसरे शब्दों में संस्मरण स्मृति की सुगठित अभिव्यक्ति है। आत्मीयता इसका प्रधान गुण है और अनुभूति तत्व की प्रधानता होने के कारण इसकी उपादेयता असंदिग्ध है|

1.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत आप -

- रेखाचित्र के अर्थ और परिभाषा से अवगत हो सकेंगे।
- रेखाचित्र का विधागत स्वरूप जान सकेंगे।
- रेखाचित्र के विविध तत्वों का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
- रेखाचित्र का विश्लेषण करने के आधारों से परिचित हो सकेंगे।
- रेखाचित्र और संस्मरण के अंतर और समानता के प्रमुख बिन्दुओं को समझ सकेंगे ।
- रेखाचित्र की प्रमुख विशेषताओं का अंकन करते हुए उसके विधागत स्वरूप का बोध प्राप्त कर सकेंगे।
- हिन्दी गद्य के अंतर्गत संस्मरण के विकास को समझ सकेंगे।
- संस्मरण के विधागत स्वरूप का सामाजिक परिवर्तन के परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकन कर सकेंगे।
- संस्मरण के स्वरूप में आए हुए परिवर्तनों से परिचित हो सकेंगे।
- रेखाचित्र और संस्मरण के अंतर और समानता के प्रमुख बिन्दुओं को समझ सकेंगे ।

1.3 मूल पाठ ::रेखाचित्र एवं संस्मरण: परिभाषा, महत्व, एवं अंतर

रेखाचित्र गद्य की एक नवीन विधा है। अपनी व्यापक संवेदनशीलता और सुंदर कलात्मक शैली के कारण यह एक लोकप्रिय विधा बन गई है। आगे हम इसके अर्थ, पर्याय, परिभाषा,

अवधारणा आदि की चर्चा करेंगे। साथ ही यह भी देखेंगे कि हिन्दी साहित्य में इस विधा का उद्भव कब और कैसे हुआ तथा किन साहित्यकारों ने इस विधा का आगे विकास किया।

1.3.1रेखाचित्र : परिचय और परिभाषा

रेखाचित्र शब्द 'रेखा' और 'चित्र' के मेल से बना है । इसका अर्थ है - रेखाओं से बना हुआ चित्र। 'रेखाचित्र' के अतिरिक्त हिन्दी में 'शब्दचित्र' का प्रयोग भी मिलता है। रामवृक्ष बेनीपुरी ने 'शब्दचित्र' और महादेवी वर्मा ने 'स्मृतिचित्र' शब्द का प्रयोग किया है। फिर भी 'रेखाचित्र' शब्द ही अधिक प्रचलित और मान्य है। यह शब्द ही अधिक पारदर्शी प्रतीत होता है क्योंकि रेखाचित्र के समान ही इन शब्द चित्रों में विशेषता दृष्टिगोचर होती है। इसलिए इस विधा के लिए 'रेखाचित्र' नामकरण ही सर्वाधिक प्रचलित और स्वकृत है।

हिन्दी साहित्यकोश के अनुसार-"रेखाचित्र किसी व्यक्ति, वस्तु, घटना या भाव का कम से कम शब्दों में मर्मस्पर्शी, भावपूर्ण एवं सजीव अंकन है।"

हिन्दी में रेखाचित्र शब्द अँग्रेजी के 'स्केच' शब्द की नाप-तोल पर गढ़ा गया है।'स्केच' चित्रकला का अंग है।इसमें चित्रकार कुछ इनी-गिनी रेखाओं द्वारा किसी वस्तु, व्यक्ति या दृश्य को अंकित कर देता है। स्केच रेखाओं की बहुलता और रंगों की विविधता में अंकित कोई चित्र नहीं है,न वह एक फ़ोटो ही है,जिसमें नन्हीं से नन्हीं और साधारण से साधारण वस्तु भी खिंच आती है। साहित्य में जिसे रेखाचित्र कहते हैं,उसमें भी कम से कम शब्दों में कलात्मक ढंग से किसी वस्तु,व्यक्ति या दृश्य का अंकन किया जाता है। इसमें साधन शब्द हैं,रेखाएँ नहीं। इसीलिए इसे 'शब्दचित्र' भी कहते हैं। कहीं-कहीं इसका अंग्रेज़ी नाम 'स्केच'भी व्यवहृत होता है। विद्वानों के अनुसार रेखाचित्र की कुछ परिभाषाएँ इस प्रकार हैं-

रेखाचित्र किसी एक व्यक्ति,स्थान, घटना,दृश्यया उपादान का ऐसा वस्तुगत वर्णन होता है,जो संक्षेप में उसकी बाह्य विशेषताओं को प्रस्तुत करता है। बाह्य विशेषताओं के भीतर ही उसकी आंतरिक विशेषताओं का समाहार होता है। - डॉ. हरबंश लाल

रेखाचित्र ऐसी रचना के लिए प्रयुक्त होने लगा जिसमें रेखाएँ हों,पर मूर्त रूप अर्थात् उतार-चढ़ाव दूसरे शब्दों में,कथानक का उतार-चढ़ाव आदि न हो,तथ्य का उद्घाटन मात्र हो। - डॉ. नगेन्द्र

रेखाचित्र चित्रकला और साहित्य के सुन्दर सुहाग से उद्भूत एक अभिनव कला रूप है। रेखाचित्रकार साहित्यकार के साथ ही साथ चित्रकार भी होता है। रेखाचित्रकार मनः पटल परव विशृंखल रूप में बिखरी हुई शत-शत स्मृति रेखाओं में अपनी अंकित कला की तूलिका से

सहानुभूति के रंग में रंजित कर जीते जागते शब्दचित्र में परिणत कर देता है। - डॉ. गोविंद त्रिगुणायत

संपर्क में आए किसी विलक्षण व्यक्तित्व अथवा संवेदना को जगानेवाली सामान्य विशेषताओं से युक्त किसी प्रतिनिधि चरित्र के मर्मस्पर्शी स्वरूप को, देखी-सुनी या संकलित घटनाओं की पृष्ठभूमि में इस प्रकार उभारकर रखना कि उसका हमारे हृदय में एक निश्चित प्रभाव अंकित हो जाए रेखाचित्र या शब्दचित्र कहलाता है। - डॉ. भगीरथ मिश्र

इन परिभाषाओं का अवलोकन करने से इन में निम्नलिखित बिन्दुसमान रूप से मिलते हैं -

1. रेखाचित्र का विषय या केंद्र कोई व्यक्ति, वस्तु, संदर्भ, पशु-पक्षी, घटना या भाव हो सकता है।
2. रेखाचित्र में चित्रात्मकता के माध्यम से व्यक्ति के बाह्य तथा आंतरिक व्यक्तित्व को उभरा जाता है।
3. तटस्थता के अभाव में रेखाचित्र की स्पष्ट छवि नहीं बनती।
4. रेखाचित्र में शब्द प्रयोग में सावधानी बरती जाती है, कम शब्दों में अधिक लिखा जाता है।
5. भाषा की जीवंतता और मुहावरेदानी रेखाचित्र के लिए अनिवार्य है।

रेखाचित्र में उपर्युक्त लक्षण भी निर्धारित किए जा सकते हैं। किन्तु यह आवश्यक नहीं कि प्रत्येक रेखाचित्र-लेखक इन सबका प्रयोग करे।

बोध प्रश्न

- रेखाचित्र की एक परिभाषा लिखिए।
- रेखाचित्र के दूसरे नाम क्या है?
- रेखाचित्र के चार प्रमुख लक्षण गिनाइए।

1.3.2 रेखाचित्र की विशेषताएँ

रेखाचित्र की सर्वप्रथम विशेषता है कि इसके लेखन में 'विस्तार' के स्थान पर'संक्षेप' होता है। रेखाचित्र के लिए विषय का बंधन नहीं रहता, सब प्रकार के विषयों का इसमें समावेश हो सकता है। रेखाचित्र की विशेषता विस्तार में नहीं, बल्कि 'तीव्रता' में होती है। रेखाचित्र पूर्ण चित्र नहीं है केवल रूपरेखा है। वह व्यक्ति, वस्तु, घटना, आदि का एक निश्चित दृष्टिबिन्दु में प्रस्तुत किया गया प्रतिबिम्ब है, जिसमें विवरण की न्यूनता के साथ-साथ तीव्र संवेदनशीलता वर्तमान रहती हैं।

रेखाचित्र के लिए उपयुक्त विषय का चुनाव भी बहुत महत्वपूर्ण है- इसकी विषय वस्तु ऐसी होती है, जिसे विस्तृत वर्णन और रंगों की अपेक्षा न हो और जो कुछ ही रेखाओं के प्रयोग से चमक उठे। चाँदनी रात में ताजमहल की शोभा को रेखाचित्र में बांधा जा सकता है। पर शाहजहाँ और मुमताज़ महल की प्रेमकथा को सीमा में बांध सकना कठिन काम है।

रेखाचित्र की स्मृति में पीड़ा का बोध होता है। इस पीड़ा में बिछुड़ने की संवेदना होती है । रेखाचित्रकार जिसका वर्णन कर रहा होता है उससे अलग होने की पीड़ा और दर्द ही उसे लेखन के रूप में इस विधा को अपनाने के लिये प्रेरित करता है।

बोध प्रश्न

- उपर्युक्त विवेचन के आधार पर रेखाचित्र की चार विशेषताएँ बताइए।

3.3.3 रेखाचित्रों का वर्गीकरण और विश्लेषण

रेखाचित्र के छह तत्व होते हैं -

1.व्यक्ति चित्रण, 2. संवेदनशीलता, 3. संतुलन एवं तटस्थता, 4. सूक्ष्म निरीक्षण, 5. यथार्थ की अनुभूति और 6.उद्देश्य ।

मूल चेतना के आधार पर रेखाचित्रों कोअनेक वर्गों या प्रकारों में रखा जा सकता है। जैसे -

1.मनोवैज्ञानिक रेखाचित्र, 2. ऐतिहासिक रेखाचित्र, 3. तथ्य एवं घटना प्रधान रेखाचित्र, 4. वातावरण प्रधान रेखाचित्र, 5. प्रभाववादी रेखाचित्र, 6. व्यंग्य प्रधान रेखाचित्र, 7. व्यक्ति प्रधान रेखाचित्र और 8. आत्मपरक रेखाचित्र।

अब तक की चर्चा से यह स्पष्ट हो चुका है कि गद्य की नई विधा के रूप में स्थापित होने के साथ ही रेखाचित्र अन्य अनेक विधाओं से संबंध भी है और अलग अस्तित्व भी। रेखाचित्र को अलग पहचान देने में उसकी निम्नलिखित प्रवृत्तियों का महत्वपूर्ण योगदान है -

1.चित्रात्मकता

रेखाचित्रकार रेखाचित्र के माध्यम से किसी व्यक्ति या वस्तु के व्यक्तित्व के एक अंश का चित्र भाषा के द्वारा प्रस्तुत करता है। भाषा के द्वारा ही लेखक अपनी रचनात्मक क्षमता के शीर्ष तक जा पहुंचता है। बाह्य चित्रण के समान ही यह व्यक्ति का आंतरिक चित्र प्रस्तुत करने में भी समर्थ है।

2.गतिशीलता

सामान्यतः चित्र द्विआयामी होता है किन्तु रेखाचित्र बहुआयामी होता है। इस कारण रेखाचित्र गतिशील प्रतीत होता है। रेखाचित्रों में इस कारण 'लंबाई','चौड़ाई' के साथ ही 'गहराई' की प्रतीति भी होती है। यही बहुमुखी प्रवृत्ति है। इसके द्वारा चित्र अधिक जीवंत हो जाता है और

पाठक के मन पर उसका प्रभाव स्थिर हो जाता है। एक सफल रेखाचित्र में यह प्रवृत्ति आरोपित नहीं होती बल्कि यह एक सहज भाव है।

3.तटस्थता

रचनाकार में तटस्थता का भाव आवश्यक ही नहीं अनिवार्य है। रेखाचित्र में व्यक्ति और उसका जीवन और उसकी पीड़ा आदि का चित्रण करते समय लेखक को अपनी भावनाओं को नियंत्रण में रखना होगा। यह तटस्थता केवल लेखकीय दृष्टि में ही व्यंजित नहीं होती बल्कि शब्द प्रयोग में भी होती है। चित्रित व्यक्तियों के साथ लेखक का निकट संबंध होने के बावजूद उनके व्यक्तित्व के अच्छे-बुरे सभी पहलुओं का तटस्थ भाव से चित्रण करना अभिप्रेत होता है जिससे वे चित्रित व्यक्तियों के स्पष्ट और सहज चित्र पाठकों के समक्ष प्रस्तुत कर सकें।

4.व्यक्तिकेंद्रिकता

रेखाचित्र सामान्यतः व्यक्तिकेंद्रित होते हैं। उस व्यक्ति के जीवन और चरित्र के किसी एक पक्ष पर उसकी जीवन-रेखा के किसी संदर्भ को विस्तार से प्रस्तुत करते समय व्यक्तिकेन्द्रित प्रवृत्ति से मुक्त होकर या उससे अलग होकर रेखाचित्रकार उसके जीवन का विवरण प्रस्तुत करता है। दूसरे शब्दों में रेखाचित्रों में व्यक्ति प्रायः एक व्यक्ति-विशेष का सूचक होते हुए भी जीवन के एक विशिष्ट परिप्रेक्ष्य का भी सूचक है।

5.यथार्थता

यह भी स्पष्ट है कि रेखाचित्र यथार्थ पर आधारित एक अकाल्पनिक गद्य विधा है। काल्पनिक पात्रों को लेकर रेखाचित्र प्रस्तुत नहीं किए जाते। कहानी और उपन्यास आदि के पात्र काल्पनिक होते हैं। वे रचनाकार की कल्पना से जन्म लेते हैं, रेखाचित्र के पात्र हाड़-मांस के लोग होते हैं। रेखाचित्र में न पात्र और न घटनाएँ काल्पनिक होती हैं।

बोध प्रश्न

- रेखाचित्र के तत्वों के नाम लिखो ।
- रेखाचित्र को प्रायः किन वर्गों में रखा जा सकता है?
- रेखाचित्र की किसी एक प्रवृत्ति का वर्णन कीजिए ।
- चित्रात्मकता से आप क्या समझते हैं?
- व्यक्तिकेन्द्रितता का क्या अर्थ है?
- रेखाचित्र और यथार्थ का क्या संबंध है?

1.3.4 संस्मरण : अवधारणा और अर्थ

स्मृति के आधार पर किसी विषय पर अथवा किसी व्यक्ति पर लिखित आलेख संस्मरण (सम्यक स्मरण) कहलाता है। संस्मरण शब्द की व्युत्पत्ति सम+स्मृ+ल्युट (अण)

से हुई है, जिसका अर्थ हैसम्यक स्मरण। सम्यक का अर्थ है -आत्मीयतापूर्वक तथा अधिक गंभीरतापूर्वक। स्मरण शब्द में अधिक आत्मपरकता निहित है। यह विधा स्मृतियुक्त है इसलिए कई बार इसे हिन्दी काव्य के स्मरण अलंकार से जोड़कर देखा जाता है।स्मृति पहचान ही नहीं देती बल्कि अतीत और वर्तमान के बीच पुल का काम भी करती है।

संस्मरण मूलतः आधुनिक युग की विधा है। इसे पश्चिम की देन माना जाता है। गद्य की यह विधा कभी जीवनी, कभी रेखाचित्र, कभी रिपोर्ताज और कभी निबंध मान ली जाती है, किन्तु इन सबमें सूक्ष्म अंतर है। संस्मरण लेखक व्यक्तिगत अनुभव को इस आत्मीयता के साथ प्रस्तुत करता है कि उसका चित्र पाठक के मन-मस्तिष्क पर अंकित होता चला जाता है। अनुभव काल्पनिक नहीं होता इसलिए इसमें सत्य-कथा जैसा आभास होता है। संस्मरण की सत्यात्मकता (ज्यों का त्यों प्रस्तुति) असंदिग्ध रहती है। संस्मरण चूंकि स्मृति के आधार पर लिखा जाता है, इसलिए इसे आत्मकथा और जीवनी साहित्य से जोड़कर देखा जाता है। लेखक जो कुछ देख सुनकर अनुभव करता है, संस्मरण में उसी की एक संवेदनात्मक अनुभूति होती है। इसमें लेखक के जीवन की कुछ अविस्मरणीय एवं उल्लेखनीय घटनाओं का ललित शैली में लेखा-जोखा होता है - विशिष्ट क्षणों की रोचक एवं कौतूहलपूर्ण अभिव्यक्ति प्रस्तुत की जाती है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि संस्मरण जीवनी-परक साहित्य का एक छोटा परंतु कौशलयुक्त मार्मिक तथा मनोरंजक रूप है।

1.3.5 संस्मरण की परिभाषा

संस्मरण की कुछ परिभाषाएँ निम्नवत हैं -

स्मृति-वर्णन के रूप में -'आत्मकथा के रूप में लिखे गए स्मृति लेख, इसमें आत्मकथा की भांति लेखक के व्यक्तिगत जीवन का पूरा विवरण नहीं होता, बल्कि किसी घटना की चाहे लेखक का उसमें नाममात्र का संबंध हो, याद का विवरण होता है।' - पारिभाषिक शब्दकोश

"भावुक कलाकार जब अतीत की अनंत स्मृतियों में से कुछ रमणीय अनुभूतियों को अपनी कोमल कल्पना से अतिरंजित कर व्यंजनामूलक संकेत शैली में अपने उद्गार व्यक्त कर देता है तब उसे संस्मरण कहते हैं।"- डॉ गोविंद त्रिगुणायत

"संस्मरणों में केवल कुछ चुने हुए लोगों के जीवन की कुछ घटनाओं का वर्णन होता है। ये घटनाएँ वे ही होती हैं जिनसे लेखक प्रभावित होता है।"- डॉ सत्येन्द्र

"अनुभूति की कलात्मक अभिव्यक्ति कला के माध्यम से संस्मरण में होती है। संस्मरण यथार्थ होता है। इसमें संस्मरणकार के वे क्षण होते हैं जो उसने स्वयं जिये हैं। प्रभाव की एकता संस्मरण की विशेषता है।"- डॉ कृष्ण कुमार शर्मा

"तथ्यात्मक या इतिवृत्तात्मक पद्धति को छोड़कर किसी व्यक्ति की चारित्रिक विशेषताओं को प्रकट करने वाली रोचक घटनाओं या परिस्थितियों का वैयक्तिक संपर्क के आधार पर जिस रचना में लेखा जोखा प्रस्तुत किया जाता है वह संस्मरण होता है।"- डॉ पद्म सिंह शर्मा'कमलेश'

अतीत की स्मृति, आत्मीय सम्बन्धों का लेखन, प्रामाणिकता, वैयक्तिकता, जीवनी के संक्षिप्त भाग का चित्रण, चित्रात्मकता, कथात्मकता, तटस्थता आदि संस्मरण की विशेषताएँ हैं। महादेवी वर्मा ने अपनी एक पुस्तक में आत्मकथ्य के बहाने संस्मरण के विषय में निम्नलिखित वक्तव्य दिया है-

'संस्मरण'को मैं रेखा चित्र से भिन्न साहित्यिक विधा मानती हूँ। मेरे विचार में यह अन्तर अधिक न होने पर भी इतना अवश्य है कि हम दोनों को पहचान सकें।'रेखाचित्र'एक बार देखे हुए व्यक्ति का भी हो सकता है जिसमें व्यक्तित्व की क्षणिक झलक मात्र मिल सकती है। इसके अतिरिक्त इसमें लेखक तटस्थ भी रह सकेंगे। यह प्रकरण हमारी स्मृति में खो भी सकता है,परन्तु 'संस्मरण'हमारी स्थायी स्मृति से सम्बन्ध रखने के कारण संस्मरण के पात्र से हमारे घनिष्ठ परिचय की अपेक्षा रखता है,जिसमें हमारी अनुभूति के क्षणों का योगदान भी रहता है। इसी कारण स्मृति में ऐसे क्षणों का प्रत्यावर्तन भी सहज हो जाता है और हमारा आत्मकथ्य भी आ जाता है।यदि हम किसी से प्रगाढ़ और आत्मीय परिचय रखते हैं,तो उस व्यक्ति को अनेक मनोवृत्तियों तथा उनके अनुसार आचरण करते देखना भी सहज हो जाता है और अपनी प्रतिक्रिया की स्मृति रखना भी स्वाभाविक हो जाता है। इन्हीं क्षणों का सुखद या दुःखद प्रत्यावर्तन 'संस्मरण'कहा जा सकता है

बोध प्रश्न

- संस्मरण की परिभाषा प्रस्तुत कीजिए।
- संस्मरण की दोविशेषताएँ बताइए।
- संस्मरण के दो लक्षण लिखिए।
- महादेवी वर्मा के अनुसार संस्मरण और रेखाचित्र में क्या अंतर है?
- महादेवी वर्मा ने संस्मरण विधा के स्वरूप को किस प्रकार समझाया है?

1.3.6 संस्मरण का महत्व

हिन्दी में संस्मरण साहित्य लगभग 100 वर्ष का है और इस दृष्टि से यह गद्य साहित्य की नवीनतम उपलब्धियों में से एक है। जीवन का यथार्थ चित्रण होने से साहित्य में इसके कई रूप मिलते हैं जैसे, लेखक के आधार पर अथवा वर्ण्य विषय के आधार पर।

कथानायक के विविध क्षेत्रों से संबन्धित होने के आधार पर भी संस्मरणों के भेद किए जा सकते हैं जैसे, आत्म संस्मरण। कई बार कोई लेखक खुद को केंद्र में रखकर अपने संस्मरण लिखता

है, तो उन्हें आत्म संस्मरण कहा जा सकता है। आत्म संस्मरण आत्मकथा के काफी नजदीक होता है। बाबू गुलाब राय कृत 'मेरी असफलताएँ' इसी श्रेणी का संस्मरण है। समाज के अनेक वर्गों से संबन्धित विशिष्ट व्यक्ति जैसे राजनेता, समाज सुधारक और अन्य भी संस्मरण लिखते रहे हैं।

यात्रा संबंधी संस्मरण भी लिखे जाते हैं। मानवीय गुणों से सम्पन्न पशु पक्षियों पर आधारित संस्मरण लिखकर महादेवी वर्मा ने ध्यान आकृष्ट किया था।

हास्य व्यंग्यात्मक संस्मरण में लेखक प्रतीक योजना और कल्पना का सहारा लेकर घटना और व्यक्ति को इस प्रकार प्रस्तुत करता है कि जिससे व्यंग्य व्यंजित हो जाए। राम वृक्ष बेनीपुरी का 'गेहूं और गुलाब' इसी श्रेणी में रखा जा सकता है।

शैली के आधार पर भी संस्मरणों को देखा जा सकता है जैसे डायरी शैली, पत्रात्मक शैली, आत्मकथात्मक शैली, निबंधात्मक शैली आदि। कहा जाता है कि संस्मरण और आत्मकथा दो ऐसी एक दूसरे से मिलती जुलती विधाएँ हैं जिनमें लेखक की सत्यनिष्ठा और ईमानदारी के बिना उनकी रचना की विश्वनीयता पर प्रश्न खड़े हो जाते हैं। संस्मरण लेखक जिन लोगों पर अपने संस्मरण लिख रहा होता है वे प्रायः जीवित नहीं होते। इसलिए उनकी प्रामाणिकता का ज्ञान लेखक को ही होता है। पाठक उन पर विश्वास करके पढ़ता है और यदि उसे लगे कि कुछ बेईमानी हुई है तो वह ठगा सा अनुभव करेगा। पाब्लो नेरुदा के संस्मरण 'मेम्वायर्स' में नेरुदा की स्पष्टता और 'कुल्ली भाट' तथा 'बिल्लेसुर बकरिहा' में निराला की आत्मस्वीकृति में लेखकीय ईमानदारी पाठक को पसंद आती है। संस्मरण को दूसरों की निंदा या उनके चरित्र हनन का साधन बनाकर प्रस्तुत करने वाले लेखक भी चाहे किसी को बदनाम करना चाहें, पर ऐसा होता नहीं। उनकी ही विश्वसनीयता समाप्त हो जाती है। संस्मरण लेखक को अपने प्रति अतिशय उदार और वर्णित लोगों के प्रति अनुदार और अत्यधिक आलोचनात्मक भी नहीं होना चाहिए।

बोध प्रश्न

- आत्म संस्मरण से आप क्या समझते हैं।

1.3.7 संस्मरण और रेखाचित्र में अंतर

परस्पर घनिष्ठ संबंध होते हुए भी विषय और शैली की दृष्टि से संस्मरण और रेखाचित्र के विधागत स्वरूप में अंतर है। रेखाचित्र चारित्रिक चित्र होता है किन्तु संस्मरण केवल बाहरी एवं आंतरिक चरित्र का विश्लेषण और प्रस्तुतिकरण करता है। संस्मरण और रेखाचित्र में बहुत ही सूक्ष्म अंतर है। यदि लेखक व्यक्तित्व के चित्रण तक ही स्मृति को सीमित रखता है तो वह रचना रेखाचित्र कहलाएगी। यदि लेखक स्मृतियों के प्रसंग को उभारने का कार्य करता है तो वह रचना संस्मरण कहलाएगी। संस्मरण में कथा का ताना बाना सच्ची घटनाओं से बनता है। संस्मरण अतीत की किसी घटना का शब्दांकन है। बहुत समय तक रिपोर्ताज, रेखाचित्र तथा जीवनी को संस्मरण

ही समझा जाता था। उदाहरण के लिए महादेवी वर्मा की पुस्तक 'स्मृति की रेखाएँ' को 'स्मृति' शब्द के आधार पर संस्मरण कहा जा सकता है, तो 'रेखाएँ' के आधार पर इसे रेखाचित्र घोषित किया जा सकता है।

संस्मरण और रेखाचित्र के अंतर को निम्नवत प्रस्तुत किया जा सकता है-

1. संस्मरण केवल अतीत का होता है, जबकि रेखाचित्र वर्तमान का भी हो सकता है और समर्थ लेखक भविष्य का चित्र भी प्रस्तुत कर सकता है।
2. रेखाचित्र लिखते समय लेखक अतिरंजना का आश्रय भी ले सकता है, जबकि संस्मरण में इसका अवकाश नहीं होता।
3. रेखाचित्र बाहरी विशेषताओं का वर्णन करता है किन्तु संस्मरण-लेखक की दृष्टि आंतरिक विशेषताओं पर केन्द्रित रहती है।
4. रेखाचित्र कल्पनाप्रधान होता है, संस्मरण सत्यानुमोदित।
5. रेखाचित्र में एक प्रकार की तटस्थता का भाव होता है जबकि संस्मरण में नहीं।

बोध प्रश्न

- महादेवी वर्मा के अनुसार संस्मरण और रेखाचित्र में क्या अंतर है?
- महादेवी वर्मा ने संस्मरण विधा के स्वरूप को किस प्रकार समझाया है?

1.4 पाठ सार

जिस प्रकार कोई चित्रकार कुछ रेखाओं से सजीव चित्र बनाकर लोगों को आश्चर्यचकित कर देता है, उसी प्रकार थोड़े से शब्दों में किसी वस्तु अथवा घटना का चित्रण करना रेखाचित्र कहा जाता है। महादेवी वर्मा के शब्दों में "रेखाचित्र शब्द चित्रकला से साहित्य में आया है, परंतु अब वह शब्दचित्र के स्थान में रूढ़ हो गया है। चित्रकार अपने सामने रखी वस्तु या व्यक्ति का रंगीन चित्र जब कुछ रेखाओं में इस प्रकार आंक देता है कि उसके विशेष मुद्रा पहचानी जा सके, तब उसे हम रेखाचित्र की संज्ञा देते हैं। साहित्य में भी साहित्यकार कुछ शब्दों में ऐसा चित्र अंकित कर देता है जो उस व्यक्ति या वस्तु का परिचय दे सके।" रेखाचित्रकार का प्रमुखउद्देश्य अपनी शब्द-रेखाओं के द्वारा पाठक में संवेदना जागृत करना होता है। इसमें अनुभूत जीवन का सत्य व्यक्त होता है। रेखाचित्र में एक ही वस्तु, घटना या चरित्र प्रधान होता है, जिससे संबन्धित प्रमुख विशेषताओं को उभारा जाता है। रेखाचित्र और गद्य की अन्य विधाओं में संबंध है और संस्मरण से तो इसका सीधा संबंध है ही। किन्तु जहाँ रेखाचित्र वस्तुनिष्ठ है, वहीं संस्मरण व्यक्तिनिष्ठ।

यथार्थ अनुभूति, संवेदनशील दृष्टि, तटस्थता तथा सूक्ष्म निरीक्षण रेखाचित्रकार के प्रमुख गुण हैं। हिन्दी में 1929 में प्रकाशित पंडित पद्म सिंह शर्मा के 'पद्म पराग' को पहला रेखाचित्र माना जाता है। महादेवी वर्मा को रेखाचित्रकार और संस्मरण लेखिका दोनों माना जाता है, छायावाद की प्रमुख कवयित्री तो वे हैं ही।

वास्तव में, साहित्य रचना और सर्जनात्मक लेखन में संस्मरण एक प्रमुख तत्व के रूप में विद्यमान रहता है। लेकिन आधुनिक युग में इसे स्वतंत्र विधा के रूप में मान्यता प्राप्त हुई। इस प्रकार इस विधा को नई से नई और पुरानी से पुरानी दोनों माना जा सकता है। इसका आरंभिक रूप संस्कृत साहित्य की आख्यायिकाओं में भी देखा जा सकता है और इसे पश्चिम से आयातित नई विधा भी कहा जा सकता है। यह निर्विवाद है कि आधुक गद्य की प्रमुख विधा के रूप में इसका अस्तित्व सर्वज्ञात है। संस्मरण यथार्थ जीवन से सम्बद्ध, संक्षिप्त, रोचक, चित्ताकर्षक, भावुकतापूर्ण, लेखक के व्यक्तित्व की आभा से युक्त, चरित्र की गरिमा से मंडित, सांकेतिक एवं प्रभावपूर्ण ढंग से लिखित अविस्मरणीय घटना होने से साहित्य की एक स्वतंत्र विधा है। इसे जीवनी का दूसरा रूप भी कहा जा सकता है। जिस प्रकार आत्मकथा में लेखक स्वयं अपने जीवन-वृत्तान्त को लिखता है, उसी प्रकार संस्मरण-लेखक दूसरों के साथ बिताए गए उल्लेखनीय पलों को लिपिबद्ध करके प्रस्तुत करता है। आत्मकथा और जीवनी दोनों में सम्पूर्ण जीवन का विवरण प्रस्तुत किया जाता है, परंतु संस्मरण में सम्पूर्ण जीवन के कुछ विशिष्ट अंशों पर प्रकाश डाला जाता है। संस्मरण में उन्ही घटनाओं का उल्लेख होता है जिनका लेखक के जीवन से कोई संबंध होता है।

उल्लेखनीय है कि हिन्दी में पहले से चला आ रहा एक अलंकार है - स्मरण अलंकार। परंतु वह संस्मरण से भिन्न है। आधुनिक युग में संस्मरण हिन्दी गद्य साहित्य की स्वतंत्र विधा बनकर आगे आया है। इसकी अपनी अलग विशेषताएँ हैं। संस्मरण और रेखाचित्र एक से प्रतीत होते हैं किन्तु इनमें अंतर है। रेखाचित्र चारित्रिक और आंगिक शब्द चित्र है, जबकि संस्मरण केवल चित्र न होकर चरित्र का दर्पण भी होता है। इसमें लेखक सम्पूर्ण परिस्थिति का सद्भावपूर्वक वर्णन करता है। इसमें विचार भी है, स्मरण भी और साथ ही किसी विशिष्ट घटना का प्रभावपूर्ण विवरण भी। इसे लेखक स्मृति के आधार पर प्रस्तुत करता है और इसकी सत्यता का आधार वही होता है।

संस्मरण और जीवनी में भी बड़ा साम्य है क्योंकि दोनों ही अतीत या बीत गए जीवन को यथार्थ रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास करते हैं। किन्तु दोनों ही अपनी तरह से यह कार्य करते हैं। संस्मरण लेखक पहले साहित्यकार होता है, और इतिहासकार बाद में। उसमें कलाकार के भावमय चित्रों की प्रधानता होती है। निबंध की तुलना में संस्मरण जीवन की किसी घटना, व्यक्ति, वस्तु के प्रति लेखक की भावात्मक प्रतिक्रिया का प्रकाशन होता है। संस्मरण और कहानी में यह अंतर

है कि कहानी एक निश्चित वैधानिक संगठन का अनुसरण करती है किन्तु संस्मरण में इस प्रकार का कोई नियंत्रण नहीं होता। संक्षेप में संस्मरण की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं -

1. संस्मरण लेखक के जीवन के अनुभूत सत्यों पर आधारित होता है।
2. संस्मरण में किसी स्मरणीय व्यक्ति, पशु-पक्षी, वस्तु, दृश्य या घटना का भावनात्मक एवं कथात्मक वर्णन होता है जिससे उसमें कहानी का गुण दिखाई पड़ने लगता है।
3. संस्मरण में लेखक वर्ण्य-वस्तु के साथ-साथ अपने विषय में या अपनी मनोदशा और अपने ऊपर पड़े प्रभाव का भी वर्णन करता है।
4. संस्मरण में संस्मरणीय व्यक्ति या वस्तु का स्वरूप-वर्णन या चित्रांकन भी होता है, किन्तु वह चित्रांकन रेखाचित्र से भिन्न कोटि का होता है।

1.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष उपलब्ध होते हैं -

1.आधुनिक काल में गद्य का विकास होने पर कहानी और उपन्यास जैसी काल्पनिक गद्य विधाओं के साथ कई सारी अकाल्पनिक गद्य विधाओं का भी विकास हुआ।

2.इन अकाल्पनिक गद्य विधाओं में स्मृति पर आधारित विधाओं का महत्वपूर्ण स्थान है।

3.स्मृति पर आधारित गद्य विधाओं में आत्मकथा और संस्मरण के अलावा रेखाचित्र अत्यंत महत्वपूर्ण है।

4.हिन्दी में 1929 में प्रकाशित पद्म सिंह शर्मा के 'पद्म पराग' को प्रथम रेखाचित्र होने का गौरव प्राप्त है।

5.महादेवी वर्मा ने साधारण व्यक्तियों और पालतू पशु पक्षियों के रेखाचित्र लिखकर इस विधा को नया आयाम प्रदान किया।

6. हिन्दी गद्य के अंतर्गत संस्मरण विधा का विकास आधुनिक युग में हुआ।

7.हिन्दी का संस्मरण साहित्य कई प्रकार का है। जैसे, लेखकों के आत्मसंस्मरण, स्मरणीय व्यक्ति, वस्तु, और स्थान के बारे में संस्मरण तथा यात्रा संस्मरण।

8. संस्मरण मूलतः स्मृति आधारित विधा है। इसमें कल्पना के लिए गुंजाइश नहीं होती। इसलिए यह कहानी, उपन्यास और निबंध जैसी कल्पना आधारित विधाओं से भिन्न है।

9. संस्मरण बड़ी हद तक आत्मकथा, रेखाचित्र, जीवनी और यात्रावृत्त के नजदीक है क्योंकि ये विधाएँ भी स्मृति पर आधारित हैं।

1.6 शब्द संपदा

1.अपेक्षित = जिसकी चाह या आशा हो

2.प्रतिबिंब = परछाईं, छाया, अक्स

3. बहुआयामी = अनेक आयामों वाला

4.मर्मस्पर्शी = मन (दिल) को छूने वाली

5.यथातथ्यता = वास्तविकता, जैसा है वैसा ही

6.वस्तुनिष्ठता = किसी से भी प्रभावित न होकर किसी तथ्य या घटना का उसके वास्तविक रूप में ही विश्लेषण करना

7.विधा = रीति, ढंग, प्रकार, किस्म, वर्ग, श्रेणी

8.व्यंग्य = गूढ़ार्थ

9.संवेदना = अनुभूति

10.समावेश = शामिल होना, व्याप्त होना

11.अतिरंजना = बढ़ा चढ़ा कर कही गई बात

12.अनुभूति = अनुभव से प्राप्त

13.असंदिग्ध = निश्चय ही, पक्का

14.आत्मीय = आपसी प्रेमपूर्ण संबंध

15.इतिवृत्तात्मकता =वस्तु वर्णन या आख्यान की प्रधानता

16.तटस्थ = निरपेक्ष, निष्पक्ष, गुटबंदी से अलग

17.प्रगाढ़ = गहरा

18.प्रत्यावर्तन = लौट कर आना, वापसी, बहाली

19.मनोवृत्ति = आदत

20.वस्तुपरक =वस्तु पर आधारित,ऑबजेक्टिव, वास्तविक

21.संवेदना = मन से अनुभव की गई

1.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग500 शब्दों में दीजिए।

1.रेखाचित्र की एक परिभाषा लेकर उसका विश्लेषण कीजिए ।

2.'रेखाचित्र' के विधागत स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।

3.रेखाचित्र और संस्मरण के बीच विभाजक रेखा खीचना कठिन है।' स्पष्ट कीजिए।

4. संस्मरण विधा की परिभाषा देते हुए उसके विधागत स्वरूप को स्पष्ट कीजिए ।

खंड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. . हिन्दी में संस्मरण विधा के विकास पर उदाहरण सहित चर्चा कीजिए

2. साहित्यिक विधा के रूप में रेखाचित्र की विशेषताएँ बताइए ।

3 हिन्दी में संस्मरण विधा के विकास पर उदाहरण सहित चर्चा कीजिए

खंड (स)

Iसही विकल्प चुनिए

1.'अतीत के चलचित्र' रेखाचित्र के रचनाकार हैं । ( )

अ) महादेवी वर्मा (आ) रामवृक्ष बेनीपुरी (इ) शिव पूजन सहाय (ई) विष्णु प्रभाकर

2. संस्मरण क्या है? ( )

i) ललित निबंध ii) जीवन चरित्र

iii) कौतूहलपूर्ण इतिहास iv) अतीत का आत्मीयतापूर्ण वर्णन

3. रेखाचित्र के लिए यह पद प्रयोग नहीं होता । ( )

(अ) शब्दचित्र (आ) स्मृतिचित्र (इ) स्केच (ई) चलचित्र

4. संस्मरण के प्रमुख शैली रूप हैं – ( )

i) डायरी शैली ii) पत्रात्मक शैली

iii) आत्मकथात्मक शैली iv) ये सभी शैली रूप

IIरिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए

1.रेखाचित्र में ..... के माध्यम से व्यक्तित्व को उभारा जाता है।

2.का संबंध संस्मरण ..... काल से हैं, रेखाचित्र किसी भी काल का हो सकता है।

3.संस्मरण प्रायः किसी ..... व्यक्ति का लिखा जाता है, रेखाचित्र किसी भी व्यक्ति का हो सकता है।

4.'स्मृति की रेखाएँ' में .....के लिखे रेखाचित्र सम्मिलित हैं।

3. रेखाचित्र ..... गद्य विधा है।

4. रेखाचित्र में कहानी के कथानक की .....मिलती है।

5.'चेतना के बिम्ब' के लेखक का नाम .....है।

III सुमेल कीजिए

i) महादेवी वर्मा	(क) दूर वन में
ii) श्रीराम शर्मा	(ख) रेखाएँ बोल उठी
iii) देवेंद्र सत्यार्थी	(ग) मेरा परिवार
iv) अजित कुमार	(घ) बोलती प्रतिमा
v) रामवृक्ष बेनीपुरी	(ग) अतीत के चलचित्र
vi) महादेवी वर्मा	(घ) माटी की मूरतें

1.8 पठनीय पुस्तकें

1.हिन्दी साहित्य कोश.(सं) धीरेन्द्र वर्मा.
2.रेखाचित्र. महादेवी वर्मा.
3. हिन्दी साहित्य कोश.(सं) धीरेन्द्र वर्मा.
4. हिन्दी भाषा और साहित्य.परमानंद श्रीवास्तव

इकाई 2 : हिन्दी रेखाचित्र एवं संस्मरण का इतिहास

इकाई की रूपरेखा

2.1 प्रस्तावना

2.2 उद्देश्य

2.3 मूल पाठ: हिन्दी रेखाचित्र एवं संस्मरण का इतिहास

2.3.1 रेखाचित्र का इतिहास
2.3.2 संस्मरण का इतिहास
2.3.3 रेखाचित्र एवं संस्मरण में अंतर

2.4 पाठ सार

2.5 पाठ की उपलब्धियाँ

2.6 शब्द संपदा

2.7 परीक्षार्थ प्रश्न

2.8 पठनीय पुस्तकें

2.1 प्रस्तावना

संस्मरण और रेखाचित्र में बहुत सूक्ष्म अंतर है। कुछ विद्वानों ने तो इन दोनों विधाओं को एक-दूसरे की पूरक विधा भी कहा है। संस्मरण का सामान्य अर्थ होता है सम्यक् स्मरण। सामान्यतः इसमें चारित्रिक गुणों से युक्त किसी महान व्यक्ति को याद करते हुए उसके परिवेश के साथ उसका प्रभावशाली वर्णन किया जाता है। इसमें लेखक स्वानुभूत विषय का यथावत अंकन न करके उसका पुनर्सृजन करता है। रेखाचित्र की तरह यह वर्ण्य विषय के प्रति तटस्थ नहीं होता। आत्मकथात्मक विधा होते हुए भी संस्मरण आत्मकथा से पर्याप्त भिन्नता रखता है।

2.2 : उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से आप –

- रेखाचित्र से परिचित हो सकेंगे।
- रेखाचित्र के इतिहास के बारे में जान सकेंगे।
- रेखाचित्र एवं संस्मरण के अंतर को समझ सकेंगे।
- संस्मरण के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- संस्मरण के इतिहास से परिचित हो सकेंगे।

2.3: मूल पाठ : हिन्दी रेखाचित्र एवं संस्मरण का इतिहास

2.3.1 रेखाचित्र का इतिहास –

हिन्दी में रेखाचित्र अंग्रेजी और रूसी साहित्य के रेखाचित्र के प्रभाव से उत्पन्न हुआ है। रेखाचित्र को अंग्रेजी के 'स्कैच' शब्द का रूपांतरण हैं। रेखाचित्र में किसी व्यक्ति, वस्तु या संदर्भ

का अंकन किया जाता है। यह अंकन पूर्णतः तटस्थ भाव में निर्लिप्त रहकर किया जाता है। रेखाचित्र द्वारा साहित्यकार किसी व्यक्ति या वस्तु को उसकी मूलभूत विशेषता के साथ सजीव कर देता है। रेखाचित्र को स्पष्ट करते हुए डॉ। गोविंद त्रिगुणायत कहते हैं कि "रेखाचित्र वस्तु, व्यक्ति अथवा घटना का शब्दों द्वारा विनिर्मित वह मर्मस्पर्शी और भावमय रूप विधान है, जिसमें कलाकार का संवेदनशील ह्रदय और उसकी सूक्ष्म पर्यवेक्षण दृष्टि अपना निजीपन उड़ेलकर प्राण प्रतिष्ठा कर देती है।" रेखाचित्र में शब्दों के प्रयोग द्वारा व्यक्ति का व्यक्तित्व उभरकर आता है। इसमें जो वर्णन विषय है वह वास्तविक होता है। रेखाचित्र में व्यक्ति के बाह्य एवं आतंरिक प्रवृत्तियों एवं उसके समग्र रूप को कलात्मक ढ़ंग से प्रस्तुत किया जाता है। हिन्दी साहित्य में कुछ रेखाचित्र को संस्मरणात्मक रेखाचित्र भी कहा जाता है। जैसे – महादेवी वर्मा का अतीत के चलचित्र।

रेखाचित्र का इतिहास को दो कालों में विभाजित किया जाता है। 1. आरंभिक काल और 2. उत्कर्ष काल

अ) आरंभिक काल

रेखाचित्र को स्वतंत्र विधा के रूप में स्थापित करने का श्रेय पद्म सिंह शर्मा कृत 'पद्म पराग' को दिया जा सकता है। 'पद्म पराग'(1929) में संस्मरणात्मक निबंधों और रेखाचित्रों का संकलन है। इन रेखाचित्रों में समकालीन महत्वपूर्ण लोगों को विषय बनाया गया है। पद्म सिंह शर्मा से प्रभावित होकर श्रीराम शर्मा, हरिशंकर शर्मा और बनारसीदास चतुर्वेदी आदि ने रेखाचित्र लिखने आरंभ किए। श्रीराम शर्मा के रेखाचित्रों का प्रथम संग्रह 'बोलती प्रतिमा' शीर्षक से सन् 1937 में प्रकाशित हुआ। इसकी विशेषता यह है कि इसमें समाज के निम्नवर्ग के पात्रों का सजीव चित्रण हुआ है।

बनारसीदास चतुर्वेदी का रेखाचित्र लिखने में महत्त्व पूर्ण योगदान है। इनके रेखाचित्रों की शैली सरस और व्यंग्यपूर्ण है। इनके रेखाचित्र 'हमारे साथी' और 'प्रकृति के प्रागंण' नामक ग्रंथों में संकलित हैं।

बोध प्रश्न

- रेखाचित्र का इतिहास कितने कालों में विभाजित है ?

आ) उत्कर्ष काल

छायावाद में महादेवी वर्मा ने रेखाचित्र लेखन का कार्य किया है। इनके रेखाचित्र एवं संस्मरण को अंतर करना थोडा कठिन कार्य हैं। उनके लेखन को संस्मरणात्मक रेखाचित्रों की श्रेणी में रखा जा सकता है। 'अतीत के चलचित्र', 'स्मृति की रेखाएँ', 'पथ के साथी' और 'शृंखला की कड़ियाँ' आदि इनके प्रमुख रेखाचित्र संग्रह हैं। 'अतीत के चलचित्र' और 'स्मृति की रेखाएँ' में समाज के शोषित वर्ग और नारी के प्रति इनकी सहानुभूति प्रकट हुई है। 'पथ के साथी' में इन्होंने अपने साथी साहित्यकारों के चित्रों को लिपिबद्ध किया है।

रामवृक्ष बेनीपुरी हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ रेखाचित्रकार माने जाते हैं। इनके रेखाचित्रों में हम सरल भाषा शैली में सिद्धहस्त कलाकारी को देख सकते हैं। इन्होंने अनेक रेखाचित्र लिखे हैं। बेनीपुरी का प्रसिद्ध रेखाचित्र 'माटी की मूरतें' (सन् 1946) संग्रह से इन्हें विशेष ख्याति मिली। इस संग्रह के माध्यम से समाज के उपेक्षित पात्रों को गढ़कर नायक का दर्जा देने का कार्य किया है। उदाहरण स्वरूप 'रजिया' नामक रेखाचित्र के माध्यम से निम्नवर्ग की एक बालिका को जीवंत कर दिया गया है। इस संग्रह के अन्य रेखाचित्रों में बलदेव सिंह, मंगर, बालगोबिन भगत, बुधिया, सरजू भैया आदि प्रमुख हैं। रामवृक्ष बेनीपुरी के रेखाचित्र के बारे में मैथिलीशरण गुप्त कहते हैं ''लोग माटी की मूरतें बनाकर सोने के भाव बेचते हैं पर बेनीपुरी सोने की मूरतें बनाकर माटी के मोल बेच रहे हैं।'' रामवृक्ष बेनीपुरी का दूसरा रेखाचित्र संग्रह 'गेहूँ और गुलाब' सन् 1950 ई. में प्रकाशित हुआ। इसमें कुल 25 रेखाचित्र संग्रहित हैं। कलेवर की दृष्टि से लेखक ने इन्हें अपने पुराने रेखाचित्रों की अपेक्षा छोटा रखा है। रामवृक्ष बेनीपुरी के रेखाचित्रों की भाषा भावना प्रधान है। कुछ आलोचक तो उनकी भाषा को गद्य काव्य की संज्ञा भी दे चुके हैं। बेनीपुरी के रेखाचित्रों के बारे में संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि इन्हें जीवन में जो भी पात्र मिले इन्होंने अपनी कुशल लेखनी से उन्हें जीवंत कर दिया।

कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर का भी रेखाचित्र में रामवृक्ष बेनीपुरी जैसा सम्मान हैं। इनके रेखाचित्र में जीवन की प्रेरणा मिलती है। 'भूले हुए चेहरे', 'बाजे पायलिया के घुंघरू', 'ज़िन्दगी मुस्काई', 'दीप जले शंख बजे', 'क्षण बोले कण मुस्काए', 'महके आँगन चहके द्वार' और 'माटी हो गई सोना' आदि इनके प्रमुख रेखाचित्रों का संग्रह हैं।

प्रकाशचंद्र गुप्त ने अपने रेखाचित्र में मानव की परिधि से बहार निकलकर पेड़-पौधों तथा पशु-पक्षियों को स्थान दिया है। उन्होंने 'रेखाचित्र' नाम से ही रेखाचित्रों का संकलन किया है।

यह काल लगभग सन् 1950 के आस-पास का है। यह समय संस्मरण लेखन की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण रहा है। इस समय अनेक लेखकों ने संस्मरण की रचना कर रहे थे। विष्णु प्रभाकर ने रेखाचित्रों के माध्यम से विशाल कैनवस पर सामाजिक सजगता के साथ मानवीय चित्र उकेरे गए हैं। इनके प्रमुख रेखाचित्र 'जाने-अनजाने', 'कुछ शब्द कुछ रेखाएँ' और 'हँसते निर्झर दहकती भट्टी' आदि में संकलित हैं। विष्णु प्रभाकर के अन्य समकालीन रेखाचित्रकारों में देवेंद्र सत्यार्थी, डॉ. नगेन्द्र, विनयमोहन शर्मा, जगदीशचंद्र माथुर आदि का नाम लिया जा सकता है।

बोध प्रश्न

- 'कुछ शब्द कुछ रेखाएँ' किसकी रचना है ?
- प्रमुख हिन्दी रेखाचित्रकारों की सूची बनाइए।

2.3.2 संस्मरण का इतिहास –

संस्मरण को अंग्रेजी में 'मेमोयर्स' कहते हैं। इसमें लेखक अपने व्यक्तिगत जीवन और उसके संपर्क में आए विशिष्ट व्यक्तियों के जीवन को कुछ पहलुओं को याद करके उसे लेखन बद्ध करता है तो उसे संस्मरण कहा जाता है। संस्मरण का संबंध लेखक के स्मृति से होता है। डॉ. गोविंद त्रिगुणायत ने व्यक्तिव पर प्रकाश डालते हुए कहते हैं "भावुक कलाकार जब अतीत की अनंत स्मृतियों में से कुछ रमणीय अनुभूतियों को अपने कोमल कल्पना से अनुरंजित कर व्यंजनामूलक संकेत शैली में अपने व्यक्तित्व की विशिष्टताओं से विशिष्ट बनाकर रोचक ढ़ंग से यथार्थ रूप में व्यक्त करता है, तब उसे संस्मरण कहते हैं।" संस्मरण का इतिहास आरंभिक युग से माना जाता है। निम्नलिखित संस्मरण का इतिहास को देख सकते हैं।

अ) आरंभिक युग -

रेखाचित्र एवं संस्मरण हिन्दी साहित्य के इतिहास में अन्य गद्य साहित्य की कोटी में आता है। इस युग में रेखाचित्र की शुरुआत नहीं हुई थी लेकिन संस्मरण विधा की शुरुआत भारतेंदु युग से ही हुई है। बालमुकुंद गुप्त द्वारा सन् 1907 में प्रतापनारायण मिश्र पर लिखे संस्मरण को हिन्दी का प्रथम संस्मरण माना जाता है। बाद में इस काल की एकमात्र संस्मरण पुस्तक 'हरिऔध' पर केंद्रित गुप्त जी द्वारा लिखित 'हरिऔध' के संस्मरण' के नाम से प्रकाशित हुई। इसमें हरिऔध को वर्ण्य विषय बनाकर पंद्रह संस्मरणों की रचना की गई है।

आ) द्विवेदी युग

इस युग में हिन्दी की पत्र-पत्रिकाओं ने गद्य विधाओं के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'सरस्वती' पत्रिका में कई संस्मरण लिखे। उन्होंने अपने समकालीन कई लेखकों को नई गद्य विधाओं में लिखने के लिए प्रेरित भी किया। इस समय के प्रमुख संस्मरण लेखकों में द्विवेदी जी के अतिरिक्त रामकुमार खेमका, काशीप्रसाद जायसवाल और श्यामसुंदर दास हैं। श्यामसुंदर दास ने लाला भगवानदीन पर रोचक संस्मरण लिखे।

बोध प्रश्न

- द्विवेदी युग में द्विवेदी के अलावा अन्य संस्मरण लेखक कौन कौन है?

इ) छायावाद युग

छायावाद युग में महादेवी वर्मा ने संस्मरण एवं रेखाचित्र दोनों में लेखन कार्य की है। उनके रेखाचित्र एवं संस्मरण में ज्यादा कुछ अंतर नहीं है। इसलिए उनके रेखाचित्र एवं संस्मरण महादेवी वर्मा ने अपने संस्मरणों में अपने जीवन में आए अनमोल पलों को अपने 'पथ के साथी' में संकलित किया है। अपने समकालीन साहित्यकारों पर इन रेखाचित्रों में अब तक किसी भी लेखक द्वारा लिखी गई सर्वश्रेष्ठ टिप्पणी कहें तो इसमें कोई अतिशयोक्ति की बात न होगी।

निराला के 'बिल्लेसुर बकरिहा' और 'कुल्लीभाट' में संस्मरण और रेखाचित्र का अनुपम संयोग हुआ है। इन्हें किसी एक विधा के अन्तर्गत रखना संभव नहीं है लेकिन अपनी सजीवता और व्यंग्य के कारण इन्हें अप्रतिम कहा जा सकता है।

प्रकाशचंद गुप्त का भी नाम संस्मरण लिखने वालों में आता है। उनके संस्मरणों का संग्रह 'पुरानी स्मृतियाँ' नामक से किया है। इलाचंद्र जोशी कृत 'मेरे प्राथमिक जीवन की स्मृतियाँ' और वृंदावनलाल वर्मा कृत 'कुछ संस्मरण' इस काल की उल्लेखनीय रचनाएँ हैं।

बोध प्रश्न

- छायावाद युग के प्रमुख संस्मरण लेखक कौन कौन हैं ?

ई) छायावादोत्तर युग

बनारसीदास चतुर्वेदी का इस काल में महत्वपूर्ण स्थान है। उन्हें संस्मरण लेखन के क्षेत्र में विशेष सफलता मिली। विशेषतः वे पेशे से साहित्यिक पत्रकार थे, इसलिए इनके संस्मरणों के विषय बहुत व्यापक हैं। इनके संस्मरण की शैली मानवीय पक्ष की प्रबलता को देखा जा सकता है। बनारसीदास चतुर्वेदी के संस्मरणों का संकलन 'संस्मरण' नाम से प्रसिद्ध हैं। इनके संस्मरण रोचकता के लिए विशेष प्रसिद्ध हुए। इनकी शैली वर्णनात्मक और भाषा अत्यंत सरल है।

कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर ने भी संस्मरणों की रचना की है। उनके प्रसिद्ध संस्मरण संग्रह 'भूले हुए चेहरे' तथा 'दीप जले शंख बजे' हैं। इनका भी संस्मरण लेखन में महत्त्वपूर्ण स्थान है। उपेंद्रनाथ अश्क का 'मंटो मेरा दुश्मन' का साहित्यिक और गैर-साहित्यिक दोनों स्थानों पर भरपूर स्वागत हुआ। जगदीशचंद्र माथुर ने 'दस तस्वीरें' और 'जिन्होंने जीना जाना' के माध्यम से अपने समय की महत्वपूर्ण संस्मरणात्मक चित्र को प्रस्तुत किया गया है।

डा. नगेन्द्र ने संस्मरण और रेखाचित्रों में कोई तात्विक भेद नहीं मानते हैं, उन्होंने 'चेतना के बिंब' कृति के माध्यम से इस विधा का विकास किया। इस युग के प्रमुख संस्मरण लिखनेवालों में प्रभाकर माचवे, विष्णु प्रभाकर, अज्ञेय और कमलेश्वर आदि का नाम आता हैं। इस प्रकार से छायावाद युग में संस्मरणों लेखन कार्य का विकास हुआ है।

बोध प्रश्न

- चेतना के बिम्ब किस की कृति है?

उ) समकालीन युग

इस युग में आत्मकथात्मक विधाओं का लेखन कार्य भरमार हुआ है। आज के युग में संस्मरण लेखन में वृद्धि हुई है। अपने अतीत को बयान करने की ललक हर आदमी के भीतर होती है और उसकी अभिव्यक्ति करना अन्य विधाओं की तुलना में काफी आसान होता है। डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी द्वारा नामवर सिंह पर लिखित संस्मरण 'हक अदा न हुआ' ने इस विधा को नई ताजगी से भर दिया है और इससे प्रभावित होकर कई नए और पुराने लेखक इस ओर मुड़े हैं। इनकी सद्य प्रकाशित

पुस्तक 'नंगातलाई का गांव' (2004) को उन्होंने स्मृति आख्यान कहा है। वर्तमान समय के संस्मरण लेखकों में काशीनाथ सिंह, कांतिकुमार जैन, राजेंद्र यादव, रवीन्द्र कालिया, ममता कालिया अखिलेश का नाम काफी प्रमुखता से ले सकते हैं।

देवेन्द्र सत्यार्थी ने देश भर के लोकगीतों का संग्रह करते हुए बड़े सुंदर संस्मरण भी लिखे। जैसे - क्या गोरी क्या सांवरी, रेखाएँ बोल उठीं। भदंत आनंद कौसल्यायन के संस्मरण 'जो न भूल सका'। संस्मरण लेखन के क्षेत्र में कुछ अन्य नाम हैं - उपेंद्रनाथ 'अश्क' (मंटो मेरा दुश्मन), यशपाल (सिंहावलोकन), जैनेन्द्र कुमार (ये और वे), शिवरानी प्रेमचंद (प्रेमचंद : घर में), मोहनलाल महतो 'वियोगी', काका कालेलकर, विष्णु प्रभाकर, शांतिप्रिय द्विवेदी तथा प्रभाकर माचवे।

बोध प्रश्न

- संस्मरण साहित्य का प्रारंभ किस युग से माना जाता है?

2.3.3 रेखाचित्र एवं संस्मरण में अंतर –

यह दोनों भी विधाएँ हिन्दी गद्य साहित्य में गौण रूप में हैं। दोनों में किंचित अंतर है बहुत ज्यादा अंतर नहीं है। रेखाचित्र में लेखक अपनी भावना के साथ-साथ स्मृति के आधार पर विभिन्न चित्र को प्रस्तुत करता है। रेखाचित्र और संस्मरण को कभी कभी अलग करके देखना कठिन हो जाता है। रेखाचित्र में व्यक्ति के व्यक्तित्व का संपूर्ण विकास देखा जाता है। इसमें रेखाचित्र के बहाने बाह्य के साथ आंतरिक भावों की प्रस्तुति होती चलती है। रेखाचित्र में तिथिक्रम या घटनाओं की क्रमबद्धता पर ध्यान नहीं दिया जाता है। रेखाचित्र में किसी विशेष व्यक्ति ही नहीं बल्कि किसी भी वर्ग के व्यक्ति को केंद्र में रखकर रेखाचित्र लिखे जाते रहे हैं। संस्मरण में चित्रात्मकता की आवश्यकता नहीं होती है, किन्तु इसे रेखाचित्र में केंद्रबिंदु माना जाता है। संस्मरण में विवरण प्रधान होता है, रेखाचित्र में विवरण का कोई खास महत्त्व नहीं है। जहाँ संस्मरण विवरणात्मक होते हैं, वहीं रेखाचित्र रेखात्मक। इसीलिए कहा जाता है कि प्रायः प्रत्येक संस्मरण लेखक रेखाचित्र लेखक भी है और प्रत्येक रेखाचित्र लेखक संस्मरण लेखक भी।

बोध प्रश्न

- रेखाचित्र जीवनचरित्र नहीं हैं। कैसे?
- रेखाचित्र और संस्मरण में क्या समानता-असमानता है।
- रेखाचित्र के संदर्भ में रामस्वरूप चतुर्वेदी का कथन स्पष्ट करें।

रेखाचित्र एवं संस्मरण दोनों में परस्पर घनिष्ठ संबंध होते हुए भी विषय और शैली की दृष्टि से विधागत स्वरूप में अंतर होता है। रेखाचित्र चारित्रिक चित्र होता है किन्तु संस्मरण केवल बाहरी एवं आंतरिक चरित्र का विश्लेषण और प्रस्तुतिकरण करता है। यदि लेखक अपने रचना में व्यक्तित्व की स्मृति को सीमित रखता है तो वह रेखाचित्र कहलाएगी। यदि लेखक अपने रचनाओं में स्मृतियों के प्रसंग को उभारने का कार्य करता है तो वह संस्मरण कहलाएगी। संस्मरण में सच्ची

घटनाओं का वर्णन होता है, और इसमें अतीत की किसी घटना का शब्दांकन किया जाता है। रेखाचित्र में अतीत एवं वर्त्तमान दोनों का भी वर्णन किया जा सकता है। जबकि संस्मरण में केवल अतीत का होता है। रेखाचित्र में अतिश्योक्ति की सहायत ली जाती है, लेकिन संस्मरण में इसके लिए कोई जगह नहीं है। रेखाचित्र बाहरी विशेषताओं का वर्णन करता है किन्तु संस्मरण-लेखक की दृष्टि आंतरिक विशेषताओं पर केन्द्रित रहती है। रेखाचित्र में कल्पना प्रधान होती है, तो संस्मरण में सत्यानुमोदित किया जाता है। रेखाचित्र में एक प्रकार की तटस्थता का भाव होता है जबकि संस्मरण में नहीं।

बोध प्रश्न

- 'संस्मरण और रेखाचित्र में सूक्ष्म अंतर है।' स्पष्ट कीजिए।
- संस्मरण के दो लक्षण लिखिए।

महादेवी वर्मा ने अपनी एक पुस्तक में आत्मकथ्य के बहाने संस्मरण के विषय में निम्नलिखित वक्तव्य दिया है-

'संस्मरण' को मैं रेखा चित्र से भिन्न साहित्यिक विधा मानती हूँ। मेरे विचार में यह अन्तर अधिक न होने पर भी इतना अवश्य है कि हम दोनों को पहचान सकें। 'रेखाचित्र' एक बार देखे हुए व्यक्ति का भी हो सकता है जिसमें व्यक्तित्व की क्षणिक झलक मात्र मिल सकती है। इसके अतिरिक्त इसमें लेखक तटस्थ भी रह सकेंगे। यह प्रकरण हमारी स्मृति में खो भी सकता है, परन्तु 'संस्मरण' हमारी स्थायी स्मृति से सम्बन्ध रखने के कारण संस्मरण के पात्र से हमारे घनिष्ठ परिचय की अपेक्षा रखता है, जिसमें हमारी अनुभूति के क्षणों का योगदान भी रहता है। इसी कारण स्मृति में ऐसे क्षणों का प्रत्यावर्तन भी सहज हो जाता है और हमारा आत्मकथ्य भी आ जाता है। यदि हम किसी से प्रगाढ़ और आत्मीय परिचय रखते हैं, तो उस व्यक्ति को अनेक मनोवृत्तियों तथा उनके अनुसार आचरण करते देखना भी सहज हो जाता है और अपनी प्रतिक्रिया की स्मृति रखना भी स्वाभाविक हो जाता है। इन्हीं क्षणों का सुखद या दुःखद प्रत्यावर्तन 'संस्मरण' कहा जा सकता है।

बोध प्रश्न

- महादेवी वर्मा के अनुसार संस्मरण और रेखाचित्र में क्या अंतर है?
- महादेवी वर्मा ने संस्मरण विधा के स्वरूप को किस प्रकार समझाया है?

2.4: पाठ सार

संस्मरण और रेखाचित्र में बहुत सूक्ष्म अंतर है। कुछ विद्वानों का मत है कि दोनों विधा एक-दूसरे की पूरक हैं। रेखाचित्र का उद्भव अंग्रेजी और रूसी साहित्य के रेखाचित्र के प्रभाव से उत्पन्न हुआ है। रेखाचित्र को अंग्रेजी के 'स्कैच' शब्द का रूपांतरण कहते हैं। रेखाचित्र में किसी व्यक्ति, वस्तु या संदर्भ का अंकन किया जाता है। संस्मरण को अंग्रेजी में 'मेमोयर्स' कहते हैं। इसमें

लेखक अपने व्यक्तिगत जीवन और उसके संपर्क में आए विशिष्ट व्यक्तियों के जीवन को कुछ पहलुओं को याद करके उसे लेखन बद्ध करता है तो उसे संस्मरण कहा जाता है। आज हम परंपरागत मानदंडों पर कसकर कई विधाओं को नहीं देख सकते। रेखाचित्र विधा का भी रूप बदला है। उसको हम कहीं कहानी के भीतर तो कहीं संस्मरण अथवा आत्मकथा के भीतर अन्तर्भुक्त पाते हैं और कहीं स्वतंत्र विधा के रूप में भी देख सकते हैं। हिन्दी रेखाचित्र ने अपनी सीमाओं का लगातार अतिक्रमण किया है।

आधुनिक युग में संस्मरण हिन्दी गद्य साहित्य की स्वतंत्र विधा बनकर आगे आया है। इसकी अपनी अलग विशेषताएँ हैं। संस्मरण और रेखाचित्र एक से प्रतीत होते हैं किन्तु इनमें अंतर है। रेखाचित्र चारित्रिक और आंगिक शब्द चित्र है, जबकि संस्मरण केवल चित्र न होकर चरित्र का दर्पण भी होता है। इसमें लेखक सम्पूर्ण परिस्थिति का सद्भावपूर्वक वर्णन करता है। इसमें विचार भी है, स्मरण भी और साथ ही किसी विशिष्ट घटना का प्रभावपूर्ण विवरण भी। इसे लेखक स्मृति के आधार पर प्रस्तुत करता है और इसकी सत्यता का आधार वही होता है।

रेखाचित्र का इतिहास दो भागों में माना जाता है जो आरंभिक काल और उत्कर्ष काल नाम से जाना जाता है। आरंभिक काल में पद्म पराग जो सस्मरण एवं रेखाचित्र विधाओं में सम्मिलित है। पद्म पराग के रचियता पद्म सिंह शर्मा हैं। इनके बाद कई रेखाचित्रकार हुए जैसे – श्रीराम शर्मा, हरिशंकर शर्मा और बनारसीदास चतुर्वेदी आदि ने रेखाचित्र लिखा है। आरम्भिक काल की सीमा सिमित थी। उत्कर्ष काल में रेखाचित्र का भरमार लेखन हुआ है। इस काल में महादेवी वर्मा, रामवृक्ष बेनीपुरी, कन्हैयालाल शर्मा, जगदीशचंद्र माथुर आदि हैं।

संस्मरण के विकासक्रम में आरंभिक युग, द्विवेदी युग, छायावाद युग और छायावादोत्तर युग है। बालमुकुंद गुप्त द्वारा सन् 1907 में प्रताप नारायण मिश्र पर लिखा संस्मरण सबसे प्रथम संस्मरण कहा जाता है। इसके बाद संस्मरणों की रचना कई लेखकों ने की है। द्विवेदी युग में महावीर प्रसाद द्विवेदी, रामकुमार खेमका, काशीप्रसाद जायसवाल और श्यामसुंदर दास आदि हैं। छायावाद युग में महादेवी वर्मा, निराला, प्रकाशचंद गुप्त, वृन्दावनलाल वर्मा आदि ने संस्मरणों की रचना की है। छायावादोत्तर युग में बनारसीदास चतुर्वेदी कन्हैलालमिश्र प्रभाकर, उपेन्द्रनाथ अश्क, डॉ. नगेन्द्र, प्रभाकर माचवे, विष्णु प्रभाकर, अज्ञेय और कामेश्वर ने संस्मरण लेखन कार्य किया है। समकालीन युग में आत्मकथा का भी लेखन कार्य जारी था। इस युग के संस्मरण लिखने वालों में डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी द्वारा नामवर सिंह पर लिखित संस्मरण 'हक़ अदा न हुआ लिखा। इस से इस युग में नई ताजगी भर गई। काशीनाथ सिंह कांतिकुमार जैन, राजेंद्र यादव, रवींद्र कालिया, ममता कालिया आदि हैं।

रेखाचित्र एवं संस्मरण एक दूसरे के पूरक हैं दोनों में बहुत ज्यादा अंतर नहीं है। दोनों में परस्पर घनिष्ठ संबंध होते हुए भी विषय और शैली की दृष्टि से विधागत स्वरूप में कोई अंतर नहीं है। रेखाचित्र में लेखक अपने भावना के साथ-साथ स्मृति के आधार पर चित्र को प्रस्तुत करता है। संस्मरण में विवरण प्रधान होता है।

2.5 : पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुईं।

1. स्मृति पर आधारित गद्य विधाओं में रेखाचित्र और संस्मरण महत्वपूर्ण हैं।
2. रेखाचित्र एवं संस्मरण दोनों का इतिहास कुछ ज्यादा पुराना नहीं है। दोनों भी विधाएँ आधुनिक काल में उद्भव हुई है।
3. हिन्दी में 1929 में प्रकाशित पद्म सिंह शर्मा के 'पद्म पराग' को प्रथम रेखाचित्र होने का गौरव प्राप्त है।
4. महादेवी वर्मा का रेखाचित्र एवं संस्मरण में महत्वपूर्ण योगदान है।
5. रेखाचित्र एवं संस्मरण दोनों एक दूसरे के पूरक होते हैं।

2.6 : शब्द संपदा

1. अतिरंजना	=	बढ़ा चढ़ा कर कही गई बात
2. अनुभूति	=	अनुभव से प्राप्त
3. अनमोल	=	जिसका कोई मूल्य न आँका जा सके, अमूल्य
4. आत्मीय	=	आपसी प्रेमपूर्ण संबंध
5. इतिवृत्तात्मकता	=	वस्तु वर्णन या आख्यान की प्रधानता
6. तटस्थ	=	निरपेक्ष, निष्पक्ष, गुटबंदी से अलग
7. प्रगाढ़	=	गहरा
8. प्रत्यावर्तन	=	लौट कर आना, वापसी, बहाली
9. उत्कर्ष	=	उन्नति, विकास, समृद्धि
10. कैनवस	=	किसी सिद्धांत या अवधारणा की समाज के संदर्भ में स्थिति, वैचारिक परिदृश्य

2.7 : परीक्षार्थ प्रश्न

खडं – (अ)

दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. रेखाचित्र का अर्थ बताते हुए उसके इतिहास पर प्रकाश डालिए।
2. संस्मरण का अर्थ बताते हुए उसके इतिहास पर प्रकाश डालिए।
3. रेखाचित्र एवं संस्मरण के अंतर को स्पष्ट कीजिए।

खडं – (ब)

लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. रेखाचित्र के इतिहास का उत्कर्ष काल पर प्रकाश डालिए।
2. संस्मरण के इतिहास का छायावाद युग को स्पष्ट कीजिए।
3. "रेखाचित्र एवं संस्मरण एक दूसरे के पूरक है" स्पष्ट कीजिए।

खडं – (स)

I. सही विकल्प चुनिए-

1. 'अतीत के चलचित्र' रेखाचित्र के रचनाकार हैं। ( )

(A) महादेवी वर्मा (B) रामवृक्ष बेनीपुरी (C) शिव पूजन सहाय (D) विष्णु प्रभाकर

2. रेखाचित्र का इतिहास कितने कालों में विभाजन है? ( )

(A) 2 (B) 3 (C) 4 (D) 5

3. रेखाचित्र का इतिहास दो काल में विभाजित है उनका नाम क्या है? ( )

(A) आरंभिक काल (B) उत्कर्ष काल (C) A और B दोनों भी (D) कोई नहीं

4. संस्मरण क्या नहीं है? ( )

A) वैयक्तिक लेखन B) ऐतिहासिक अध्ययन

C) स्मृति की अभिव्यक्ति D) साहित्यिक विधा

5. 'माटी की मूरतें' किस विधा की रचना है ? ( )

A) निबंध B) आत्मकथा

C) संस्मरण D) रेखाचित्र

II. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए.

1. 'माटी हो गई सोना' के रचनाकार _____रेखाचित्र है?
2. महादेवी वर्मा जन्म _____ ई. स. को हुआ.
3. 'पद्म पराग' का प्रकाशन _____ वर्ष में हुआ.

III सुमेल कीजिए

1. माटी हो गई सोना	(अ) महादेवी वर्मा
2. जो न भूल सका	(आ) 1929
3. 'पद्म पराग	(इ) कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर
4. अतीत के चलचित्र	(ई) भदंत आनंद कौसल्यायन

2.8 : पठनीय पुस्तकें

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास – आ. रामचंद्र शुक्ल

2. हिन्दी साहित्य कोश. (सं) धीरेन्द्र वर्मा.

3. हिन्दी भाषा और साहित्य.परमानंद श्रीवास्तव.

4. हिन्दी गद्य : विन्यास और विकास. रामस्वरूप चतुर्वेदी.

इकाई 3 : 'अंधी चमारिन' रेखाचित्र

इकाई की रूपरेखा

3.1-प्रस्तावना

3.2-उद्देश्य

3.3-मूल पाठ : 'अंधी चमारिन' रेखाचित्र' की विवेचना

3.3.1- 'अंधी चमारिन' रेखाचित्र के लेखक 'बनारसी दास चतुर्वेदी' का परिचय

3.3.2- 'अंधी चमारिन' रेखाचित्र की कथावस्तु

3.3.3-'अंधी चमारिन' रेखाचित्र के प्रमुख पात्र/पात्रों का चरित्र-चित्रण

3.3.4- 'अंधी चमारिन' रेखाचित्र में देश-काल चित्रण

3.3.5- 'अंधी चमारिन' रेखाचित्र में कथोपकथन

3.3.6- 'अंधी चमारिन' रेखाचित्र का भाषा-सौष्ठव

3.3.7- 'अंधी चमारिन'रेखाचित्र की शैली

3.4-पाठ सार

3.5-पाठ की उपलब्धियाँ

3.6-शब्द संपदा

3.7-परीक्षार्थ प्रश्न

3.8-पठनीय पुस्तकें

3.1 : प्रस्तावना

रेखाचित्र अंग्रेजी के 'स्केच' शब्द का हिन्दी रूपांतर है। जब शब्दों के माध्यम से किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व को उभारा जाता है, तब उस रचना को रेखाचित्र कहा जाता है। रेखाचित्र एक ऐसा साहित्यिक चित्र होता है, जिसमें किसी व्यक्ति या वस्तु के स्वरूप की शब्दों के माध्यम से मर्मस्पर्शी अभिव्यक्ति की जाती है। रेखाचित्र में घटनाओं का उतार-चढ़ाव नहीं होता है, बल्कि तथ्य कथन मात्र होता है। रेखाचित्र का कार्य किसी वर्णित व्यक्ति के रूप-सौंदर्य तथा विभिन्न परिस्थितियों में उसके द्वारा की गई विभिन्न चेष्टाओं की सहायता से उसके चरित्र का एक प्रभावक एवं संवेदनशील चित्र अंकित करना होता है।

बनारसीदास चतुर्वेदी ख्यातिलब्ध पत्रकार तथा प्रतिनिधि संस्मरण-रेखाचित्रकार हैं।उनका 'रेखाचित्र' नामक रेखाचित्र संग्रह 1952 ई. में प्रकाशित हुआ, जिसमें चतुर्वेदी जी के 40 रेखाचित्र संग्रहित हैं। इस रेखाचित्र संग्रह में 'अंधी चमारिन' रेखाचित्र भी संग्रहित है, जिसमें सर्वहारा

परिवार की एक महिला और उसकी बेटी के अभावपूर्ण और अंतहीन जीवन- संघर्ष का अंकन किया गया है। इस रेखाचित्र को पढ़ने मात्र से पाठक मानवीय संवेदना के धरातल पर जा खड़ा होता है। सम्पूर्ण रेखाचित्र माँ कसिया तथा उसकी छ: वर्षीय बेटी सुनिया के जीवन-संघर्ष का यथार्थ चित्रण करता है। रचनाकार ने बुंदेली भाषा को माध्यम बनाकर इस रचना को विश्वसनीयता के सशक्त धरातल पर प्रतिष्ठित किया है। अपने संघर्ष के कारण मां कसिया और बेटी सुनिया समूचे देश के सर्वहारा वर्ग के आदर्श मानक चरित्र बन गए हैं ,जिनका संघर्ष अलग-अलग पात्रों के माध्यम से वर्तमान समाज में भी जारी है, इसलिए यह रचना वर्तमान समय में भी प्रासंगिक लगती है। अब आप इस इकाई में बनारसी दास चतुर्वेदी द्वारा लिखित 'अंधी चमारिन' रेखाचित्र का अध्ययन करेंगे।

3.2 : उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के पश्चात् आप -

1-रेखाचित्र की परिभाषा एवं स्वरूप को स्पष्ट कर सकेंगे।

2- 'अंधी चमारिन' रेखाचित्र के भाषा-सौष्ठव को समझ सकेंगे।

3- 'अंधी चमारिन' रेखाचित्र की वर्तमान समय में प्रासंगिकता को बता सकेंगे।

4- रेखाचित्रकार के विषय में बता सकेंगे तथा उनके विचारों को समझ सकेंगे।

5- 'अंधी चमारिन' रेखाचित्र की शैली को व्यक्त कर सकेंगे।

6- इस रेखाचित्र में प्रयुक्त बुंदेली भाषा के शब्दों को पहचान सकेंगे।

7- सर्वहारा वर्ग के लोगों के जीवन संघर्ष को जान सकेंगे तथा इस रेखाचित्र के मूल संदेश को बता सकेंगे।

3.3 : मूल पाठ : 'अंधी चमारिन' रेखाचित्र की विवेचना

3.3.1- 'अंधी चमारिन' रेखाचित्र के लेखक 'बनारसी दास चतुर्वेदी' का परिचय -

बनारसी दास चतुर्वेदी(24 दिसंबर 1892- 2 मई 1985 ई.) का जन्म 24 दिसंबर सन् 1892 ई. में उत्तर प्रदेश के फिरोजाबाद जिले में हुआ था। वे प्रसिद्ध हिन्दी साहित्यकार, ख्यातिलब्द्ध पत्रकार तथा संस्मरण-रेखाचित्रकार थे। इनकी पत्रकारिता का आरम्भ 'विशाल भारत' के सम्पादन से हुआ था। 'विशाल भारत' छोड़ने के बाद टीकमगढ़ से 'मधुकर' पत्र का सम्पादन इन्होंने किया। चतुर्वेदी जी राज्यसभा के सांसद भी रहे। उनकी साहित्यिक सेवाओं के लिए उन्हें 1973 ई. में पद्यभूषण से सम्मानित भी किया गया था। चतुर्वेदी जी अंग्रेजी के प्रसिद्ध रेखाचित्रकार ए.जी. गार्डिनर से अत्यधिक प्रभावित थे। प्रिंस क्रोपाटाकिन(1940), हमारे

आराध्य(1952), संस्मरण (1953), रेखाचित्र(1952), सेतुबंध(1962) इनके संस्मरण-रेखाचित्र संग्रह हैं। चतुर्वेदी जी ने इन पुस्तकों में भारत के साहित्यकारों-पत्रकारों-विचारकों के अतिरिक्त विदेशी-साहित्यकारों-विचारकों के भी चित्र हैं। अपने देश के लोगों में- सी.वाई. चिन्तामणि, राहुल सांकृत्यायन, संपूर्णानन्द, अख्तर हुसैन रायपुरी, महावीर प्रसाद द्विवेदी, बाबू राजेंद्र प्रसाद,जवाहरलाल नेहरू, श्रीमती सत्यवती मल्लिक, बालकृष्ण शर्मा नवीन आदि के रेखाचित्र हैं। विदेशियों में इन्होंने दीनबन्धु ऐण्ड्रयूज, प्रिंस क्रोपाटाकिन, रोमाँ रोलौं आदि को रेखांकित किया है। इन रेखांकनों के अतिरिक्त उन्होंने कुछ सामान्य व्यक्तियों का रेखांकन भी किया है। जैसे- चार सिपाही, सूजान अहीर, अन्धी चमारिन आदि। उनके संस्मरण-रेखाचित्र में चतुर्वेदी जी की अपनी आत्मीयता और सन्निकटता को देखा जा सकता है। उनके रेखाचित्रों में विश्लेषणात्मकता, भावुकता,मानवतावादी दृष्टिकोण, विनोदप्रियता तथा व्यंग्यात्मकता का पुट इत्यादि के दर्शन होते हैं। उनकी भाषा शैली उनके व्यक्तित्व के अनुरूप उन्मुक्त और सहज है।

बोध प्रश्न-

• बनारसी दास चतुर्वेदी का जन्म कब और कहां हुआ था?

• 'विशाल भारत' और 'मधुकर' पत्र के संपादक का नाम बताइए।

• बनारसी दास चतुर्वेदी को पद्यभूषण से कब सम्मानित किया गया था?

3.3.2- 'अंधी चमारिन' रेखाचित्र की कथावस्तु -

बनारसी दास चतुर्वेदी ने 'अंधी चमारिन' रेखाचित्र में पद-दलित, शोषित और अपमानित मजदूर वर्ग का सजीव चित्रण किया है। उनके इस रेखाचित्र में सर्वहारा वर्ग के यातनामय जीवन तथा विसंगतियों की यर्थाथता को प्रदर्शित किया गया है। रेखाचित्रकार ने ग्रामीण जीवन तथा सामाजिक एवं आर्थिक विषमता से पीड़ित निम्नवर्गीय परिवार की माँ एवं पुत्री के जीवन-संघर्ष का चित्रण किया है-

माँ कसिया और उसकी छह वर्षीय पुत्री सुनिया अनेक विसंगतियों के कारण दु:ख भोगती हैं। कसिया अन्धी है, जिसका एकमात्र सहारा सुनिया है। कण्ट्रोल से मिलने वाले कपड़े पहनना तथा माँग कर खाना, खाना इसी से उनका जीवन चलता है। कसिया जब 5 वर्ष की थी तब उसका विवाह परम चमार के साथ हो गया था ,परंतु उम्र में बड़े होने के कारण उसने कसिया को छोड़ दिया था। कसिया का दूसरा पति मोहना चमार था, जो कौंसिया तथा सुनिया का पिता था।कसिया का पति मोहना चमार मजदूरी करता था। एक साल गाँव में मेला लगा था।मेले में दिनभर काम करने से वह बीमार पड़ गया और मर गया। उसके बाद कसिया की बड़ी बेटी कौंसिया

भी मर गई। कसिया चारा काटा करती , मेहनत-मजदूरी करती, पर आदमी के मर जाने से रोते-रोते आँख खराब हो गई। कसिया और सुनिया को केवल ईश्वर का ही सहारा था। कसिया के द्वारा उसके जीवन की कहानी को सुनने के बाद लेखक मानवीय संवेदना के धरातल में खड़ा हो जाता है और सोचने लगता है कि उद्योग-धन्धों के अभाव में इन मजदूरों की रक्षा कैसे हो सकती है। हमारे ये सांस्कृतिक कार्यक्रम, जनपदीय आन्दोलन, बसन्तोत्सव, साहित्य संगोष्टी, प्रान्तीय सम्मेलन, सुनिया और उसकी अंधी माँ के लिए क्या महत्त्व रखते हैं। लेखक ने इस रेखाचित्र में साम्यवाद को लाने की बात कही है तथा यह कहा है कि बिना नवीन सामाजिक व्यवस्था के सुनिया और उसकी माँ जैसे करोड़ों लोग जीवन के खण्डहर में अपने निराशामय दिन गुजार देंगे चतुर्वेदी जी ने इस रेखाचित्र के द्वारा निम्न वर्ग के यातनामय संघर्ष का चित्रण करने के साथ ही आशावादी संदेश भी दिया है, कि जिन विसंगतियों से कसिया गुजरी है, पलायन या हताशा के सिवा उससे दूसरी कोई कल्पना भी नहीं की जा सकती, परन्तु फिर भी उसमें जिंदगी जीने की ललक है और इसी ललक को स्थापित करना शायद चतुर्वेदी जी का मूल उद्देश्य भी है।

बोध प्रश्न-

• 'अंधी चमारिन' रेखाचित्र में कसिया की पुत्री का नाम क्या है।

• कसिया कैसे जीवनयापन करती थी?

• कौंसिया तथा सुनिया के पिता का क्या नाम है ?

3.3.3- 'अंधी चमारिन' रेखाचित्र के प्रमुख पात्र/पात्रों का चरित्र-चित्रण -

वस्तुत: घटनाएं किसी भी कथात्मक रचना की जीवंतता एवं विश्वसनीयता का मूलाधार होती हैं, लेकिन चरित्र और पात्र भी उन घटनाओं की जीवंतता एवं विश्वसनीयता के मूलाधार होते हैं। बुंदेली भाषा में सृजित इस रेखाचित्र में माँ कसिया और बेटी सुनिया के मर्मस्पर्शी चरित्र का लेखक ने सृजन किया है। किन्तु ये दोनों पात्र अपने संघर्ष में समूचे देश के सर्वहारा वर्ग के आदर्श मानक चरित्र बन गये हैं, क्योंकि उनका संघर्ष वर्तमान समय में भी अलग- अलग पात्रों के माध्यम से जारी है। इस रेखाचित्र में निम्नलिखित पात्र हैं-

1-कसिया, 2-सुनिया, 3-पंडित, 4- मैनेजर श्री सीताराम 5- लेखक।

जिसमें सम्पूर्ण रेखाचित्र में कसिया ही प्रमुख पात्र है, बाकी पात्र मुख्य पात्र के सहायक और कथा के प्रवाह को बनाए रखने में सहायक हैं। कसिया के चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएं हैं-

1-सर्वहारा वर्ग का प्रतीक तथा ईश्वर पर अटूट् विश्वास- आजादी की दहलीज पर सर्वहारा वर्ग का प्रतीक कसिया और उसकी पुत्री के लिए परिस्थितियां बहुत ही विषम थीं। हर प्रकार के

अभावों के चलते कसिया और सुनिया नरकीय जिंदगी जीने के लिए अभिशप्त थीं।फिर भी उनकी जिजीविषा ने दम नहीं तोड़ा।कसिया इस सोच के साथ जीवन-संघर्ष में जुटी रही, कि "मोय तो ईसुर को सहारौ है, जैसे ऊखौ पार लगावने हुइये सो लगावै।" कसिया और सुनिया जिजीविषा का जीवंत उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

2-आशावादी नारी- इंसान अपने जीवन-संघर्ष में कुछ उम्मीदें लेकर सक्रिय होता है। कसिया की भी कुछ उम्मीदें थी पर भाग्य की विडम्बना ऐसी थी कि वह शारीरिक एवं आर्थिक रूप से अशक्त थी पर कसिया ने परिस्थितियों का सामना किया, पलायन नहीं। कसिया का पात्र यह बताता है, कि विपरीत परिस्थितियों से भागना उपाय नहीं है, बल्कि उसका सामना करना चाहिए।कसिया की जिंदगी जीने की ललक ने समाज को आशावादी संदेश देते हुए प्रेरित किया है कि कठिनाई जिंदगी में बहुत होती हैं पर हताश नहीं होना चाहिए और जिंदगी जीने की ललक को बरकरार रखना चाहिए।

3- एक आदर्श माँ- कसिया एक अच्छी माँ है, जिसने कौंसिया और सुनिया को संस्कारी बनाया है। माँ की सेवा कौंसिया भी करती थी।उसकी मृत्यु के उपरांत सुनिया माँ की सेवा करती है।यथा- "कौंसिया पानी भर लाउत ती, ईंधन बीन लाउत ती।"अब छह वर्ष की सुनिया है। वही अंधी माँ का एक मात्र सहारा है। मौंड़ी के हाथ पर काऊने दो कौरा धरि दए तो खाए लए, ना नाँही तो नाँहि।"

4- कसिया एक साहसी तथा संघर्षशील नारी है, पति की मृत्यु, पुत्री की मृत्यु,स्वयं के नेत्र खराब होना, इतनी विसंगतियों का सामना करती है, पर पलायन नहीं।

5-एक मेहनती और कर्मठीय नारी है जो अन्धी होने के बावजूद समाज विरोधी कार्य नहीं करती थी और अपने जीवनयापन के लिए मांग कर खाना खाती थी। इस प्रकार कसिया पूरे रेखाचित्र का जीवंत पात्र है,जो देश के सर्वहारा वर्ग का प्रतीक है, जिसके जीवन-संघर्ष में आशावादी संदेश छुपा है जो देश के प्रत्येक वर्ग के लिए संदेश देता है, कि जिंदगी जीने की ललक छोड़नी नहीं चाहिए बल्कि विसंगतियों का सामना करना चाहिए।

बोध प्रश्न-

- कसिया आशावादी नारी थी, स्पष्ट कीजिए।
- कसिया के चरित्र की विशेषताएँ बताइए।
- कसिया एक मेहनती और कर्मठीय नारी है, स्पष्ट कीजिए।

3.3.4- 'अंधी चमारिन' रेखाचित्र में देश-काल चित्रण -

साहित्य की प्रत्येक विधा का निर्माण देश और काल को आधार बनाकर किया जाता है। साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है और मनुष्य एक सामाजिक प्राणी। रेखाचित्र के देश से तात्पर्य उस स्थान से होता है, जहां पर कहानी घटित होती है ,इस रेखाचित्र में कसिया के जीवन की कहानी बुंदेलखण्ड के अंगौरा गाँव जो अस्तौना के पास था की है।कसिया का विवाह अंगौरा गाँव में ही होता है, जो की अस्तौना के पास ही था। यह रेखाचित्र ग्रामीण परिवेश पर आधारित है।गाँव में खेती होती थी। मजदूर वर्ग मजदूरी करते थे, गाँव के ठाकुर के घर से कसिया गोबर उठाती थी। कसिया का पति खेती करता था। गाँव में मेला लगा करता था। मेले में भी उसका पति रूपए-पैसे के लिए दिन-रात मेहनत करता था।सर्वहारा वर्ग के यहां लकड़ी से खाना पकता था अर्थात् सुविधाओं के अभाव में निम्नवर्ग जीवनयापन कर रहा था। चतुर्वेदी जी वातावरण निर्माण का बहुत ध्यान रखते हैं,सम्पूर्ण रेखाचित्र बुंदेलखण्ड के ग्रामीण वातावरण से संबंध है अत: उन्होंने उस दशा से संबंध वातावरण की सृष्टि की है, यथा- रैवेकी जगा गिरत जात। सुदरा तक नई पाऊत। कमऊँ कोऊ कौ पीस दऔ सो ऊने खाबे दे राखो।"

रेखाचित्रकार ने सर्वहारा वर्ग की ग्रामीण विधवा नारी की दीन-हीन दशा का सजीव चित्रण किया है।

बोध प्रश्न-

• 'अंधी चमारिन' रेखाचित्र के देश काल का चित्रण कीजिए।

• कसिया किस जिले के गांव में रहती थी।

• कसिया कौन -कौन से काम करके जीवनयापन करती थी?

3.3.5- 'अंधी चमारिन' रेखाचित्र में कथोपकथन -

कथोपकथन या संवाद रेखाचित्र का अनिवार्य अंग नहीं है। सम्पूर्ण रेखाचित्र अन्य पुरुष एक वचन में भी लिखा जा सकता है, किन्तु कथोपकथन से रेखाचित्र में सजीवता आ जाती है। कसिया और मैनेजर के कथोपकथन अत्यन्त स्वाभाविक और पत्रानुकूल है। मैनेजर सीताराम का बुन्देली भाषा में कसिया से प्रश्न करना और कसिया का उत्तर देना ही सम्पूर्ण रेखाचित्र के प्रवाह को बढ़ाता है। इस रेखाचित्र में अधिकांशतः कसिया और मैनेजर की बातचीत ही सम्पूर्ण रूप से पायी जाती है। यथा-

प्रश्न,"तेरौ नाँव का है?"

उत्तर," इतै मोय नचनबारेबाई कत हैं,और मायके कौ नाँव कसिया हतो।"

"ई बिटिया कौ का नाँव?"

"ई कौ सुनिया नाँव, महाराज।"

" तोरौ ब्याव कबै भऔ तो?"

कथोपकथन अथवा संवाद तभी सफल माने जा सकते हैं, जब वे कथा को गति देने वाले हों तथा पात्र की मानसिकता को स्पष्ट करते हों। चतुर्वेदी जी की अन्धी चमारिन रेखाचित्र में कथोपकथन अथवा संवाद योजना उत्कृष्ट है, इनके संवाद ,भाव और प्रसंग पात्रों के अनुकूल हैं।

बोध प्रश्न-

• कथोपकथन अथवा संवाद कब सफल माने जाते हैं?

• 'अंधी चमारिन' रेखाचित्र के कथोपकथन को संक्षिप्त रूप में बताइए।

• कसिया से प्रश्न करने वाले मैनेजर का नाम बताइए।

3.3.6-'अंधी चमारिन' रेखाचित्र का भाषा सौष्ठव -

भाषा भावों की वाहिका होती है। किसी भी लेखक के मानसिक विचारों को भाषा के माध्यम से मूर्तता प्राप्त होती है। कोई भी भाव बिना भाषा के व्यक्त नहीं हो सकता और भाषा भी भाव विहीन नहीं होती है। वास्तव में वही भाषा सफल मानी जाती है जो अभिप्सित भावों को पूर्ण रूप से व्यक्त करने में सक्षम होती है। विषयानुकूल और भावानुकूल भाषा ही श्रेष्ठ मानी जाती है।'अंधी चमारिन' रेखाचित्र की भाषा सम्बन्धी निम्न विशेषताएं हैं-

(1)इस रेखाचित्र में सरल, व्यावहारिक, ग्रामीण एवं बोलचाल की बुंदेली भाषा का प्रयोग है - "पैली के कछु मोंड़ी-मोड़ा है?"

(2)चतुर्वेदी जी का भाषा विषयक दृष्टिकोण अत्यंत उदार था, उन्होंने बुन्देली भाषा के प्रयोग के साथ-साथ अरबी- फारसी और अंग्रेजी के प्रचलित शब्दों का प्रयोग भी इस रेखाचित्र में किया है। जैसे- कण्ट्रोल, टॉल्सटॉय, जनाब, आदमी, आमदनी, हुजूर आदि।

(3) इस रेखाचित्र में चतुर्वेदी जी की भाषा कहीं पर परिष्कृत ,प्रौढ़ एवं साहित्यिक है तो कहीं पर ठेठ ग्रामीण बुंदेली जिसमें भाव प्रकाशन की अद्भुत क्षमता है। यथा- आप अपने सिद्धांतों के प्रतिकूल जीवन व्यतीत करते हैं और इस पाप का प्रायश्चित परोपकार वृत्ति से करना चाहते हैं !"अन्तरात्मा से ध्वनि निकली।

(4) इस रेखाचित्र में चतुर्वेदी जी ने मुहावरों का प्रयोग भी किया है, यथा- कंधे पर सवार होना।

(5) इस रेखाचित्र में बुंदेली भाषा की मूल प्रवृत्ति का ध्यान रखा गया है, अंग्रेजी ढंग की वाक्य रचना से उनकी भाषा मुक्त है।

(6) इस रेखाचित्र में संस्कृत के तत्सम एवं तद्भव शब्दों का प्रयोग मिलता है-यथा-

तत्सम शब्द जैसे- अन्न्, कार्य आदि।

तद्भव शब्द जैसे- कपड़ा, गाँव, नवीन, भूख आदि।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि बनारसीदास चतुर्वेदी जी के इस रेखाचित्र में भाषा का बहुत सुंदर वर्णन है।भाषा पर उनका पूर्णरूपेण अधिकार है।
रेखाचित्र की भाषा विषयानुकूल और भावानुकूल है।

बोध प्रश्न-

• 'अंधी चमारिन' रेखाचित्र की भाषा संबंधी तीन विशेषताओं को बताइए।

• "पैली के कछु मोंड़ा-मोड़ी है?" प्रस्तुत वाक्य में किस भाषा का प्रयोग मिलता है।

• भाषा भावों की वाहिका होती है। स्पष्ट कीजिए।

3.3.7-अंधी चमारिन रेखाचित्र की शैली

बनारसी दास चतुर्वेदी जी ने अपने 'अंधी चमारिन' रेखाचित्र में आवश्यकता और विषय के अनुरूप विविध शैलियों का प्रयोग किया है। उनकी शैली उनके व्यक्तित्व का परिचायक है। संक्षेप में शैली के जो विविध रूप उनके रेखाचित्र में दिखाई पड़ते हैं उनका विवेचन निम्न शीर्षकों में किया जा सकता है-

(1) भावात्मक शैली- इस रेखाचित्र में भावात्मकता का प्राधान्य है। इस प्रकार की शैली में चतुर्वेदी जी ने अपने अध्ययन और मनन को व्यक्त किया है। इस शैली से लेखक के विचार पाठकों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। यथा- इस बीच में लाखों-करोड़ों सुनियाँ और उनकी माताएँ जीवन के खण्डहर में अपने निराशामय दिन गुजार देंगी। इन भूखों को अन्न कौन देगा, मूकों को कौन वाणी?

(2) प्रश्नात्मक शैली- सम्पूर्ण रेखाचित्र में बनारसी दास चतुर्वेदी जी ने प्रश्नों की झड़ी लगा दी है। उनकी इस शैली को प्रश्नात्मक शैली कहा जा सकता है। जैसे- इलाज और पथ्य के लिए उनके पास क्या धरा था? जब वह अपना दुखड़ा रो रही थी, मैं सोच रहा था कि उद्योग-धन्धों के अभाव में इन मजदूरों की रक्षा कैसे हो सकती है?

(3) व्यंग्यात्मक शैली- व्यंग्य व्यक्ति या समाज की बुराइयों को हमारे समक्ष इस रूप में लाता है कि हमारा ध्यान उनकी ओर आकृष्ट हो सके और हम उन्हें दूर करने के लिए उठ खड़े हों, इसलिए व्यंग्य की शक्ति अनिवार्यता को इस रेखाचित्र के माध्यम से चतुर्वेदी जी ने स्वीकार किया है। यथा- टॉल्सटॉय के उस किस्से की याद आ गयी, एक महाशय किसी गरीब के कन्धे पर सवार थे और उसे आदेश दे रहे थे कि जल्दी-जल्दी चल! उसने कहा,"पहले हुजूर,कन्धे पर से उतर तो पड़ें!"

(4) विवेचनात्मक शैली- बनारसी दास चतुर्वेदी जी ने इस रेखाचित्र में गंभीर और जटिल विषयों की विवेचना सरल वाक्यों के माध्यम से स्पष्ट करते हुए विषय को अधिक स्पष्ट बना दिया है।यथा- यदि हमारा साहित्य इनके जीवन को स्पर्श नहीं करता, इनके कठोर वर्तमान तथा अन्धकारमय भविष्य में आशा की एक किरण भी नहीं लाता, तो है वह आखिर किस मर्ज की दवा?

(5) आवेग शैली- आवेग शैली का प्रयोग चतुर्वेदी जी के इस रेखाचित्र में दिखाई देता है, इस शैली में लिखे गए इस रेखाचित्र में भाव प्रवाह है। यथा- साम्यवाद आने में अनेकों वर्ष बाकी हैं,अराजकवाद में सैकड़ो और गान्धीवाद का राम-राज कब आएगा, राम जानें! इस बीच में लाखों-करोड़ों सुनियाँ और उनकी माताएँ जीवन के खण्डहर में अपने निराशामय दिन गुजार देंगी।

इस प्रकार चतुर्वेदी जी की भाषा भी प्रसंगानुकूल चलती चली जाती है। सरल ,ग्रामीण, बुंदेली भाषा भाषा का प्रयोग करते हुए, शब्द चयन के प्रति चतुर्वेदी जी अत्यधिक सजग हैं। यही कारण है कि चतुर्वेदी जी के रेखाचित्र भावगत और कलागत विशेषता के कारण हिन्दी रेखाचित्र के इतिहास में अपनी पृथक पहचान बनाए हुए हैं।

बोध प्रश्न-

• 'अंधी चमारिन' रेखाचित्र में उल्लेखित 'व्यंग्यात्मक शैली' के विषय में बताइए। तथा एक उदाहरण भी दीजिए।

• अंधी चमारिन रेखाचित्र में कौन-कौन सी शैलियां हैं तीन का नाम बताइए?

• अंधी चमारिन रेखाचित्र की भाषा शैली को स्पष्ट कीजिए।

3.4 : पाठ सार

रेखाचित्र अंग्रेजी के 'स्केच' शब्द का हिन्दी रूपांतर है। जब शब्दों के माध्यम से किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व को उभारा जाता है, तब उस रचना को रेखाचित्र कहा जाता है। बनारसीदास चतुर्वेदी जी के 'रेखाचित्र' नामक रेखाचित्र संग्रह में 'अंधी चमारिन' रेखाचित्र संग्रहित है, जिसमें सर्वहारा परिवार की एक महिला कसिया और उसकी छह वर्षीय बेटी सुनिया के अभावपूर्ण और अंतहीन जीवन- संघर्ष का अंकन किया गया है। इस रेखाचित्र को पढ़ने मात्र से पाठक मानवीय संवेदना के धरातल पर जा खड़ा होता है।रचनाकार ने बुंदेली भाषा को माध्यम बनाकर इस रचना को विश्वसनीयता के सशक्त धरातल पर प्रतिष्ठित किया है। अपने संघर्ष के कारण मां कसिया और बेटी सुनिया समूचे देश के सर्वहारा वर्ग के आदर्श मानक चरित्र बन गए हैं , कसिया का पात्र यह बताता है, कि विपरीत परिस्थितियों से भागना उपाय नहीं है, बल्कि उसका सामना करना चाहिए।कसिया की जिंदगी जीने की ललक ने समाज को आशावादी संदेश देते हुए प्रेरित किया है कि कठिनाई जिंदगी में बहुत होती हैं, पर हताश नहीं होना चाहिए और जिंदगी जीने की ललक

को बरकरार रखना चाहिए। सर्वहारा वर्ग का यह संघर्ष अलग-अलग पात्रों के माध्यम से वर्तमान समाज में भी जारी है, इसलिए यह रचना आज के समय में भी प्रासंगिक लगती है।

3.5 : पाठ की उपलब्धियाँ

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं-

1-इस इकाई को पढ़ने से रेखाचित्र की परिभाषा पर विशेष जानकारी मिलती है।

2-अध्ययन से यह पता चलता है कि, बनारसी दास चतुर्वेदी जी का 'रेखाचित्र' नामक रेखाचित्र संग्रह 1952 ई. में प्रकाशित हुआ, जिसमें चतुर्वेदी जी के 40 रेखाचित्र संग्रहित हैं। इस रेखाचित्र संग्रह में 'अन्धी चमारिन' रेखाचित्र भी संग्रहित है, जिसमें सर्वहारा परिवार की एक महिला और उसकी बेटी के अभावपूर्ण और अंतहीन जीवन- संघर्ष का अंकन किया गया है।

3-इस रेखाचित्र को पढ़ने के बाद पता चलता है कि बुन्देलखण्ड के ग्रामीण परिवेश की भाषा कैसी होती है तथा बुंदेली भाषा के शब्दों को पहचानने की समझ विकसित होती है।

4--इस रेखाचित्र में भावनात्मक शैली का प्रयोग देखने को मिलता है, जिससे रेखाचित्र को पढ़ने पर पाठक के ह्रदय में मानवीय संवेदना का संचार होता है।

5- इस रेखाचित्र को पढ़ने के उपरांत लेखक के मूल संदेश का ज्ञान प्राप्त होता है तथा विपरीत परिस्थितियों में जीवन को जीने की शक्ति मिलती है।

3.6 : शब्द संपदा

1- तेरौ- तुम्हारा

2- नाँव- नाम

3- का- क्या

4- इतै- इधर

5- भऔ- हुआ

6- पैली- पहली

7- मौंड़ी-मौंड़ा- लड़का-लड़की

8- ऊये- उसे

9- कत्ते- कहते थे

10- चाय- चाहे

11- मैन्ती-मजूरी- मेहनत-मजदूरी

12- कमऊँ- काम

13- मोय- मुझे

14- ऊखौं- उसको

15- लाउत- लाती

3.7 : परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1- 'अंधी चमारिन' रेखाचित्र की कथावस्तु लिखिए।

2- निम्न गद्य-खण्ड की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए एवं इसके साहित्यिक सौंदर्य को स्पष्ट कीजिए।

"क्या हम लोग इन्हीं गरीबों के कन्धों पर सवार नहीं हैं? क्या हमारी साहित्यिक आयोजनाएँ पेटभरों के, अमीरों के, चोचले नहीं है? यदि हमारा साहित्य इनके जीवन को स्पर्श नहीं करता, इनके कठोर वर्तमान तथा अंधकारमय भविष्य में आशा की एक किरण भी नहीं लाता, तो है वह आखिर किस मर्ज की दवा?"

3-निम्नलिखित अवतरण का संदर्भ प्रसंग सहित अर्थ स्पष्ट करते हुए इसके साहित्यिक सौंदर्य पर प्रकाश डालिए।

"एक भैया है खेती करत है। जब-कमऊँ कछ खावे खौं मोर दै राखत। मैं मायके जात नइयाँ। उतै जाकैं का करौं, भइया ने कमऊँ धरम लेखें कछू दै राखौ तो दै राखौ। मोय तो ईसुर को सहारौ है; जैसे ऊखौं पार लगावने हुइये सो लगावै।"

खंड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1- 'अंधी चमारिन' रेखाचित्र के भाषा सौष्ठव पर प्रकाश डालिए।

2- 'कसिया' की चरित्रगत प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

3-'अंधी चमारिन' रेखाचित्र की प्रासंगिकता को स्पष्ट कीजिए।

खंड (स)

(।) सही विकल्प चुनिए-

(1) 'अंधी चमारिन' विधा के रचनाकार काम नाम बताइए ( )

(क)बनारसी दास चतुर्वेदी (ख) फणीश्वरनाथ रेणु (ग)महादेवी वर्मा (घ) आचार्य रामचंद्र शुक्ल

(2) 'अंधी चमारिन' कौन सी विधा है ( )

(क) कहानी (ख) रेखाचित्र

(ग) आत्कथा (घ) यात्रावृतांत

(3) कसिया की पुत्री का नाम क्या था ( )

(क) सुनिया (ख) सुनिता (ग)मुनिया(घ) गुड़िया

(।।) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

(1)बनारसी दास चतुर्वेदी का जन्म उत्तरप्रदेश के .....जिले में हुआ था।

(2)'अंधी चमारिन' ..... विधा की रचना है।

(3)बनारसी दास चतुर्वेदी ने 'विशाल भारत' छोड़ने के बाद ..... पत्र का सम्पादन किया।

(4) कसिया .....रेखाचित्र की पात्र है।

(5) कसिया, सुनिया की.....है।

3.8 : पठनीय पुस्तकें

1- रेखाचित्र-बनारसीदास चतुर्वेदी, भारतीय ज्ञानपीठ काशी।द्वितीय संस्करण, 1963

2- आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास -डॉ. बच्चन सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण 2006

3- हिन्दी साहित्य का इतिहास- सं. डॉ. नगेंद्र, डॉ. हरदयाल, मयूर पेपर बैक्स, नौयडा, संस्करण 2013

4- हिन्दी के श्रेष्ठ रेखाचित्र-सं. डॉ.चौथीराम यादव, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, संस्करण 2010

इकाई 4 : संस्मरण : तिब्बत की सीमा पर (राहुल सांकृत्यायन) की विवेचना

रूपरेखा

4.1 प्रस्तावना

4.2 उद्देश्य

4.3 मूल पाठ: संस्मरण: तिब्बत की सीमा पर (राहुल सांकृत्यायन) की विवेचना

4.3.1 'तिब्बत की सीमा पर' के लेखक का परिचय

4.3.2 'तिब्बत की सीमा पर': कथावस्तु

4.3.3 'तिब्बत की सीमा पर': प्रमुख पात्र/ पात्रों का चरित्र-चित्रण

4.3.4 'तिब्बत की सीमा पर': देश-काल चित्रण

4.3.5 'तिब्बत की सीमा पर': कथोपकथन

4.3.6 'तिब्बत की सीमा पर': भाषा सौष्ठव

4.3.7 'तिब्बत की सीमा पर': शैली

4.4 पाठ सार

4.5 पाठ की उपलब्धियाँ

4.6 शब्द संपदा

4.7 परीक्षार्थ प्रश्न

4.8 पठनीय पुस्तकें

4.1 प्रस्तावना

राहुल सांकृत्यायन कृत **"तिब्बत की सीमा पर"** में उन्होंने अपनी यात्रा के उद्देश्यों, अनुभवों और विचारों को साझा किया है। उन्होंने तिब्बत के भौगोलिक, सांस्कृतिक और धार्मिक पहलुओं का बारीकी से अध्ययन किया और यह बताया कि तिब्बत भारतीय संस्कृति, धर्म और इतिहास से गहरे रूप से जुड़ा हुआ है। वे तिब्बत की भिन्नता और रहस्यमय स्थिति को समझने के लिए वहाँ गए थे और इस यात्रा के दौरान उन्होंने बौद्ध धर्म, तिब्बती जीवन-शैली, और तिब्बत के सामाजिक ढांचे का गहरा अध्ययन किया। लेखक ने अपनी यात्रा के दौरान की कठिनाइयों, चुनौतियों, वहाँ के लोग, उनकी जीवनशैली और उनकी आस्थाओं के बारे में बताया। साथ ही, उन्होंने तिब्बत की सीमा पर भारतीय संस्कृति और धार्मिकता के गहरे प्रभाव को महसूस किया और इसे भारतीय समाज में समाहित करने का प्रयास किया। लेखक ने तिब्बत को एक "आध्यात्मिक भूमि" के रूप में चित्रित किया और इसके संबंध में भारतीय पाठकों को जागरूक करने का उद्देश्य रखा। उन्होंने

तिब्बत को भारत के लिए एक ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, और भौगोलिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण बताया। लेखक ने अपनी यात्रा को केवल भौतिक यात्रा नहीं, बल्कि एक मानसिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक यात्रा के रूप में प्रस्तुत किया। यह यात्रा और उसकी कहानी न केवल तिब्बत की सीमा के बारे में है, बल्कि यह भारतीय उपमहाद्वीप की सांस्कृतिक धरोहर और उसकी विविधताओं की गहरी समझ को भी दर्शाती है।

4.2 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप -

- राहुल सांकृत्यायन के जीवन और कृतित्व के बारे में जान सकेंगे।
- तिब्बत की संस्कृति और समाज से परिचित हो सकेंगे।
- भारत और तिब्बत के बीच ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंधों को उजागर कर सकेंगे।
- तिब्बत की भौगोलिक और प्राकृतिक विशेषताओं का विवरण पर प्रकाश डाल सकेंगे।
- तिब्बत में भारतीय सांस्कृतिक धरोहर का संरक्षण पर प्रकाश डाल सकेंगे।
- तिब्बत की धार्मिक और सांस्कृतिक समस्याओं पर ध्यान आकर्षित कर सकेंगे।
- सामाजिक, धार्मिक और दार्शनिक दृष्टिकोण में तिब्बत के योगदान को रेखांकित कर सकेंगे।

4.3 मूल पाठ: रेखाचित्र/संस्मरण: तिब्बत की सीमा पर (राहुल सांकृत्यायन) की विवेचना

"तिब्बत की सीमा पर" राहुल सांकृत्यायन द्वारा लिखित एक महत्वपूर्ण यात्रा संस्मरण है, जिसमें उन्होंने तिब्बत के उच्च पर्वतीय क्षेत्रों की यात्रा का वर्णन किया है। यह संस्मरण न केवल एक यात्रा वृत्तांत है, बल्कि यह एक गहन सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक अध्ययन भी प्रस्तुत करता है। लेखक ने अपनी इस यात्रा के दौरान तिब्बत की सीमा पर स्थित क्षेत्रों की संस्कृति, धर्म, जीवन शैली और भौगोलिक विशेषताओं का अध्ययन किया और उन्हें अपनी लेखनी में सटीकता से व्यक्त किया।

संस्मरण की प्रमुख विशेषताएँ:

1. **भौगोलिक और सांस्कृतिक संदर्भ:** राहुल सांकृत्यायन ने तिब्बत के भौगोलिक और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य को बहुत गहरे से समझने का प्रयास किया। उन्होंने तिब्बत की कठोर जलवायु, वहाँ की पर्वत श्रृंखलाओं और उबड़ - खाबड़ रास्तों का वर्णन किया है। इसके अलावा, तिब्बती समाज और संस्कृति की विविधताओं को भी उन्होंने बारीकी से देखा। तिब्बत में बौद्ध धर्म का प्रभाव गहरा है और लेखक ने इस धर्म के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन किया, जिसमें ध्यान, साधना और तिब्बत के धार्मिक स्थलों का वर्णन किया।
2. **आध्यात्मिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण:** इस यात्रा के दौरान लेखक ने तिब्बत के धार्मिक जीवन को एक अद्‌भुत गहराई से महसूस किया। तिब्बत के बौद्ध मठों और तिब्बतियों के

धार्मिक अनुष्ठानों में उन्होंने भारतीय संस्कृति की छाप देखी, खासकर उन विचारों की जो भारत से तिब्बत पहुंचे थे। इस यात्रा ने उन्हें यह समझने में मदद की कि तिब्बत का आध्यात्मिक जीवन और भारतीय दर्शन एक-दूसरे से किस प्रकार जुड़े हुए हैं। लेखक ने अपनी लेखनी में इसे जोड़ते हुए तिब्बत के धार्मिक जीवन की गहरी समझ बनाई।

3. **सांस्कृतिक बंधन और भारत-तिब्बत संबंध:** राहुल सांकृत्यायन ने यह भी बताया कि भारत और तिब्बत के बीच ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंध कितने गहरे रहे हैं। दोनों देशों के बीच व्यापारिक, सांस्कृतिक और धार्मिक आदान-प्रदान के उदाहरण प्रस्तुत किए। उन्होंने तिब्बत के विभिन्न पहलुओं का वर्णन करते हुए भारतीय और तिब्बती सभ्यताओं के बीच की समानताओं और भिन्नताओं को उजागर किया।
4. **दैनिक जीवन और सामाजिक संरचना:** सांकृत्यायन ने तिब्बत में रहने वाले लोगों की दैनिक जीवनशैली का भी विस्तृत वर्णन किया है। उन्होंने तिब्बतियों के जीवन में उनके पारंपरिक रीति-रिवाजों, धार्मिक अनुष्ठानों और उनकी दिनचर्या का उल्लेख किया। इसके साथ ही, तिब्बत के किसानों, व्यापारियों और साधुओं की सामाजिक स्थिति और उनके संघर्षों को भी अपने लेखन में स्थान दिया। सांकृत्यायन ने तिब्बती समाज के आंतरिक संघर्षों और तंत्र की बारीकियों का भी विश्लेषण किया।
5. **भारत की राजनीतिक स्थिति पर प्रभाव:** राहुल सांकृत्यायन ने अपनी यात्रा के दौरान यह महसूस किया कि तिब्बत और भारत की सीमाएँ केवल भौगोलिक दृष्टिकोण से नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और राजनीतिक दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने इस यात्रा में भारत और तिब्बत के बीच के संबंधों को एक नए दृष्टिकोण से समझा और यह भी माना कि तिब्बत भारतीय संस्कृति का अभिन्न हिस्सा है। उनका यह दृष्टिकोण भारत और तिब्बत के बीच के रिश्तों की एक नई समझ प्रदान करता है।

संस्मरण का महत्व:

- **यात्रा का उद्देश्य और शोध:** राहुल सांकृत्यायन की तिब्बत यात्रा केवल एक पर्यटक यात्रा नहीं थी, बल्कि यह एक गहन शोध यात्रा थी। वे न केवल तिब्बत की प्राकृतिक सुंदरता और सांस्कृतिक धरोहर का अध्ययन कर रहे थे, बल्कि वे तिब्बत के धार्मिक जीवन और सामाजिक संरचना का भी अध्ययन कर रहे थे।
- **साहित्यिक शैली:** राहुल सांकृत्यायन ने अपनी लेखनी में बहुत सरल, रोचक और बोधगम्य भाषा का उपयोग किया। उन्होंने संस्मरण में अपनी यात्रा के अनुभवों को न केवल स्पष्ट रूप से व्यक्त किया, बल्कि उन्होंने तिब्बत के प्राकृतिक सौंदर्य और जीवन की जटिलताओं को भी प्रभावशाली तरीके से चित्रित किया। उनकी लेखनी में एक गहरी संवेदनशीलता और यात्रा के प्रति सच्ची रुचि दिखाई देती है।

- **तिब्बत का आध्यात्मिक महत्व:** राहुल सांकृत्यायन ने तिब्बत की यात्रा को आध्यात्मिक दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण माना और इसे भारतीय बौद्ध धर्म और संस्कृति के अध्ययन के रूप में देखा। उन्होंने तिब्बत के बौद्ध मठों, साधुओं और धार्मिक अनुष्ठानों के माध्यम से भारतीय धर्म और संस्कृति की गहरी समझ को उजागर किया।

4.3.1 'तिब्बत की सीमा पर' के लेखक का परिचय

राहुल सांकृत्यायन (9 अप्रैल 1893-14 अप्रैल 1963) हिन्दी साहित्य के एक महान लेखक, दार्शनिक, इतिहासकार और यात्रा वृत्तांत लेखक थे। उन्हें "यात्रा साहित्य का पुरोधा" और "हिन्दी यात्रा वृत्तांतों के सम्राट" के रूप में जाना जाता है। उनका जीवन साहित्य, दर्शन और संस्कृति के प्रति गहरी रुचि का प्रतीक था। उन्होंने भारतीय समाज, संस्कृति, धर्म, और इतिहास पर गहरे विचार किए और इन्हें अपनी रचनाओं में समाहित किया। उनका जन्म 9 अप्रैल 1893 को उत्तर प्रदेश के आज़मगढ़ जिले के एक छोटे से गाँव 'लमही' में हुआ था। उनका असली नाम कृष्ण देव मिश्र था। वे एक मध्यम वर्गीय ब्राह्मण परिवार में जन्मे थे, लेकिन उनका झुकाव बचपन से ही साहित्य और दर्शन की ओर था। राहुल ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा गाँव के स्कूल में प्राप्त की और बाद में काशी और अन्य स्थानों से उच्च शिक्षा प्राप्त की। उनका जीवन बहुत ही असाधारण था। युवावस्था में ही उन्होंने संन्यास लेने का निर्णय लिया और वे भारतीय संत परंपरा में गहरे रूप से रुचि रखने लगे। उन्होंने महात्मा बुद्ध और बौद्ध धर्म के बारे में गहरी अध्ययन और शोध की। वे बौद्ध धर्म के सिद्धांतों के प्रति आकर्षित थे और उन्होंने तिब्बत, नेपाल और अन्य देशों में जाकर बौद्ध धर्म के बारे में अध्ययन किया।

राहुल सांकृत्यायन का साहित्यिक योगदान अत्यधिक विविध और बहुआयामी था। उन्होंने न केवल यात्रा वृत्तांत लिखे, बल्कि दर्शन, समाजशास्त्र, इतिहास, साहित्य, और धर्म पर भी गहरे विचार किए। उनकी प्रमुख कृतियों में निम्नलिखित शामिल हैं:

कहानी : सप्तमी के बच्चे, वोल्गा से गंगा, बहुरंगी मधुपुरी, कनैला की कथा।

उपन्यास : बाईसवी सदी, जीने के लिए, सिंह सेनापति, जय यौधेय, भागो नहीं दुनिया को बादलों, मधुर स्वप्न, राजस्थान निवास, विस्मृत यात्री, दिवोदास, सप्तसिंधु।

यात्रा वृतांत : मेरे जीवन यात्रा, मेरी लद्दाख यात्रा, किन्नर प्रदेश में, रूस में 25 मास , यूरोप यात्रा।

जीवनी : सरदार पृथ्वी सिंह, नए भारत के नए नेता, बचपन की स्मृतियाँ, अतीत से वर्तमान, स्टालिन, लेनिन, कार्ल मार्क्स, माओ-त्से-तुंग, घुमक्कड़ स्वामी, असहयोग के मेरे साथी, जिनका मैं कृतज्ञ, वीर चंदरसिंघ गढ़वाली, सिंहल घुमक्कड़ जयवर्धन, कप्तान लाल, सिंहल के वीर पुरुष, महामानव बुद्ध।

यात्रा साहित्य : लंका, जापान, ईरान, किन्नर देश की ओर, चीन में क्या देखा, मेरी लद्दाख यात्रा, मेरी तिब्बत यात्रा, तिब्बत में सवा वर्ष, रूस के पच्चीस म्आस, विश्व की रूपरेखा, ल्हासा की ओर, शांतिनिकेतन में।

राहुल सांकृत्यायन एक महान समाजवादी और स्वतंत्रता सेनानी भी थे। उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया और भारतीय समाज के सुधार के लिए कई कार्य किए। उनके विचारों में समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता और मानवता की भावना प्रमुख थी। वे भारतीय समाज में व्याप्त रूढ़िवादिता और असमानता के खिलाफ थे और उन्होंने इसे अपनी रचनाओं में उजागर किया। उनका निधन 14 जून 1963 को हुआ। उनका योगदान न केवल साहित्यिक दृष्टि से, बल्कि भारतीय समाज और संस्कृति को समझने के संदर्भ में भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। उनकी रचनाएँ आज भी प्रासंगिक हैं और उनकी सोच ने कई पीढ़ियों को प्रेरित किया है। उनका जीवन और उनका साहित्य भारतीय समाज की गहरी समझ और विकास में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। वे न केवल एक लेखक, बल्कि एक चिंतक, दार्शनिक और समाज सुधारक थे, जिन्होंने भारतीय समाज को एक नई दिशा देने का प्रयास किया।

बोध प्रश्न

- राहुल सांकृत्यायन का जन्म कहाँ हुआ था?
- राहुल सांकृत्यायन का वास्तविक नाम क्या हैं?
- राहुल सांकृत्यायन को किन नामों से पुकारा जाता हैं?
- राहुल सांकृत्यायन की रचनाओं के नाम बताएँ।

4.3.2 तिब्बत की सीमा पर: कथावस्तु

प्रस्तुत यात्रा संस्मरण में लेखक ने अपने तिब्बत यात्रा का वर्णन किया हैं। इसमें पहाड़ी इलाके का बारीकी से चित्रण किया हैं। पाठक इसे सिर्फ पढ़ता ही नहीं हैं बल्कि पढ़ते-पढ़ते सारी जोत के दर्शन भी कर लेता हैं। रास्ते में आने वाली कठिनाइयाँ उन्हें महसूस करते हुए वापस आना यही इस यात्रा साहित्य की विशेषता हैं। लेखक लद्दाख के तहसीलदार की मदद से एक चपरासी गंगाराम को लेकर खरडोंग की ओर घोड़े पर सवार होकर चल पड़ते हैं। रात के दो बजे ही यात्रा के लिए निकल पड़ते हैं। सर्दी ऐसी की शरीर को कोई भी अंग बिना ऊनी कपड़े के खुला नहीं छोड़ा जा सकता हैं। दिन में यात्रा करना कठिन हैं क्योंकि बर्फ की पिघलने पर घोड़ों के पैर उसमें धँसने लगते हैं। 14000 फुट की चढ़ाई पर चढ़ना यानि आटे दाल का भाव मालूम पड़ना। लेखक लिखते भी हैं कि यदि घोड़े पर न होते तो आटा चावल का भाव मालूम पड़ जाता। ऐसी चढ़ाई पर घोड़ों को भी कठिनाई हो रही थी वो भी हाँफ रहे थे और जगह - जगह रुक जाते थे। कश्मीर की यात्रा करने के कारण लेखक को पहाड़ी इलाके की सर्दी का पूरा एहसास था। 18000 फुट ऊपर खरडोंग का जोत तिब्बत के कठिन जोतों में से एक माना जाता हैं। पहले लेखक ने वहाँ पहुंचकर लद्दाखी लोगों से बातचीत की। थोड़ा विश्राम कर बिना घोड़ों के ही नीचे उतरना आरंभ किया। तब ज्ञात हुआ की उतराई चढ़ाई से भी ज्यादा कठिन हैं। आगे चलकर उन्हें शियोक नदी

मिली जो सिंधु नदी की ही दो प्रधान धाराओं में से एक हैं। यह शियोक की उपत्यका हैं। शियोक के आगे एक गाँव में रात गुजरते हैं। दूसरे दिन लेखक रिहोड़ लामा से मिलकर जोत की तरफ चल पड़ते हैं, यह जोत भी खरडोंग की तरह बहुत ऊंचा हैं। यहाँ लोग तिब्बती भाषा में बोल रहे हैं। सत्तू भर की खेती कर लेते हैं इन सभी का गुजारा भेड़, याक के दूध और माँस से होता हैं। इसके उपरांत दो उपत्यकाएँ छोटे से तालाब को अपना जल विभाजक बनाती थी। मन् -पङ्ग-गोङ- झील के पास उपत्यका टेढ़ी-मेढ़ी हो गई और ऊपर चढ़ने के बाद छोटी मटर दिखलाई पड़ी। 14000 फुट से ऊपर भी खेती हैं और यह एक उदाहरण है कि लद्दाखी लोग जोत को देवता का प्रताप समझते हैं। एक रात ठहरकर लेखक दूसरे दिन फिर एक नई जोत की तरफ चल पड़े। लद्दाख के कुत्ते बहुत ही बड़े और खूंखार होते हैं। घोड़े पर बैठी सवारी का भी शिकार कर बैठते हैं। खास तौर से चांग-थाँग के कुत्ते हमला करते हैं। लेखक ने यही स्त्री पुरुष को स्वतंत्र विचरण करते हुए देखा तो उनके मन में भी स्वच्छन्द विचरण के भाव जाग उठे। वो कहते हैं कि "क्या ही अच्छा होता कि मैं भी इसी तरह कुछ भेड़ों, एक दो गदहों और एक तिब्बती तरुणी के साथ एक जगह से दूसरी जगह घूमता फिरता। जहाँ मन आता वहाँ तंबू लगता। तरुणी और मैं मिलकर गदहों और भेड़ों से सामान उतारते। दो बड़े कुत्ते हमारी चीजों की रखवाली करते। तरुणी चाय बनाती फिर उस निरवृक्ष नंगी पर्वत उपत्यका में हम दोनों एक निर्द्वंद्ध विचित्र सा जीवन बिताते।" लेखक की ईमानदारी को भी जान लेना आवश्यक हैं, वो इस बात को बखूबी जानते हैं कि यह भाव मात्र एक लालसा हैं और जीवन में कितनी लालसाएँ वक्त बेवक्त उठती हैं लेकिन उनमें से कितनी पूरी होती हैं। यह तो वक्त पर छोड़ना ही उचित होगा। वो कहते हैं। "क्या लालसा मात्र से जीवन को बढ़ाया जा सकता हैं? यह समझने पर भी मेरी लालसा दबी नहीं। उसने एक कोने में स्थायी स्थान ग्रहण किया। " यहाँ से लेखक बुशहर रियासत की ओर बढ़े। गंगाराम और उसके साथी यहाँ लेह लौट गए। इन दिनों के कई अच्छे बुरे अनुभवों के साथ लेखक आगे बढ़ गए। पिस्सुओं का आक्रमण सहन करते हुए लेखक रारंग जोत की ओर बढ़े। दरअसल रारंग एक गाँव का नाम हैं। यहाँ गाँव के मुखिया से लेकर अन्य लोगों से भी मिले और रात भर रुके। लेकिन स्वागत के मामले में बड़ा रूखा था, पानी को भी न पूछा। लेखक ने इस गाँव का नया नामकरण कर दिया और भरिया जो जात से लौहार था, के साथ यह कहते हुए की मैं इस स्वागतशून्य गाँव में नहीं रहूँगा और यहाँ से चल पड़ूँगा।" कहकर निकाल पड़ते हैं। यह इलाका थोड़ा गरम था और ऊपर से नीचे 1000 फुट तक 80 डिग्री के झुकाव पर करीब-करीब धूल और छोटे पत्तों की एक धार गिर रही थी। लेखक अचंभित थे किन्तु भरिया कूद-कूद कर निकल रहा था। एक और दृश्य लेखक को चौंकानेवाला मिला जब भरिया रस्सी के सहारे नदी के ऊपर से इस ओर से दूसरी ओर गया। धूलि की नदी को लेखक ने तार के सहारे पार किया। इसके उपरांत लेखक कन्नौर जो किन्नर का अपभ्रंश हैं वहाँ पहुंचे। यहाँ देवदार के वृक्ष और हरियाली को देखकर में को शांति मिली। फिर हिमालय से होते हुए सुमनम् से कनम्, चिमाँ, सराहन, रामपुर, कोटगढ़, शिमला, मेरठ से होते हुए अपने गाँव छपरा चले गए।

लेखक ने अपने अनुभवों को इस तरह से प्रस्तुत किया हैं कि इसे ऐसे प्रस्तुत किया हैं कि पाठक ना चाहते हुए भी मन ही मन आरंभ कर देते हैं। यही पर यात्रा साहित्य का उद्देश्य पूर्ण हो

जाता हैं। इसकी विशेषता हैं कि लेखक ने पहाड़ी मार्गों का वर्णन कर जहाँ एक ओर पाठकों के रोंगटे खड़े कर दिए हैं वही दूसरी ओर ऊंचाई पर चढ़ते हुए जानवरों के फेफड़ों की स्थिति को भी बताया हैं।

बोध प्रश्न

- लेखक ने किसके साथ अपनी खरडोंग की यात्रा प्रारंभ की थी?
- लेखक रात के दो बजे ही क्यों अपनी यात्रा प्रारंभ करते हैं?
- लेखक ने कौन से कुत्तों के हमले के बारे में बताया?

4.3.3 तिब्बत की सीमा पर: प्रमुख पात्र/ पात्रों का चरित्र-चित्रण

"तिब्बत की सीमा पार" राहुल सांकृत्यायन द्वारा रचित यात्रा वृत्तांत में कोई एकल कहानी या प्रमुख पात्र नहीं हैं, क्योंकि यह एक यात्रा वृत्तांत है, जिसमें लेखक अपनी यात्रा के अनुभवों और वहां के विभिन्न लोगों से मिलते हैं। इस पुस्तक में कोई काल्पनिक पात्र नहीं हैं, बल्कि लेखक ने अपनी यात्रा के दौरान तिब्बत के वास्तविक स्थानों और वहाँ के व्यक्तियों का वर्णन किया है। हालांकि, कुछ महत्वपूर्ण पात्र और तत्व जो पुस्तक में उभरकर आते हैं, वे इस प्रकार हैं:

1.राहुल सांकृत्यायन (लेखक और मुख्य पात्र):

- **राहुल सांकृत्यायन** स्वयं इस काव्यात्मक यात्रा वृत्तांत के मुख्य पात्र हैं। उनका व्यक्तित्व इस यात्रा का केंद्र है, क्योंकि वे तिब्बत के सांस्कृतिक, सामाजिक, धार्मिक, और भौगोलिक पहलुओं का अवलोकन करते हैं। लेखक ने अपनी यात्रा के दौरान वहाँ के लोगों और उनके जीवन को अपनी लेखनी के माध्यम से सामने रखा है। लेखक का उद्देश्य तिब्बत की वास्तविकता को समझना और भारतीय समाज से उसके संबंधों को उजागर करना था।

2. तिब्बती लोग:

- पुस्तक में तिब्बत के विभिन्न क्षेत्रों के लोग, जैसे कि **लामा** (तिब्बती बौद्ध भिक्षु), **खोमिन (खाती)**, और अन्य **स्थानीय निवासी** महत्वपूर्ण पात्र हैं। ये लोग तिब्बत के सामाजिक और धार्मिक जीवन का प्रतिनिधित्व करते हैं। सांकृत्यायन ने उनके जीवन के रीति-रिवाज, धार्मिक अनुष्ठान और पारंपरिक गतिविधियों को विस्तार से दर्ज किया है।

3. तिब्बती धार्मिक नेता और लामा:

- तिब्बत में बौद्ध धर्म का महत्वपूर्ण स्थान है और वहाँ के धार्मिक नेताओं या **लामा** का समाज में बड़ा प्रभाव होता है। सांकृत्यायन ने पुस्तक में तिब्बती बौद्ध धर्म के धार्मिक कार्यों और उनकी दिनचर्या का उल्लेख किया है, जिसमें लामा एक केंद्रीय भूमिका में हैं।

4. भारतीय और तिब्बती सीमा पर स्थित सैनिक:

- सांकृत्यायन की यात्रा के दौरान भारतीय और तिब्बती सीमा पर तैनात सैनिकों का भी उल्लेख मिलता है। वे इस क्षेत्र में तिब्बत और भारत के बीच सीमा रेखा की रक्षा करने के लिए तैनात थे। ये सैनिक कभी-कभी लेखक के लिए मार्गदर्शक या सहायक की भूमिका निभाते हैं।

5. स्थानीय व्यापारियों और रहवासी:

- सांकृत्यायन ने तिब्बत के व्यापारिक केंद्रों और कस्बों में रहने वाले व्यापारियों और अन्य आम लोगों से मुलाकात की थी। इन लोगों से बातचीत के दौरान, उन्होंने तिब्बत की पारंपरिक आर्थिक व्यवस्था, जीवन शैली, और व्यापारिक नेटवर्क के बारे में जानकारी प्राप्त की।

बोध प्रश्न

- राहुल सांकृत्यायन का परिचय दीजिए।
- तिब्बती लोगों का परिचय दीजिए?

4.3.4 तिब्बत की सीमा पर: देश काल चित्रण

राहुल सांकृत्यायन की **"तिब्बत की सीमा पर"** में तिब्बत और उसके आस-पास के क्षेत्रों का **देशकाल चित्रण** बहुत महत्वपूर्ण है। यह कृति न केवल तिब्बत की भौगोलिक स्थिति और प्राकृतिक परिवेश का वर्णन करती है, बल्कि यह उस समय के सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक परिप्रेक्ष्य को भी उजागर करती है। पुस्तक में लेखक ने तिब्बत के जीवन, वहाँ के समय और स्थान की स्थिति का बहुत ही विस्तार से चित्रण किया है, जो पाठकों को तिब्बत के वातावरण का यथार्थ अनुभव कराता है।

1. देश का भौगोलिक चित्रण: तिब्बत का भूगोल इसमें प्रमुख रूप से चित्रित किया गया है। लेखक ने तिब्बत को ऊँचाई पर स्थित एक कठोर और बीहड़ क्षेत्र के रूप में प्रस्तुत किया है, जहाँ पहाड़ों की ऊँचाई, बर्फ से ढकी धरती और कठिन जलवायु ने जीवन को बहुत चुनौतीपूर्ण बना दिया है। तिब्बत के प्राचीन हिमालय पर्वत, ऊँचाई पर स्थित पठार, बर्फीली हवाएँ और कठिन रास्ते इसका हिस्सा रहे हैं। लेखक ने तिब्बत की भौगोलिक स्थितियों का बहुत ही स्पष्ट रूप से वर्णन किया है जिससे पाठकों को उस क्षेत्र के कठोर और ठंडे वातावरण का सटीक आभास होता है। इसके अलावा, लेखक ने उस समय की तिब्बत की प्राकृतिक सुंदरता, जैसे वहाँ की झीलें, नदियाँ और बर्फ से ढकी चोटी का भी जिक्र किया है।

2. तिब्बत का समय (काल) चित्रण: "तिब्बत की सीमा पर" की यात्रा, लेखक ने 1930-40 के दशक में की थी, जब तिब्बत की राजनीतिक स्थिति और समाज में कई बदलाव आ रहे थे। उस समय तिब्बत पर चीन का प्रभाव बढ़ने लगा था और यह राजनीतिक परिवर्तन तिब्बत की संस्कृति

और जीवनशैली को प्रभावित कर रहा था। लेखक ने इस समय की तिब्बत की स्थिति का सटीक चित्रण किया है। उन्होंने तिब्बत के धार्मिक जीवन, वहां के बौद्ध मठों, साधकों के जीवन और तिब्बतियों की जीवनशैली को उसी समय की परिस्थितियों के संदर्भ में प्रस्तुत किया है। तिब्बत के धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन में भारतीय प्रभाव भी स्पष्ट था, विशेषकर बौद्ध धर्म के माध्यम से। हालांकि, इस समय तिब्बत में राजनीतिक और सामाजिक तनाव था और वहाँ के लोग कठिन परिस्थितियों में जीवन जीने के लिए संघर्ष कर रहे थे। लेखक ने इस कालखंड में तिब्बत के जीवन को समझने के लिए गहरे सामाजिक और राजनीतिक दृष्टिकोण से उसका विश्लेषण किया है।

3. तिब्बत का सांस्कृतिक और धार्मिक परिप्रेक्ष्य: लेखक ने तिब्बत के सांस्कृतिक जीवन का चित्रण करते हुए बताया है कि तिब्बत की धार्मिक परंपराएँ भारतीय संस्कृति और बौद्ध धर्म से गहरे रूप से जुड़ी हुई हैं। तिब्बत में बौद्ध धर्म का महत्वपूर्ण स्थान था, और भारतीय बौद्ध साधकों और भिक्षुओं का प्रभाव यहाँ के धार्मिक जीवन पर स्पष्ट रूप से दिखता था। लेखक ने तिब्बत के मठों, धार्मिक अनुष्ठानों, और वहां के साधकों के जीवन का बहुत ही सूक्ष्म रूप से वर्णन किया है। उन्होंने यह भी बताया है कि किस प्रकार तिब्बत के लोग अपने धार्मिक विश्वासों में गहरे समाहित थे, और उनका जीवन पूरी तरह से उनके धर्म और आस्था से प्रेरित था।

4. तिब्बत की कठिनाइयाँ और जीवन की जटिलताएँ: तिब्बत का जीवन अत्यधिक कठिन था, और इस यात्रा संस्मरण में लेखक ने इस कठिनाई का भी उल्लेख किया है। तिब्बत के लोग, जो उच्च पर्वतीय क्षेत्रों में रहते थे, शारीरिक और मानसिक दोनों रूपों में कठोर परिस्थितियों से जूझते थे। वहां की जलवायु, भूगोल, और जीवन की जटिलताएँ उन लोगों के लिए एक चुनौती थी। फिर भी, तिब्बतियों का जीवन एक प्रकार की आत्मनिर्भरता और आस्था से भरा हुआ था। लेखक ने इन कठिन परिस्थितियों में तिब्बतियों की जीवनशैली, उनके संघर्ष और उनके अस्तित्व के प्रति आस्था को विस्तार से चित्रित किया है।

5.तिब्बत का राजनीतिक और सामाजिक परिप्रेक्ष्य: तिब्बत में लेखक ने उस समय की राजनीतिक और सामाजिक स्थिति का भी चित्रण किया। उस समय तिब्बत की राजनीति में महत्वपूर्ण बदलाव हो रहे थे, खासकर तिब्बत और चीन के संबंधों में। लेखक ने तिब्बत की स्वतंत्रता की ओर इशारा किया और यह बताया कि कैसे तिब्बत की आंतरिक राजनीति और बाहरी शक्तियों के दबावों के कारण तिब्बत के जीवन में बदलाव आ रहे थे। इस समय तिब्बत के धर्मगुरु और राजनीतिक नेता अपनी परंपराओं और संस्कृति को बचाने के लिए संघर्ष कर रहे थे। लेखक ने तिब्बत के राजनीतिक परिप्रेक्ष्य को बहुत सूक्ष्म रूप से प्रस्तुत किया और चीन के प्रभाव के संदर्भ में तिब्बत की भविष्यवाणी की।

बोध प्रश्न

- तिब्बत का प्राकृतिक चित्रण कीजिए।
- तिब्बतीयों की कठिनाइयों का वर्णन कीजिए।

4.3.5 'तिब्बत की सीमा पर': कथोपकथन

राहुल सांकृत्यायन की **"तिब्बत के सीमा पर"** तिब्बत की यात्रा के अनुभवों का वृत्तांत है। राहुल सांकृत्यायन ने तिब्बत और उसके आस-पास के क्षेत्रों में अपनी यात्रा के दौरान जो कुछ देखा और अनुभव किया, उसे प्रस्तुत किया है।

कथोपकथन (या संवाद) का संदर्भ शायद उस विशेष संवाद या बातचीत से है जो राहुल सांकृत्यायन ने तिब्बत में विभिन्न व्यक्तियों और संस्कृतियों के साथ की थी। यह संवाद न केवल उनके व्यक्तिगत अनुभवों को दर्शाता है, बल्कि तिब्बत और आसपास के क्षेत्रों के सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक जीवन को भी उजागर करता है। उनकी इस यात्रा में तिब्बत की भौगोलिक विशेषताएँ, वहाँ के लोग, उनके रीति-रिवाज, और खासतौर पर तिब्बत के बौद्ध धर्म से जुड़ी परंपराओं का गहरा अध्ययन किया गया है। उनके द्वारा किए गए संवाद में उन्होंने वहाँ के साधुओं, बौद्ध भिक्षुओं और आम नागरिकों से संवाद स्थापित किया, जिससे उन्हें तिब्बत के समाज, संस्कृति और धर्म को समझने का अवसर मिला।

"तिब्बत के सीमा पर", न केवल एक यात्रा वृत्तांत हैं, बल्कि वे उस समय के भारत और एशिया के बीच सांस्कृतिक और बौद्धिक संबंधों की भी जानकारी देती हैं। **कथोपकथन** का मतलब इस संदर्भ में उन वार्तालापों से हो सकता है जो उन्होंने यात्रा के दौरान तिब्बत में किए, जिससे पाठकों को वहां के जीवन, दर्शन, और धार्मिक आस्थाओं के बारे में गहरी समझ मिली।

4.3.6 तिब्बत की सीमा पर: भाषा सौष्ठव

राहुल सांकृत्यायन की "तिब्बत की सीमा पर" की भाषा शैली की विशेषता उसकी स्पष्टता, सहजता और शुद्धता में निहित है। उन्होंने यात्रा वृत्तांत के रूप में अपने अनुभवों और विचारों को इस प्रकार प्रस्तुत किया है कि वह पाठकों को न केवल तिब्बत की भौगोलिक, सांस्कृतिक और धार्मिक विशेषताओं से परिचित कराते हैं, बल्कि उनके व्यक्तित्व और दृष्टिकोण को भी उद्घाटित करते हैं। इसमें भाषा का सौष्ठव (उच्चतम स्तर की भाषा और सौंदर्य) को निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता है:

1. सरल और प्रवाहमयी भाषा: राहुल सांकृत्यायन की लेखनी सरल, सहज और प्रवाहमयी है, जिससे पाठक आसानी से उनके विचारों को समझ सकते हैं। उन्होंने कठिन शब्दों और जटिल वाक्य संरचनाओं से बचते हुए एक ऐसी भाषा का उपयोग किया, जो किसी भी पाठक के लिए

सुलभ हो। इस पुस्तक में लेखक ने अपनी यात्रा के अनुभवों को अत्यंत सादगी और प्रवाह के साथ व्यक्त किया है, जिससे पुस्तक का संदेश सहजता से पाठक तक पहुंचता है।

2. चित्रात्मक और दृश्यात्मक भाषा: सांकृत्यायन की भाषा में गहरी दृश्यात्मकता और चित्रात्मकता है। वे अपनी शब्दावली का इस्तेमाल ऐसे करते हैं कि पाठक तिब्बत की भौगोलिक परिस्थितियों और वहां के प्राकृतिक सौंदर्य को महसूस कर सके। उनकी भाषा में एक प्रकार का चित्रण होता है जो पाठक को स्थलों, वातावरण और जीवनशैली के बारे में पूरी तरह से जागरूक करता है। उदाहरण: "धूप चढ़ने पर बर्फ के नरम होने से आदमियों और जानवरों के पैर धँसने लगते हैं और उनके दरार में फंस जाने का दर रहता हैं। साथ ही आस पास की ऊंची जगहों में लाखों मन की हिमानियों के गिरने का दर भी रहता हैं।"

3. भावनात्मक और संवेदनात्मक भाषा : लेखक ने न केवल भौतिक स्थल और घटनाओं का वर्णन किया, बल्कि उन्होंने यात्रा के दौरान अपनी भावनाओं और संवेदनाओं को भी व्यक्त किया है। वे अपने अनुभवों को इस प्रकार प्रस्तुत करते हैं कि पाठक उनकी भावनाओं और मानसिक स्थिति को समझ सके। इस प्रकार की भाषा में संवेदनशीलता और गहरी सोच का समावेश होता है, जो पाठक को एक मानसिक और भावनात्मक यात्रा पर ले जाता है। उदाहरण: ""जानवरों के कष्ट को देखकर हम उन्हें अपने मन से चलने देते थे।" यह वाक्य लेखक की आंतरिक भावनाओं और तिब्बत के माहौल से उनकी संवेदनाओं को बहुत ही प्रभावी तरीके से व्यक्त करता है।

4. विवेचनात्मक और आलोचनात्मक भाषा: सांकृत्यायन ने तिब्बत के धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक पहलुओं पर गहरी विचारशीलता के साथ विचार किए हैं। उन्होंने तिब्बत की आस्थाओं, रीति-रिवाजों और जीवनशैली का विवेचनात्मक रूप से विश्लेषण किया है, जिससे पाठक को तिब्बत के बारे में गहरी समझ मिलती है। उनके शब्दों में न केवल विवरण है, बल्कि उनके विचारों और आलोचनात्मक दृष्टिकोण का भी समावेश है। उदाहरण:

5. साहित्यिक और सांस्कृतिक संदर्भों का समावेश: सांकृत्यायन की भाषा में साहित्यिक और सांस्कृतिक संदर्भों का समावेश है, जो न केवल तिब्बत, बल्कि भारतीय संस्कृति, इतिहास और समाज की भी गहरी समझ प्रदान करता है। उन्होंने तिब्बत और भारत के बीच के सांस्कृतिक और धार्मिक संबंधों का स्पष्ट उल्लेख किया है, जिससे यह पुस्तक न केवल एक यात्रा वृत्तांत, बल्कि सांस्कृतिक अध्ययन भी बन जाती है। उदाहरण: "तिब्बत में बौद्ध धर्म का प्रभाव भारतीय संस्कृति के गहरे प्रभाव का प्रतीक है। यहां के लोग भारतीय संतों और ग्रंथों का आदर करते हैं।" यह वाक्य भारत और तिब्बत के बीच सांस्कृतिक संबंधों को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

बोध प्रश्न

- संस्मरण की भाषा का परिचय दीजिए।
- भाषा के कितने रूपों का चित्रण लेखक ने किया हैं।

4.3.7 तिब्बत की सीमा पर: शैली

राहुल सांकृत्यायन की "तिब्बत की सीमा पर" एक यात्रा वृत्तांत है, जो न केवल तिब्बत की भौगोलिक और सांस्कृतिक विशेषताओं को प्रस्तुत करता है, बल्कि इसके माध्यम से लेखक ने अपने विचारों, अनुभवों और विचारधारा को भी व्यक्त किया है। इस पुस्तक की शैली कई दृष्टिकोणों से विशिष्ट और प्रभावशाली है:

1. विवरणात्मक शैली: राहुल सांकृत्यायन ने अपनी यात्रा के अनुभवों को बहुत ही जीवंत और सजीव तरीके से प्रस्तुत किया है। तिब्बत के पर्वत, घाटियाँ, सर्द हवाएँ, और बर्फ से ढकी हुई ज़मीन का चित्रण उनकी वर्णनात्मक शैली का प्रमुख हिस्सा है। पाठक को लगता है जैसे वे स्वयं तिब्बत की यात्रा पर हैं। उनकी शैली में दृश्यात्मकता है, जिससे पाठक तिब्बत की भव्यता को अपनी आँखों से देख पाता है।

2. साहित्यिक और बौद्धिक शैली: राहुल सांकृत्यायन एक महान विचारक थे, और उनकी लेखनी में बौद्धिक गहराई और तर्कशीलता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। उन्होंने न केवल तिब्बत की प्राकृतिक सुंदरता का चित्रण किया, बल्कि वहाँ के धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन की व्याख्या भी की है। पुस्तक में बौद्ध धर्म, तिब्बती संस्कृति, और तिब्बत और भारत के ऐतिहासिक संबंधों पर विचार किए गए हैं। उनके विचारों में गहरी चिंतनशीलता है, जो एक लेखक के दार्शनिक दृष्टिकोण को स्पष्ट करती है।

3. आधिकारिक और शोधपरक शैली: राहुल सांकृत्यायन ने अपनी यात्रा के दौरान जितना अनुभव किया, उसे बारीकी से देखा और समझा। उनकी शैली में शोध का पहलू भी है, क्योंकि उन्होंने तिब्बत के समाज, संस्कृति, और धर्म के बारे में गहरी जानकारी प्राप्त की और उसे इस पुस्तक में दर्शाया। उनकी टिप्पणियाँ न केवल व्यक्तिगत अनुभवों पर आधारित हैं, बल्कि उन्होंने तिब्बत के इतिहास, संस्कृति और धर्म का विश्लेषण भी किया है।

4. संवादात्मक शैली: लेखक ने पुस्तक में तिब्बत के विभिन्न लामा, साधु, और अन्य स्थानीय लोगों से संवाद किया और उनके विचारों, विश्वासों और जीवन की शैली को प्रस्तुत किया है। इस संवादात्मक शैली से पाठक तिब्बत के धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन में और अधिक डूब जाता है। यह शैली यात्रा के अनुभव को अधिक जीवंत और सजीव बनाती है।

5. भावनात्मक और व्यक्तिगत शैली: राहुल सांकृत्यायन अपनी पुस्तक में अपनी व्यक्तिगत भावनाओं और विचारों को भी व्यक्त करते हैं। वे तिब्बत की यात्रा के दौरान खुद को एक नए दृष्टिकोण से देखते हैं और तिब्बत की आध्यात्मिकता और शांति से प्रभावित होते हैं। उनका

भावनात्मक पक्ष पुस्तक में परिलक्षित होता है, जिससे पाठक लेखक के साथ भावनात्मक रूप से जुड़ सकता है।

बोध प्रश्न

- संस्मरण की शैली का परिचय दीजिए।
- किस प्रकार की शैली में यात्रा संस्मरण को लिखा गया हैं?

4.4 पाठ सार

"तिब्बत की सीमा पर" की शुरुआत राहुल सांकृत्यायन की तिब्बत यात्रा से होती है। सांकृत्यायन ने तिब्बत के कठिन और बीहड़ रास्तों को पार किया और वहां के लोगों, उनके जीवन और उनके विश्वासों के बारे में जानकारी प्राप्त की। लेखक ने अपनी यात्रा के दौरान तिब्बत के धार्मिक स्थलों, बौद्ध मठों, और साधकों से संवाद किया, जिनके माध्यम से तिब्बत की सांस्कृतिक और धार्मिक स्थिति को समझने का अवसर मिला।

भौगोलिक और प्राकृतिक चित्रण: सांकृत्यायन ने तिब्बत के भौगोलिक वातावरण का विस्तृत चित्रण किया। तिब्बत के पर्वतीय इलाके, ऊँचे पठार, बर्फ से ढके रास्ते और वहां की जलवायु की कठिनाइयाँ उनके विवरण का प्रमुख हिस्सा हैं। उन्होंने तिब्बत के जीवन को इन कठोर भौगोलिक स्थितियों के बीच बसा हुआ पाया।

धार्मिक और सांस्कृतिक पहलू: सांकृत्यायन ने तिब्बत के बौद्ध धर्म और वहां के धार्मिक जीवन का गहन अध्ययन किया। उन्होंने तिब्बत के मठों और साधकों के जीवन के बारे में जानकारी दी। तिब्बत में भारतीय बौद्ध धर्म का गहरा प्रभाव था, और सांकृत्यायन ने इसे अपनी पुस्तक में प्रमुखता से प्रस्तुत किया। तिब्बतियों के जीवन का केंद्र उनकी आस्था और साधना रही है, जो लेखक के संवादों के माध्यम से पाठकों तक पहुँचती है।

सामाजिक स्थिति: तिब्बत की सामाजिक संरचना, वहां के लोगों का जीवन और उनकी कठिनाइयाँ भी सांकृत्यायन के लेखन का हिस्सा हैं। तिब्बत के लोग अपनी कठिन परिस्थितियों के बावजूद अपने धार्मिक विश्वासों में दृढ़ रहते हैं और आत्मनिर्भरता को अपनी ताकत मानते हैं। उन्होंने तिब्बत के समाज में व्याप्त पारंपरिक मूल्यों और आस्थाओं को भी अपनी यात्रा के दौरान देखा और समझा।

राजनीतिक संदर्भ: सांकृत्यायन ने तिब्बत के उस समय के राजनीतिक परिप्रेक्ष्य को भी विस्तार से प्रस्तुत किया। तिब्बत में चीन का प्रभाव बढ़ने लगा था और सांकृत्यायन ने इस समय के राजनीतिक संकट को महसूस किया। उन्होंने तिब्बत की स्वतंत्रता, चीन के बढ़ते प्रभाव, और तिब्बतियों की अपनी सांस्कृतिक पहचान बनाए रखने की चिंता को वर्णित किया।

भारत और तिब्बत के संबंध: भारतीय बौद्ध धर्म और तिब्बत के बीच के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंधों को सांकृत्यायन ने महत्वपूर्ण रूप से प्रस्तुत किया है। भारतीय संतों और बौद्ध धर्म के गुरुजनों का तिब्बत के धार्मिक जीवन पर गहरा प्रभाव था। यह पुस्तक इस सांस्कृतिक संबंध को भी उजागर करती है।

4.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष उपलब्ध हुए हैं –

1. राहुल सांकृत्यायन की रचना **"तिब्बत की सीमा पर"** को कई दृष्टिकोणों से एक महत्वपूर्ण यात्रा वृत्तांत अथवा संस्मरण है।
2. न केवल तिब्बत की यात्रा का वर्णन किया गया है, बल्कि इसमें तिब्बत की भौगोलिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, और सामाजिक स्थितियों का गहन विश्लेषण भी मिलता है।
3. संस्मरण में तिब्बत के बौद्ध धर्म, तिब्बती जीवन शैली, और धार्मिक साधनाओं का विस्तृत वर्णन किया गया है।
4. उसमें तिब्बत की धार्मिक संस्कृति और भारतीय संस्कृति के आपसी संबंधों को भी दर्शाया गया है।

4.6 शब्द संपदा

1. **बेगारवाले किसान :** वे किसान जो बेगार (शारीरिक श्रम के रूप में मुफ्त काम) करते हैं या जिनसे बिना किसी उचित मजदूरी या भुगतान के श्रम लिया जाता है।
2. **चतुष्पाद :** "चार पांवों वाला" या "चार टाँगों वाला"।
3. **लामा**: तिब्बती बौद्ध धर्म में उच्च स्तर के धर्मगुरु, जो साधना और शिक्षाओं के विशेषज्ञ होते हैं।
4. **मठ**: बौद्ध धर्म के साधकों का निवास स्थान, जहां पूजा-अर्चना और साधना की जाती है।
5. **उपत्यका :** "घाटी" या "वैली"। यह शब्द सामान्यतः पहाड़ी क्षेत्र में स्थित एक संकरे स्थान या नदी के किनारे की घाटी को दर्शाने के लिए प्रयोग किया जाता है।
6. **ध्यान**: ध्यान साधना, विशेष रूप से बौद्ध धर्म में मानसिक शांति और आत्म-चिंतन के लिए किया जाता है।
7. **साधक**: वह व्यक्ति जो किसी विशेष धार्मिक मार्ग पर चलता है, खासकर बौद्ध धर्म में ध्यान करने वाला व्यक्ति।
8. **पूजा**: धार्मिक अनुष्ठान, जिसमें देवताओं या अन्य पवित्र शक्तियों की उपासना की जाती है।

9. **पठार**: एक ऊंचा और समतल इलाका, विशेष रूप से पहाड़ी क्षेत्रों में।
10. **पर्वत श्रेणी**: पर्वतों की एक लंबी श्रृंखला, जैसे हिमालय या तिब्बती पर्वत क्षेत्र।
11. **बर्फीला**: बर्फ से ढका हुआ, ठंडी और बर्फीली जलवायु का वर्णन करने के लिए प्रयोग होता है।
12. **हिमनद**: एक बड़ी बर्फ की परत जो पर्वतों से नीचे की ओर बहती है और नदी का रूप लेती है।
13. **पार्वतीय**: पर्वतों से संबंधित, जैसे पार्वतीय जीवन या पार्वतीय क्षेत्र।
14. **चट्टान**: पर्वतीय इलाकों में पाया जाने वाला कठोर और ठोस खनिज पदार्थ।
15. **जलप्रपात**: पानी का एक झरना, जो पहाड़ी क्षेत्रों में पाया जाता है और बहुत सुंदर प्राकृतिक दृश्य प्रस्तुत करता है।
16. **उपोष्ण**: कम तापमान वाली जलवायु, जो बर्फीले क्षेत्रों में पाई जाती है।
17. **वातावरण**: वातावरण, जिस में तिब्बत के शीतल और बर्फीले इलाकों का वर्णन किया गया है।

4.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. तिब्बत की सीमा पर यात्रा संस्मरण की विशेषताएँ बताएँ
2. तिब्बत की सीमा पर की कथावस्तु पर प्रकाश डालिए।
3. तिब्बत की सीमा पर की भाषा शैली की विवेचना कीजिए
4. तिब्बत की सीमा पर के संवाद और देश काल वातावरण पर प्रकाश डालिए।

खंड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1.तिब्बत की सीमा पर लिखने के पीछे लेखक का क्या उद्देश्य हैं?
2.राहुल सांकृत्यायन का परिचय दीजिए।
3.तिब्बत की भोगोलिक परिवेश का परिचय दीजिए।
4.रारंग के लोगों की विशेषता बताइएं।
5.रात को दो बजे यात्रा प्रारंभ करने के पीछे का कारण क्या हैं?

खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए –

1. "तिब्बत की सीमा पर" पुस्तक के लेखक कौन हैं?

A) महात्मा गांधी B) पं. नेहरू C) राहुल सांकृत्यायन D) रमण महर्षि

सही उत्तर: C. राहुल सांकृत्यायन

2. "तिब्बत की सीमा पर" में लेखक किस देश के साथ तिब्बत की भौगोलिक सीमा का वर्णन करते हैं?

A) नेपाल B) भारत C) पाकिस्तान D) चीन

सही उत्तर: B. भारत

3. "तिब्बत की सीमा पर" में राहुल सांकृत्यायन ने किस क्षेत्र का यात्रा वर्णन किया है?

A) भारतीय उपमहाद्वीप B) तिब्बत C) नेपाल और भूटान D) पाकिस्तान

सही उत्तर: B. तिब्बत

4. "तिब्बत की सीमा पर" में राहुल सांकृत्यायन के यात्रा के प्रमुख उद्देश्य में से एक क्या था?

A) तिब्बत के राजनीतिक घटनाक्रम को समझना

B) तिब्बत के धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन का अध्ययन करना

C) तिब्बत के भूगोल का अध्ययन करना

D) तिब्बत के व्यापारिक संबंधों की समीक्षा करना

सही उत्तर: B) तिब्बत के धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन का अध्ययन करना

5. "तिब्बत की सीमा पर" में लेखक ने तिब्बत के किस पहलू पर विशेष ध्यान दिया?

A) तिब्बत का राजनीतिक इतिहास B) तिब्बत का भौगोलिक और सांस्कृतिक वर्णन

C) तिब्बत का आर्थिक विकास D) तिब्बत के नागरिकों का शासन

सही उत्तर: B) तिब्बत का भौगोलिक और सांस्कृतिक वर्णन

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

1. तिब्बत के क्षेत्र में प्रमुख नदी _____ है, जो भारत और तिब्बत के बीच जलस्रोत प्रदान करती है।

उत्तर: ब्रह्मपुत्र

2. तिब्बत का मुख्य धर्म _____ है, जो भारत के बौद्ध धर्म से जुड़ा हुआ है।

उत्तर: बौद्ध धर्म

3. तिब्बत की सीमा पर स्थित _____ (राज्य) भारत का ऐसा क्षेत्र है जहां से तिब्बती संस्कृति और बौद्ध धर्म का गहरा प्रभाव देखा जाता है।

उत्तर: लद्दाख

4. तिब्बत के बौद्ध धर्म के गुरु _____ को 1989 में शांति के नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

उत्तर: दलाई लामा

5. तिब्बत की सीमा पर स्थित _____ एक महत्वपूर्ण बौद्ध धार्मिक स्थल है, जो तिब्बतियों के लिए एक आस्थास्थल है।

उत्तर: ल्हासा

III. सुमेल कीजिए -

कॉलम A:	**कॉलम B:**
1. तिब्बत का प्रमुख धर्म	हिमालय
2. तिब्बत के धार्मिक केंद्र	ल्हासा
3. भारत और तिब्बत के बीच सबसे ऊंची सीमा	किन्नर का अपभ्रंश
4. ग्यगर डोरजे दन्	भारत बोध गया
5. कन्नोर	हिमालय

4.8 पठनीय पुस्तकें

1. हिन्दी के श्रेष्ठ रेखाचित्र - संपादक डॉ. चौथीराम यादव 2018
2. मेरी लद्दाख यात्रा - राहुल सांकृत्यायन 1926
3. मेरी तिब्बत यात्रा - राहुल सांकृत्यायन 1937
4. एशिया के दुर्गम भू खंड में - राहुल सांकृत्यायन 1956
5. आधुनिक हिन्दी गद्य साहित्य का विकास और विश्लेषण - विनेमोहन सिंह

इकाई 5 : रेखाचित्र : आदमी का बच्चा (हरिशंकर परसाई) की विवेचना

इकाई की रूपरेखा

5.1 प्रस्तावना
5.2 उद्देश्य
5.3 मूलपाठ : रेखाचित्र : आदमी का बच्चा (हरिशंकर परसाई) की विवेचना
5.3.1 विवेच्य रेखाचित्र के लेखक का परिचय
5.3.2 कथावस्तु
5.3.3 प्रमुख पात्र: पात्रों का चरित्र चित्रण
5.3.4 देश काल चित्रण
5.3.5 कथोपकथन
5.3.6 भाषा सौष्ठव
5.3.7 शैली
5.4 पाठ सार
5.5 पाठ की उपलब्धियाँ
5.6 शब्द संपदा
5.7 परीक्षार्थ प्रश्न
5.8 पठनीय पुस्तकें

5.1 : प्रस्तावना

जिस तरह आजादी के पहले के भारत को समझने के लिए प्रेमचंद को पढ़ना जरुरी है , वैसे ही आजादी के पहले पचास वर्षों को जानने के लिए हरिशंकर परसाई को पढ़ना ही काफी है। किसी और दौर में लिखी परसाई की हर चुटीली बात ऐसी लगती है मानो वह बिल्कुल ताज़ा हालात को देखकर लिखी गई है। आपने परसाई जी को यदि पहले भी पढ़ा है, या उनके बारे में कुछ सुना है तो आप यह सोचते होंगे कि वे अव्वल दर्जे के व्यंग्यकार हैं।**परसाई** ने व्यंग्य विधा को साहित्यिक प्रतिष्ठा प्रदान की। श्रेष्ठ व्यंग्यकार तो वे हैं हीं, निबंधकार, कहानीकार और रेखाचित्रकार भी वे श्रेष्ठ हैं। उनकी लघु कथात्मक रचनाओं -कहानियाँ, रेखाचित्र, रिपोर्ताज, संस्मरण आदि की तरफ हमारा ध्यान कम जाता है। रेखाचित्र (अंग्रेजी का 'स्कैच') , किसी व्यक्ति, वस्तु, घटना, या भाव का कम शब्दों में मर्मस्पर्शी और सजीव चित्रण करने की एक कला है। हमारे आसपास रहनेवाले बहुरंगी मानव-चरित्रों को केंद्र में रखकर लिखे गए परसाई जी के रेखाचित्र अपने पाठकों को समाज की रग-रग से वाक़िफ़ कराते हैं। परसाई ने रिक्शा चलाने वालों, पान की दूकान वालों, बीड़ी बनाने वालों, होटलों में काम करने वालों को अपना मान कर उन पर

लिखा है। इस कला की बानगी स्वरुप इस इकाई में आप हरिशंकर परसाई द्वारा लिखित एक रेखाचित्र पढ़ने जा रहे हैं। "आदमी का बच्चा " शीर्षक से लिखित यह रेखाचित्र आदमी के एक बच्चे का चित्र प्रस्तुत करता है। जग्गू नामक यह बच्चा कई अर्थों में 'आदमी' का बच्चा है।

5.3 मूल पाठ : रेखाचित्र : आदमी का बच्चा (हरिशंकर परसाई) की विवेचना

5.3.1 विवेच्य रेखाचित्र के लेखक का परिचय

हरिशंकर परसाई (22 अगस्त 1924 - 10 अगस्त 1995) हिन्दी साहित्य के प्रमुख व्यंग्यकार और कथाकार थे। उनका जन्म मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले के जमानी गांव में हुआ। उन्होंने नागपुर विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम.ए. की डिग्री प्राप्त की। कुछ सालों तक अध्यापन करने के बाद 1947 से वे लेखन में जुट गए। उन्होंने जबलपुर से 'वसुधा' नामक साहित्यिक पत्रिका निकाली। परसाई जी का जीवन सादगी और संघर्ष से भरा था। आर्थिक तंगी के बावजूद उन्होंने साहित्य सृजन जारी रखा। स्वयं अविवाहित रहते हुए अपने सभी भाई-बहनों की ज़िम्मेदारी का निर्वाह किया। वे अपनी स्पष्टवादिता और सामाजिक चेतना के लिए प्रसिद्ध हैं। हरिशंकर परसाई को उनकी उत्कृष्ट साहित्यिक सेवाओं के लिए अनेक पुरस्कार मिले, जिनमें साहित्य अकादमी पुरस्कार भी शामिल है। उन्हें यह पुरस्कार उनकी रचना 'विकलांग श्रद्धा का दौर' के लिए प्रदान किया गया।

उनकी प्रकाशित छब्बीस पुस्तकें 'हँसते हैं रोते हैं' (1953) से लेकर 'दो नाक वाले लोग' (1983) हैं। उनकी प्रमुख रचनाएं; रेखाचित्र –संग्रह: हँसते हैं रोते हैं, जैसे उनके दिन फिरे, भोलाराम का जीव; उपन्यास: रानी नागफनी की कहानी, तट की खोज, ज्वाला और जल; संस्मरण: तिरछी रेखाएँ; लेख संग्रह: तब की बात और थी, भूत के पाँव पीछे, बेइमानी की परत, अपनी अपनी बीमारी, प्रेमचन्द के फटे जूते, माटी कहे कुम्हार से, काग भगोड़ा, आवारा भीड़ के खतरे, ऐसा भी सोचा जाता है, वैष्णव की फिसलन, पगडण्डियों का जमाना, शिकायत मुझे भी है, उखड़े खंभे , सदाचार का ताबीज, विकलांग श्रद्धा का दौर, तुलसीदास चंदन घिसैं, हम एक उम्र से वाकिफ है , बस की यात्रा। परसाई की समस्त रचनाएँ छह खण्डों में परसाई - रचनावली (राजकमल प्रकाशन, 1984) के नाम से प्रकाशित हो चुकी हैं।

परसाई जी हिन्दी व्यंग्य साहित्य के शिखर पुरुष माने जाते हैं। उनकी लेखनी में समाज के विभिन्न मुद्दों और विसंगतियों का गंभीर विश्लेषण और तीखा व्यंग्य देखने को मिलता है। उनकी रचनाओं में मानवीय संवेदनाओं और सामाजिक यथार्थ का अद्‌भुत समन्वय है।कपिल कुमार सिंह राघव ने अपनी किताब 'हरिशंकर परसाई का व्यंग्य साहित्य' में लिखा हैं, 'हिन्दी में स्तंभ लेखन के माध्यम से अपने मन की बातें जितनी परसाई ने कहीं किसी अन्य ने इतने तीक्ष्ण रूप में नहीं कहीं. कोई समाज, कोई राज्य, कोई राष्ट्र परसाई की नज़रों से बचा नहीं है. उन्होंने बहुत बड़े

पैमाने पर पढ़े-लिखे समुदाय को अपने आसपास की सच्चाई के बारे में सजग किया है.' परसाई ने केवल विनोद या परिहास के लिए नहीं लिखा। . उनका सारा लेखन सोद्देश्य है। उनकी सभी रचनाओं के पीछे एक साफ-सुलझी हुई वैज्ञानिक जीवन-दृष्टि है। व्यंग्य के विषय में परसाई जी का कहना था, 'व्यंग्य जीवन से साक्षात्कार करता है, जीवन की आलोचना करता है, विसंगतियों, अत्याचारों, मिथ्याचारों और पाखंडों का पर्दाफाश करता है। '

5.3.2 कथा वस्तु

परसाई जी सबसे पहले एक मानववादी हैं, यह इस रेखाचित्र के पाठ से आपको से पता चलेगा। "आदमी का बच्चा" नागपुर में लेखक के अनुभवों पर आधारित है। लेखक अपनी ज़िंदगी सुधारने के लिए एम.ए. की पढ़ाई करने वहाँ जाता है। रेखाचित्र के आरंभ में संस्मरण की तरह से लेखक बता देते हैं कि "जिन्दगी सुधारने नागपुर गया था। राज्यों की राजधानियाँ शायद वे जगहें हैं, जहाँ टूटी हुई जिन्दगियाँ सुधारी जाती हैं। सुना है, सेक्रेटेरिवेट और विश्वविद्यालयों में जिन्दगीसाज रहते हैं, जो एक कदम से टूटी-फूटी और कबाड़खाने में रखी जिन्दगी को अच्छी से अच्छी दुकान के शो-केस में रख देते हैं।" वह एक कवि मित्र के घर ठहरता है, जहाँ उसे जग्गू नाम का एक लड़का मिलता है। जग्गू एक गरीब, 10-12 साल का लड़का है। लड़का कवि मित्र के घर के छोटे-मोटे काम करता है। जग्गू लेखक की हर छोटी-बड़ी ज़रूरत का ध्यान रखता है—पानी, चाय, सिगरेट लाना, और बदले में कभी-कभी दो-चार पैसे पा जाता है। लेकिन उसकी स्वाभिमान भरी आदत लेखक को प्रभावित करती है। वह बिना काम के पैसे लेने से इनकार कर देता है। जग्गू अपने जीवन की कठिनाइयों को सहजता से साझा करता है। वह बताता है कि उसकी माँ की मृत्यु के बाद उसे स्कूल छोड़ना पड़ा ताकि वह अपने छोटे भाई की देखभाल कर सके और पिता के लिए रोटियाँ बना सके।

जग्गू का पिता पहले शराब पीकर अपनी पत्नी को मारता था, लेकिन अब वह शराब छोड़ चुका है। वह चाहता है कि उसकी औलाद शादी करके घर में कोई रोटियाँ बनाने वाली ले आए। , ताकि वह और जग्गू काम पर जा सकें। इस बातचीत में गरीबी की कठोर सच्चाई झलकती है, जहाँ एक महिला का महत्व सिर्फ घरेलू कामों तक सीमित हो जाता है।

रेखाचित्र के दूसरे हिस्से में कवि मित्र का एक दार्शनिक मित्र लेखक से मिलने आता है। वह जीवन और आदमीयत पर लंबी-चौड़ी बातें करता है और यह कहते हुए अफसोस जताता है कि आज के ज़माने में "सच्चे आदमी" नहीं मिलते। लेखक को यह दर्शन व्यावहारिक जीवन से कटा हुआ लगता है।

इस रेखाचित्र का सबसे महत्वपूर्ण क्षण तब आता है, जब जग्गू लेखक के पैसे देने पर नाराज़ होकर कहता है कि वह मुफ्त के पैसे नहीं लेगा। लेखक को यह बात अंदर तक झकझोर

देती है और उसे जग्गू की मानवता और स्वाभिमान का एहसास होता है। जब दार्शनिक मित्र फिर से "आदमी नहीं मिलते" वाली बात दोहराते हैं, तो लेखक जग्गू की ओर इशारा करके कहता है, "आदमी तो नहीं, पर फिलहाल मेरे पास आदमी का बच्चा है।"

यह रेखाचित्र गरीबी, स्वाभिमान और इंसानी मूल्यों का चित्रण करता है। जग्गू जैसे पात्र यह दिखाते हैं कि कठिन परिस्थितियों में भी इंसानियत और आत्मसम्मान कैसे बरकरार रह सकते हैं। रेखाचित्र समाज में व्याप्त असमानताओं पर कटाक्ष करता है और साधारण लोगों में छिपी असाधारण मानवता को उजागर करता है।

5.3.3 प्रमुख पात्र: पात्रों का चरित्र चित्रण

इस रेखाचित्र में रेखाचित्रकार हरिशंकर परसाई ने 'मैं' की शैली अपनाई है। इस लिए यह ठीक रहेगा कि आप जग्गू के अलावा दूसरे सब पात्रों को एक एक नाम दे दें। आप इन्हें इनके गुणों के आधार पर लेखक (मैं), कवि मित्र , और दार्शनिक मित्र कह सकते हैं। ये नाम इस रेखाचित्र में नहीं हैं , पर अध्ययन कि सुविधा के लिए यह जरुरी है। कह सकते हैं कि इस रेखाचित्र में मुख्य रूप से चार पात्र हैं: लेखक/वक्ता, जग्गू, कवि मित्र, दार्शनिक मित्र। इन पात्रों का चरित्र चित्रण इस प्रकार है:

1. लेखक/वक्ता

यहाँ लेखक संस्मरण की तरह अपने उन दिनों को याद करता है जब वह नागपुर में पढ़ने के लिए जाता है। वह युवक है और दुनिया को देखने का उसका अपना नजरिया है। यह नजरिया खुला तो है ही, मानवीयता और इंसानियत के गुणों से भरपूर भी है।

संतुलित व्यक्तित्व: लेखक एक संवेदनशील और व्यावहारिक व्यक्ति हैं। वे खुद को "जीवन जीने" में व्यस्त मानते हैं, न कि "जीवन के बारे में सोचने" में। उदाहरण: जब दार्शनिक मित्र जीवन के उद्देश्य पर चर्चा करते हैं, तो लेखक कहते हैं: "भाई साहब, मुझे जीने से ही फुरसत नहीं मिलती, जीवन के बारे में सोचूँ कैसे? कुछ लोग जीवन जीते हैं, कुछ जीवन के बारे में सोचते हैं।" इससे उनकी व्यावहारिक सोच और जीवन को सीधे देखने की दृष्टि स्पष्ट होती है।

स्वाभिमान की कद्र: जब जग्गू बिना काम किए पैसे लेने से इनकार करता है, तो लेखक कहते हैं: "*मुझे तमाचा-सा लगा पर दर्द नहीं हुआ। आदमीयत कहीं दिखे, तो अच्छा ही लगता है।*" यह दर्शाता है कि लेखक दूसरों की आत्मसम्मान की भावना को समझते और उसकी सराहना करते हैं।

आदर्शोन्मुख यथार्थ वादी : लेखक ने अपने व्यवहार और विचारों के माध्यम से यह दिखाया कि जीवन के संघर्ष को समझना और उसका सम्मान करना, असली "आदमी" होने का मापदंड है।

2. जग्गू

१.-१२ साल के इस लड़के के व्यक्तित्व की बहुत सी विशेषताएं हैं जो आपको एक दम प्रभावित करती हैं –

आत्मसम्मानी व्यक्तित्व: जग्गू गरीबी में पला-बढ़ा एक आत्मसम्मानी लड़का है, जो कड़ी मेहनत और जिम्मेदारी के साथ अपना जीवन जी रहा है। आत्मसम्मान का उदाहरण: जब लेखक उसे बिना काम किए पैसे देते हैं, तो वह कहता है: "*काका, तुम काम तो कराते नहीं, दुअन्नी देते हो। मैं मुफ्त की दुअन्नी थोड़े ही लेता हूँ।*" यह संवाद उसकी स्वाभिमान की भावना को पूरी तरह उजागर करता है।

ज़िम्मेदारी का भाव: जब लेखक उससे पढ़ाई छोड़ने का कारण पूछते हैं, तो वह कहता है: "*फिर दादा के लिए रोटी कौन बनाता? छोटे भैया को कौन खिलाता?*" यह दिखाता है कि वह अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों को प्राथमिकता देता है।

जीवन की सच्चाइयों का ज्ञान: जग्गू अपने पिता की शराब की आदत पर टिप्पणी करते हुए कहता है:"*पहले तो उड़ा देता था। खूब पीकर आता था और माँ को मारता था। पर जबसे माँ मरी, वह बिलकुल नहीं पीता।*"यह उसकी परिपक्वता और कठिनाइयों के प्रति समझ को दर्शाता है।

भविष्य की सोच: वह शादी को एक साधारण और व्यावहारिक जरूरत मानता है, न कि कोई भावनात्मक घटना: "*दादा कहता है, शादी कर देगा, तब हम दोनों काम पर चलेंगे। और मेरी घरवाली हमारे लिए रोटी बना देगी।*" यह संवाद दिखाता है कि गरीबी ने उसकी मासूमियत को छीन लिया है।

3. कवि मित्र

इस रचना में कवि-मित्र वह पात्र हैं जिनके यहाँ लेखक नागपुर में जाकर ठहरता है। वे स्वभाव से सीधे सादे और दोस्ताना ताल्लुक रखने वाले इंसान हैं।

व्यक्तित्व: कवि मित्र सादगी और सरलता से भरे व्यक्ति हैं, जो अपने सीमित संसाधनों में भी मेहमाननवाज़ी करते हैं।

साधारण जीवन: लेखक उनके घर को "*किसी गाँव की गौशाला*" कहते हैं, पर कवि मित्र के "*प्रेम का गलीचा*" और "*आत्मीयता के बेलबूटे*" उनके विनम्र और उदार स्वभाव को दर्शाते हैं।

व्यवहारकुशल और संवेदनशील : जग्गू के प्रति उनका अच्छा व्यवहार: उनके गुणों को सामने लाता है। कवि मित्र जग्गू को बुलाकर समझाते हैं: "*देख जग्गू, ये तेरे नये काका हैं, इनका सब काम करना, कोई तकलीफ न होने देना।*" यह दिखाता है कि कवि मित्र अपने आस-पास के लोगों को मदद का अवसर देना जानते हैं।

4. दार्शनिक मित्र

दार्शनिक मित्र एक ऐसे इंसान हैं जो दुनिया जहान की चिंता करते हैं। उनकी सबकी फ़िक्र है। उनका अपना अंदाज है। अपनी सोच है। वे इसी बात से हमेशा परेशान रहते हैं कि कोई 'आदमी' दिखाई नहीं देता।

व्यक्तित्व: दार्शनिक मित्र गूढ़ विचारों वाले व्यक्ति हैं, जो जीवन के गहरे अर्थों पर चर्चा करना पसंद करते हैं। लेकिन उनके विचार वास्तविक जीवन से कटे हुए हैं।

विचारधारा: वे शायद जिंदगी को करीब से नहीं देखते , बल्कि उसके ख्याल में रहते हैं। यदि वे दुनिया को गौर से देखते तो उन्हें अपने आसपास ही अच्छे और सच्चे आदमी मिल जाते। वे जीवन और मानवता पर टिप्पणी करते हैं:"*आखिर जीवन का उद्देश्य क्या है? क्यों इंसान पैदा हुआ? यह जीवन आखिर क्या है?*" यह उनके विचारशील लेकिन व्यवहारिकता से दूर दृष्टिकोण को दर्शाता है।

मानवता पर टिप्पणी: दार्शनिक मित्र हमेशा सोचते रहते हैं। चिंता करते रहते हैं। उन्हें हर वक्त यही ख्याल सताए जाता है कि 'आदमी' नहीं मिलता। सच्चा आदमी ढूंढने से भी नहीं मिलता। इससे पता चलता है कि इंसानियत की, मानवता की और आदमीयत की उन्हें बहुत चिंता है। दार्शनिक मित्र कहते हैं: "*आजकल आदमी देखने को नहीं मिलता, याने सच्चा आदमी।*" यह संवाद उनके आदर्शवादी दृष्टिकोण को दिखाता है।

कद्र दान : दार्शनिक मित्र के कुछ अपने विचार हैं। उनकी एक निश्चित सोच है। किन्तु वे दूसरों के विचारों की कद्र करते हैं , ठीक वैसे ही जैसे उनके कवि मित्र हैं। उदहारण के लिए , : लेखक उनके आदर्शों का उत्तर देते हुए कहते हैं: "भाई साहब, आदमी तो नहीं, पर फिलहाल मेरे पास आदमी का बच्चा है।"यह लेखक की व्यावहारिक सोच और जग्गू की मानवता को रेखांकित करता है। दार्शनिक मित्र उनके इस कथन से लाजवाब हो जाते हैं। यहीं इस रेखा चित्र का अंत होता है।

5.3.4 देश काल चित्रण

कहानी में देश-काल का चित्रण पात्रों और उनकी परिस्थितियों के माध्यम से स्वाभाविक रूप से उभरकर आता है। स्थान के रूप में नागपुर और कवि मित्र का घर, तथा समय के रूप में 20वीं सदी के मध्य का भारत, कहानी के भाव और संदेश को सशक्त बनाते हैं। यह चित्रण पाठकों को न केवल कहानी की घटनाओं से, बल्कि उस समय की सामाजिक वास्तविकताओं से भी जोड़ता है। का देश-काल चित्रण सरल, स्वाभाविक और पात्रों की समस्याओं से गहराई से जुड़ा हुआ है, जो इसे प्रामाणिक और प्रभावशाली बनाता है।

5.3.5 कथोपकथन

रेखाचित्र के संवाद पात्रों की मानसिकता, समाज की सच्चाई, और परिस्थितियों का सटीक चित्रण करते हैं। ये कथोपकथन इस रचना को प्रभावशाली और पाठकों के दिल को छूने वाला बनाते हैं। संवादों के माध्यम से पात्रों के चरित्र, सामाजिक परिवेश, और घटनाओं को सहजता और गहराई से उभारा गया है। संवाद सरल, स्वाभाविक और चरित्र की मानसिकता के अनुरूप हैं।

कथोपकथन का उपयोग और उदाहरण

जग्गू की निश्छलता और परिपक्वता :जग्गू का संवाद उसकी व्यावहारिक सोच और बाल सुलभ ईमानदारी को व्यक्त करता है। "काका, तुम काम तो कराते नहीं, दुअन्नी देते हो। मैं मुफ्त की दुअन्नी थोड़े ही लेता हूँ।" यह संवाद जग्गू के स्वाभिमान और नैतिकता को प्रकट करता है। उसका गरीब होना उसके स्वाभिमान को कमज़ोर नहीं करता। दार्शनिक मित्र के संवाद "आखिर जीवन का उद्देश्य क्या है? क्यों इंसान पैदा हुआ? यह जीवन आखिर क्या है?" उच्च वर्गीय दृष्टिकोण और वास्तविक जीवन से उनके अलगाव को दर्शाते हैं।

कथोपकथन (संवाद) छोटे छोटे वाक्यों में हैं , अधिकतर शब्दों से ही काम चलाया गया है।

तीसरे दिन वह लड़का फिर आया।

बोला- नहाने कू पानी ला दूँ?

मैने कहा- नहीं।

वह बोला- अरे काका, नहाओगे क्यों नहीं?

नहीं, नहाने से तबीयत खराब होती है।

मैंने उसे जाने के लिए कह दिया। और पढ़ने बैठ गया।

थोड़ी देर बाद वह फिर आया।

बोला- काका, चाय ला दूँ?

मैंने कहा- नहीं। मैं बाहर से चाय पीकर आया था।

5.3.6 भाषा सौष्ठव:

परसाई की भाषा–शैली में एक खास किस्म का अपनापा है, जिससे पाठक यह महसूस करता है कि लेखक उसके सामने ही बैठा है। इस रेखाचित्र के पढ़ने से यह पता चलता है कि परसाई की भाषा सरल, मार्मिक और प्रभावी है। लेखक ने पात्रों के माध्यम से सामाजिक और व्यक्तिगत संघर्षों को बहुत ही कुशलता से व्यक्त किया है। शब्दों की चुस्ती और सहजता ने इस रेखाचित्र को दिलचस्प और प्रभावशाली बना दिया है। रेखाचित्र में प्रयुक्त भाषा अत्यंत सरल और सहज है, जो पात्रों की मानसिकता और उनके परिवेश को बिना किसी जटिलता के प्रकट करती है। उदाहरण के लिए, जग्गू का संवाद *"काका, तुम काम तो कराते नहीं, दुअन्नी देते हो।"* यहां वह बिना किसी झिझक के अपनी बात रखता है, जिससे उसकी मासूमियत और स्वाभिमान प्रकट होता है। जग्गू की तरफ से दिया गया समाज की सच्चाई को उजागर करता यह संवाद ('तमाचा') अत्यंत स्वाभाविक लगता है। भाषा की रवानगी के साथ साथ ही परसाई जी के गद्य में कभी कभी अनायास ही कवित्व शक्ति दिखाई देती है। जैसे इस वाक्य को देखें। "मित्र के प्रेम का गलीचा कुछ ऐसा बिछा था और आत्मीयता के ऐसे बेलबूटे सजे थे कि मन रम गया। " यहाँ 'मन रमना' मुहावरा तो है ही, कविता भी है। इसका मतलब यह नहीं कि परसाई बहुत कठिन शब्दों का प्रयोग करते हैं। शब्द इनकी भाषा में हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी और दुनियादारी के भी हैं। सेक्रेटेरियेट, जिन्दगीसाज, कबाड़खाना, इम्तहान, टेबिल, इकन्नी, वार्तालाप, तमाचा अचकचाना, दारू-वारू आदि कुछ शब्द इस रेखाचित्र में हैं। रेखाचित्र में शब्दों के सहारे जो स्केच बनाया जाता है , उसकी बानगी आप जग्गू के निम्नलिखित शब्द चित्र में बखूबी देख सकते हैं -"दस-बारह साल का लड़का था। मैला-कुचैला। एक आँख ठीक, दूसरे में मोतियाबिन्द। बाल बेतरतीब रूखे। पेट बड़ा, हाथ-पाँव पतले। जैसे बढ़ते पौधे को गरीबी के ढेर ने रौंद डाला हो। पर लड़के की एक आँख में बड़ी चमक आती।"

5.3.7 शैली

एक ही रचना 'आदमी का बच्चा' में परसाईजी की भाषा, भाव और भंगिमा के कई रूप देखे जा सकते हैं। परसाई जी ने व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग किया है जिससे भाषा मे चमत्कार उत्पन्न हो गया है और इनकी शैली सहज, सरल व भावो के अनुरूप है। प्रसंग बदलते ही उनकी भाषा-शैली में बड़ी आसानी से बदलाव होता देखा जा सकता है।

वर्णनात्मक शैली : लेखक ने दृश्य और वातावरण के वर्णन में भी बहुत सुंदर भाषा का उपयोग किया है। *"पेट बड़ा, हाथ-पाँव पतले। जैसे बढ़ते पौधे को गरीबी के ढेर ने रौंद डाला हो।"* इस वाक्य में गरीबी के प्रभाव को न सिर्फ शब्दों के माध्यम से बल्कि चित्रात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया है। लेखक ने सामाजिक मुद्दों और पात्रों की मानसिकता को चित्रित करने के लिए व्यंग्य का भी सहारा लिया है। *"बड़ी खराब चीज है। कभी नहीं पीना चाहिए।"* यह संवाद शराब के प्रति समाज की नफरत को व्यक्त करता है।

सूक्तिपरक शैली : छोटे छोटे सूक्तिपरक वाक्यों में लेखक बड़े काम की बात कह डालते हैं , "कुछ लोग जीवन जीते हैं, कुछ जीवन के बारे में सोचते हैं। आपको सोचने की सुविधा है। मुझे जीने का शौक है।" "सुना है, सेक्रेटेरिवेट और विश्वविद्यालयों में जिन्दगीसाज रहते हैं, जो एक कदम से टूटी-फूटी और कबाड़खाने में रखी जिन्दगी को अच्छी से अच्छी दुकान के शो-केस में रख देते हैं।"

5.4 : पाठ सार

आज़ादी से पहले के हिंदुस्तान जानने के लिए जैसे सिर्फ़ प्रेमचंद पढ़ना ही काफ़ी है, उसी तरह आज़ादी के बाद का पूरा दस्तावेज़ परसाई की रचनाओं में सुरक्षित है। इस इकाई में हिन्दी व्यंग्य के बादशाह हरिशंकर परसाई ने रेखाचित्र के द्वारा समाज में फैले दोगलेपन पर गहरी चोट की है।

रेखाचित्र *"आदमी का बच्चा"* में एक छोटे से लड़के, जग्गू, के माध्यम से समाज की गरीबी, जिम्मेदारी और मासूमियत का चित्रण किया गया है। इसके माध्यम से जीवन की यथार्थता, गरीबी और श्रम की सच्चाई को उजागर किया गया है। कुल चार पात्रों से (जिनमे से एक वे खुद हैं) लेखक ने दिखा दिया है कि अच्छा और सच्चा आदमी ढूंढने से भी नहीं मिलता, यह कहने वाले अपने आसपास नहीं देखते। बहुत से बच्चे ही हैं जो फेंके हुए पैसे नहीं उठाते। बिना मेहनत की कमाई के मुफ्त का माल नहीं उड़ाते। रेखाचित्र के संवाद सीधे, सरल और प्रभावशाली हैं, जो पात्रों की भावनाओं और संघर्षों को प्रभावी रूप से व्यक्त करते हैं। लेखक ने भाषा सौष्ठव का उपयोग करते हुए पात्रों की मानसिकता और उनके जीवन के जटिल पहलुओं को सहजता से चित्रित किया है। व्यंग्य और गहरी संवेदनाओं के साथ यह कहानी समाज की सच्चाई को सामने लाती है। रेखाचित्र का संदेश है कि सच्ची मानवता और "आदमी" होने का मापदंड आदर्श विचारधाराओं से नहीं, बल्कि जीवन के वास्तविक संघर्षों और स्वाभिमान से तय होता है। आदमीयत कहीं दिखे, तो अच्छा ही लगता है।

5.5 : पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के पाठ से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त होते हैं:

- इस रेखाचित्र को पढ़ने से पाठक को समाज की वास्तविकताओं और जीवन के संघर्षों का गहरा अहसास होता है।
- यह पाठक को गरीबी, श्रम और मासूमियत के बीच के संवेदनशील संबंधों को समझने का अवसर प्रदान करता है।
- रेखाचित्र के पात्रों के माध्यम से सामाजिक असमानताओं और परिवारिक जिम्मेदारियों को महसूस किया जा सकता है।
- इसके अलावा, संवादों और भाषा के सरलता से यह समझने में मदद मिलती है कि जीवन की कठिनाइयों को कैसे सहन किया जाता है।
- कुल मिलाकर, यह रेखाचित्र मानवता, संघर्ष और स्वाभिमान की महत्वपूर्ण शिक्षाएं देती है।

5.6 शब्द संपदा

1. आदमी : मनुष्य मानव, नर, मनुज, मानुष, इंसान, व्यक्ति, लोग, लोक, आदम की संतान, पति, शौहर, स्वामी, स्त्री की दृष्टि से उसका विवाहित पुरुष, कर्मी, कर्मचारी, किसी विशिष्ट कार्य के लिए नियुक्त किया हुआ व्यक्ति, सभ्य, शिष्ट, मुहज़्ज़ब लोग, पुरुष, प्रौढ़ या वयस्क मनुष्य (बालक और स्त्री से भिन्न)
2. जिन्दगीसाज - जिंदगी बनाने वाला (जैसे—घड़ी साज़, जिल्द साज़ आदि)।
3. बाड़खाना : वह जगह जहाँ अनेक प्रकार की बहुत-सी टूटी-फूटी तथा बेकार की चीजें रखी गई हों।
4. व्यंग्य: · वह लगती हुई बात जिसका कुछ खास मतलब हो। ताना , बोली, चुटकी आदि।
5. मोतियाबिन्द : आँख के सामान्य रूप से साफ़ लेंस का धुंधला होना
6. स्वाभिमान : खुद पर भरोसा

5.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड –(अ)

दीर्घ प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. 1.इन पंक्तियों के आधार पर 'आदमी का बच्चा' रेखाचित्र के केंद्रीय पात्र जग्गू का शब्द चित्र अपने शब्दों में पेश कीजिए –-“दस-बारह साल का लड़का था। मैला-कुचैला। एक आँख

ठीक, दूसरे में मोतियाबिन्द। बाल बेतरतीब रूखे। पेट बड़ा, हाथ-पाँव पतले। जैसे बढ़ते पौधे को गरीबी के ढेर ने रौंद डाला हो। पर लड़के की एक आँख में बड़ी चमक आती।"

2. "आदमी का बच्चा" रेखाचित्र का शीर्षक यही क्यों रखा गया है? क्या यह शीर्षक रेखाचित्र के विषय से मेल खाता है?
3. "आदमी का बच्चा" रेखाचित्र के मुख्य पात्र कौन हैं, और उनके चरित्र को आप किस तरह से पेश करेंगे?
4. "आदमी का बच्चा" रेखाचित्र के संवादों (कथोपकथन) का क्या महत्व है? किसी एक संवाद का उदाहरण देकर उसकी व्याख्या करें।
5. "आदमी का बच्चा" रेखाचित्र में सामाजिक असमानताओं और गरीबी का चित्रण किस प्रकार किया गया है? इस पर आपके क्या विचार हैं?

खंड –(ब)

लघु प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 250 शब्दों में दीजिए

1. "आदमी का बच्चा" में भाषा सौष्ठव का क्या प्रभाव है? लेखक ने भाषा के माध्यम से क्या संदेश देने की कोशिश की है?
2. "आदमी का बच्चा" में जो दार्शनिक मित्र आते हैं, वे किस प्रकार के विचार व्यक्त करते हैं? क्या वे समाज की वास्तविकताओं से जुड़ पाते हैं?
3. आपके अनुसार, " आदमी का बच्चा" के अंत में जग्गू की तरफ से दिया गया 'तमाचा' समाज की कौन सी सच्चाई को उजागर करता है?
4. रेखाचित्र " आदमी का बच्चा" में 'जग्गू' के माध्यम से लेखक ने समाज की कौन सी समस्याओं को उजागर किया है?
5. "आदमी का बच्चा" से पाठकों को कौन सी प्रमुख शिक्षा मिलती है?

खंड- (स)

I. **सही विकल्प चुनिए**

I. 'आदमी का बच्चा' हरिशंकर परसाई की किस विधा की रचना है?

क) कहानी ख) निबंध ग) रेखाचित्र घ) व्यंग्य

II. दार्शनिक मित्र की प्रमुख चिंता है

क) कविता न लिख पाना ख) रोजगार न मिल पाना ग) सच्चा आदमी न मिल पाना घ) ये सभी

III. कवि मित्र और दार्शनिक मित्र दोनों के चरित्र की यह एक सी विशेषता है
क) घमंड ख) लापरवाही ग) दूसरों के विचारों की कद्र घ) इनमें से कोई नहीं

IV. जग्गू में आदमियत किसने देखी ?
क) कवि मित्र ने ख) लेखक ने ग) जग्गू के पिता ने घ) दार्शनिक मित्र ने

II. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए

I. परसाई ने _____विधा को साहित्यिक प्रतिष्ठा प्रदान की।

II. 'रेखाचित्र' शब्द अंग्रेजी के _____ शब्द का हिन्दी रूपान्तर है।

III. भाई साहब, आदमी तो नहीं, पर फिलहाल मेरे पास _____ है।

IV. _____ कहीं दिखे, तो अच्छा ही लगता है।

V. _____मित्र व्यवहारिकता से दूर दिखाई देते हैं।

III. सुमेल कीजिए

(अ) दार्शनिक मित्र	(क) जीवन को आदर्शोन्मुख यथार्थ वादी दृष्टि से देखने वाले
(आ) कवि मित्र	(ख)संघर्ष, स्वाभिमान और जिम्मेदारी का प्रतीक
(इ) जग्गू	(ग) सादगी और आत्मीयता के उदाहरण
(ई) लेखक	(घ) आदर्शवादी लेकिन जीवन के यथार्थ से कटे हुए

5.8 : पठनीय पुस्तकें

हिन्दी के श्रेष्ठ रेखाचित्र : संपादक डॉ चौथीराम यादव , विश्वविद्यालय प्रकाशन,

https://hindikahani.hindi-kavita.com/HK-Harishankar-Parsai.php

https://epustakalay.com/writer/2870-harishankar-parsai/

इकाई : 6 संस्मरण: 'आचार्य रामचंद्र शुक्ल-कुछ संस्मरण' (राय कृष्णदास)

इकाई की रूपरेखा

6.1. प्रस्तावना

6.2. उद्देश्य

6. 3. मूल पाठ : 'आचार्य रामचंद्र शुक्ल-कुछ संस्मरण' की विवेचना

6.3.1. 'आचार्य रामचंद्र शुक्ल-कुछ संस्मरण' के लेखक का परिचय

6.3.2. 'आचार्य रामचंद्र शुक्ल-कुछ संस्मरण' की कथावस्तु

6.3.3. 'आचार्य रामचंद्र शुक्ल-कुछ संस्मरण' के प्रमुख पात्र का चरित्र-चित्रण

6.3.4. 'आचार्य रामचंद्र शुक्ल-कुछ संस्मरण' में देश-काल का चित्रण

6.3.5. 'आचार्य रामचंद्र शुक्ल-कुछ संस्मरण' में कथोपकथन

6.3.6. 'आचार्य रामचंद्र शुक्ल-कुछ संस्मरण' का भाषा-सौष्ठव

6.3.7. 'आचार्य रामचंद्र शुक्ल-कुछ संस्मरण' की शैली

6.4.पाठ सार

6.5.पाठ की उपलब्धियाँ

6.6. शब्द सम्पदा

6.7. परीक्षार्थ प्रश्न

6.8. पठनीय पुस्तकें

6.1 प्रस्तावना

प्रिय छात्रों, प्रस्तुत संस्मरण में रायकृष्ण दास ने आचार्य रामचंद्र शुक्ल के व्यक्तित्व के विविध पक्षों पर प्रकाश डाला है। हिन्दी साहित्य के प्रसिध्द आलोचक एवं निबंधकार आचार्य रामचंद्र शुक्ल के जीवन से जुड़े विविध प्रसंगों के माध्यम से लेखक ने उस समय के सामाजिक, सांस्कृतिक तथा साहित्यिक वातावरण की सजीव प्रस्तुति की है। 'आचार्य रामचंद्र शुक्ल-कुछ संस्मरण' की विवेचना करते हुए संस्मरण के लेखक का परिचय, कथावस्तु, प्रमुख पात्र रामचंद्र शुक्ल का चरित्र-चित्रण, देश-काल का चित्रण, कथोपकथन, भाषा-सौष्ठव तथा शैली आदि का विस्तृत परिचय प्राप्त कर सकेंगे।

6.2 उद्देश्य

प्रिय छात्रों, इस इकाई के अध्ययन के उपरांत आप -

- 'आचार्य रामचंद्र शुक्ल-कुछ संस्मरण' के विवेच्य विषय की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

- 'आचार्य रामचंद्र शुक्ल-कुछ संस्मरण' के लेखक का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
- 'आचार्य रामचंद्र शुक्ल-कुछ संस्मरण' के प्रमुख पात्र आचार्य शुक्ल के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से परिचित हो सकेंगे।
- इस संस्मरण के कला पक्ष का यथोचित विवेचन कर सकेंगे।
- हिन्दी साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले आचार्य रामचंद्र शुक्ल के लेखकीय अवदान का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।

6.3 मूल पाठ : 'आचार्य रामचंद्र शुक्ल-कुछ संस्मरण' की विवेचना

'आचार्य रामचन्द्र शुक्ल :कुछ संस्मरण' में लेखक रायकृष्ण दास कहते हैं कि 'आचार्य शुक्ल को वे केवल जानते ही नहीं थे, बल्कि उनसे लेखक के बड़े ही घनिष्ठ संबंध थे।' सन् 1908 में काशी की नागरी प्रचारिणी सभा ने जब हिन्दी का एक बृहत्कोश निकालने का निश्चय किया और हिन्दी-प्रेमियों से अपील किया कि वे इस कार्य का दायित्व उठाएं, तो हिन्दी संसार ने बड़े उत्साह से शब्द छाँटने के लिए कुछ ग्रंथ चुन लिए थे। उत्साह तो था ही, बहुत से हिन्दी के विद्वानों ने पुस्तकें भी मँगा लीं थीं। लेकिन यह काम बहुत कठिन था। क्योंकि इसके लिए कुछ पूर्वनिश्चित शब्दों को छोड़कर ग्रंथ के प्रत्येक शब्द को अलग-अलग चिट पर लिखते हुए उसका वर्गीकरण करना, अर्थ देना आदि दुरूह प्रतीत हुआ। आरंभ में सभा का अनुमान था कि ऐसा करने से काम सरल हो जाएगा, किन्तु शीघ्र ही उन्हें अनुभव हुआ कि कुशल संपादक मण्डल के बिना यह कार्य पूरा होना संभव नहीं है। अतः इसके लिए कुशल संपादक की खोज शुरू हुई।

हिन्दी भाषा साहित्य के विलक्षण विद्वान केदारनाथ पाठक नए लेखकों को उत्साहित करने में और हिन्दी की गतिविधि की पूर्ण जानकारी रखने में दक्ष थे। साहित्य में क्या हो रहा है, कौन चोरी कर रहा है, किस लेखक में क्या दुर्बलता है, उसकी ओर उनकी टकटकी सदा लगी रहती थी। स्वभाव ऐसा था कि 'रीझे सरबस देत हैं, खीझे दण्ड कठोर।' वे बड़े ही भावुक थे। उनके विलक्षण गुणों के कारण मित्रों ने उनके अनेक नाम रखे थे; जैसे, हिन्दी साहित्य के सजीव विश्वकोश, साहित्य सागर के विलक्षण जन्तु, हिन्दी के अकर्ण कर्णधार, क्योंकि वे ऊँचा सुनते थे। वे सभा के प्राण डॉ. श्यामसुन्दरदास के अत्यंत निकटतम थे। जब डॉ. दास ने उनसे कोश का कार्यभार उठाने के लिए उपयुक्त विद्वान् के बारे में पूछा, तो उन्होंने शुक्लजी का नाम लिया।

शुक्लजी उस समय मिर्जापुर में थे। वहीं अपनी किशोरावस्था में ही वह चौधरी बदरीनारायण उपाध्याय 'प्रेमघन' के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर हिन्दी क्षेत्र में आ गए थे। प्रेमघन भारतेन्दु मंडल के अवशेष थे। घुंघराली लट, रंग-बिरंगी पोशाक, रहन-सहन में तरहदारी; उनकी सज-धज भारतेन्दु जी से बहुत मिलती थी और साहित्यिक झुकाव के लोग उनकी रईसी से

प्रभावित हुए बिना न रह सकते थे। उन्नीसवीं शती की रईसी उनके नस-नस में भरी थी। शुक्लजी उनकी रईसी का एक नमूना प्रायः सुनाया करते। 'एक दिन मित्र मंडली उनके घर पर खुले में बैठी थी। ग्रीष्म ऋतु थी, हवा का एक झोंका आया और वहाँ का लैंप झमक उठा। चौधरी साहब नौकर को आवाज देने लगे, कहते जाते, "क्या चिमनी टूट जायगी, तभी आयेगा ?" लैंप उनके पास ही रखा था, किन्तु हाथ बढ़ाकर उसे ठंडा कर देना रईसी के विपरीत होता। परिणाम यह हुआ कि नौकर के पहुँचते-पहुँचते चिमनी चूर-चूर हो गई।

शुक्लजी चौधरी साहब से ही प्रभावित होकर हिन्दी क्षेत्र में आए। उनकी आरंभिक रचनाओं में यह छाप स्पष्ट रूप से विद्यमान है। और प्रौढ़ रचनाओं में भी यद्यपि वह भारीपन और कृत्रिमता न रह गई थी, तथापि भाषा का ढलाव उसी साँचे का बना रहा। शुक्लजी ने लिखना आरंभ ही किया था कि उनका परिचय मिर्ज़ापुर के ही पं. केदारनाथ पाठक से हुआ। पाठक जी से उनका प्रथम परिचय भारतेंदु भवन के नीचे काशी में हुआ। इस प्रकार भारतेन्दु की छत्रछाया ने एक सुन्दर शकुन किया। फिर तो शुक्लजी से उनकी घनिष्ठता उत्तरोत्तर बढ़ती गई, जो अनेक अंशों में उनके विकास का कारण बनी। केदारनाथ पाठक ने उन्हें काशी लेकर गए, ताकि वे पूर्ण विकसित हो सकें। वैसे यों तो मिर्जापुर में भी युवावस्था तक पहुँचते-पहुँचते शुक्ल जी की एक साहित्यिक मंडली बन गई थी, जिसमें स्वर्गीय काशीप्रसाद जायसवाल, भगवानदास हालना, बद्रीनाथ गौड़ तथा द्विवेदी बंधु लक्ष्मीशंकर और उमाशंकर प्रभृति थे। किन्तु इस मंडली में काफी अक्खड़पन भी था। कभी-कभी इस मंडली का साहित्यिक विवाद शास्त्र से शस्त्र की सीमा तक पहुँच जाता था। काशी पहुँच कर शुक्लजी उस वातावरण से ऊपर उठे तथा उनमें जो बीज थे, वे अंकुरित और विकसित हुए। कभी-कभी बात पड़ने पर उनकी पत्नी अनखाकर उनसे कहती - "भला मनाओ पाठक का, जो तुम्हें यहाँ ले आए, नहीं तो मिर्जापुर में स्कूल की मास्टरी किया करते।"

बोध प्रश्न:

- आचार्य शुक्ल किसकी रईसी से प्रभावित थे ?
- आचार्य शुक्ल की पत्नी शुक्ल जी को क्या कहती थीं?

काशी में ही 1910-11 में शुक्लजी से राय कृष्णदास का परिचय हुआ। उन दिनों राय कृष्णदास एक सचित्र मासिक पत्र निकालने का विचार कर रहे थे। तब हिन्दी में अच्छे मासिक पत्रों का अभाव-सा था, 'सरस्वती' का ही एकाधिपत्य था। 'सरस्वती' की प्रतिस्पर्द्धा में कई पत्रिकाएँ निकल कर बंद भी हो गईं। 'मर्यादा' ही एक ऐसी पत्रिका थी, जिसका नाम 'सरस्वती' के बाद लिया जा सकता था। रायकृष्ण दास अच्छी पत्रिका निकालना चाहते थे। केदारनाथ पाठक के परामर्श से

शुक्लजी को इस पत्रिका का संपादक चुना गया और उन्होंने इसका नामकरण 'सरोज' किया। 'सरोज' का पहला अंक छपकर भी प्रेस एक्ट के कारण प्रकाशित न हो सका। किन्तु इसी पत्रिका के कारण शुक्लजी से रायकृष्ण दास का साहचर्य बढ़ चला। एकाध महीने में ही नित्य का यह क्रम हो गया, कि नागरी प्रचारिणी सभा के कोश-विभाग से उठ कर शुक्ल जी सीधे रायकृष्ण दास के घर चले आते और चार-पाँच घंटे की बैठक के बाद नौ बजे के लगभग अपने घर जाते। यह क्रम दो वर्षों से भी अधिक चला। इस चौबीस-पचीस महीने के समय में वे एक-दूसरे के बहुत निकट आ गए। आगे चलकर मिलना-जुलना बहुत कम हो जाने पर भी उनमें यह निकटता ज्यों-की-त्यों बनी रही। रायकृष्ण दास के शब्दों में –'इसमें मैंने मनुष्य शुक्लजी को आचार्य शुक्लजी से इक्कीस ही पाया।'

बोध प्रश्न:

- कोश विभाग से आचार्य शुक्ल किसके घर जाते थे ?
- मनुष्य शुक्ल को आचार्य शुक्ल से` इक्कीस किसने पाया ?

उनका सबसे बड़ा मानव-गुण उनका सौजन्य था। जहाँ तक हो सकता, शिष्टता को वे हाथ से न जाने देते। अपने साथ बुरा करने वालों के प्रति भी शुक्ल जी के मन में बदले की भावना नहीं आती थी। ऐसी प्रेरणा उनके मन में उठती ही न थी, स्वयं दुखी भले ही हो जाएँ। एक बार उनके यहाँ कुछ चोरी हो गई। लोग समझ गए कि चोर कौन है ? अतएव उसे पुलिस में देने की बात उठी, किन्तु शुक्लजी कहने लगे- "मैं इसे कैसे पकड़ाऊँ, कोई कैसे चोर हो सकता है ? यह बात मेरी समझ में आती ही नहीं।" और उसे यों ही छोड़ दिया।

शुक्ल जी की सज्जनता का लाभ साहित्यिक मगरमच्छ हमेशा उठाते रहें। रायकृष्ण दास कहते हैं 'एक महाशय शुक्लजी की कृतियाँ आत्मसात् किए जा रहे थे। एक रात नौ बजे के लगभग शुक्लजी मेरे पास पहुँचे और कहने लगे- "अब मेरे साहित्यिक मर्डर में कोई कसर नहीं रह गई। अमुक चीज यों हड़प की गई, अमुक यों; अब अमुक चीज बच रही है, उस पर धावा बोला गया है।" मैने कहा - "घबराइए नहीं, जहाँ तक मेरा बस चलेगा, ऐसा न होने दूँगा।" डॉ. श्याम सुन्दरदास ने भी शुक्ल जी के संबंध में अपना अनुभव व्यक्त करते हुए लिखा है- "उनका स्वभाव अत्यन्त सरल था। इस सरलता और संकोच की मात्रा इतनी बढ़ी हुई थी, कि स्वार्थी और कुतर्की लोग उनके पीछे पड़कर येन-केन प्रकारेण अपना काम निकाल लेते थे, चाहे वह उनकी रुचि और अन्तरात्मा के कितनी ही विरुद्ध क्यों न हो ?"शुक्ल जी का स्वभाव बड़ा ही कोमल और संकोची

थी। यदि वे थोड़े भी बीमार होते थे, तो जीने की आशा छोड़ बैठते थे। अपने संकोची स्वभाव के कारण ही वे प्राणों से हाथ धो बैठे। एक बार एक बरात में गए थे, वहाँ दिनचर्या में इतना व्यवधान आया कि बीमार हुए तो फिर न उठे।

शुक्ल जी को प्रकृति से बहुत प्रेम था। प्रायः वे दिन-रात के, ऋतुओं के और वन-पर्वत के सुन्दर दृश्यों का सूक्ष्म और हार्दिक निरीक्षण करते-करते आनन्द विभोर हो उठते थे। मिर्जापुर के पास अनेक रमणीय स्थलियाँ हैं, जहाँ वे घूमने निकल पड़ते थे। रायकृष्ण दास उनके प्रकृति प्रेम का चित्रण करते हुए कहते हैं, 'एक बार तो ऐसी ही सैर में प्राण संकट में आ गया था। एक पहाड़ी नदी की घाटी में विचर रहे थे, बरसात के दिन थे, सहसा नदी में बाढ़ आ गई। एक शिला का आश्रय लेकर उन्होंने रात बिताई। यदि पानी थोड़ा और चढ़ता तो वह शिला भी डूब गई होती और प्रवाह अपने संग शुक्लजी को ले गया होता।' शुक्ल जी के एक इस सूक्ष्म प्राकृतिक निरीक्षण का अनुभव उनकी अनूदित रचनाओं में भी देखा जा सकता है। उनकी कविताएँ तो अनूठी होती ही थीं, साथ ही उन कविताओं के अनुवाद तक में मूल से अधिक आनंद प्राप्त होता है।

बोध प्रश्न:

- आचार्य शुक्ल आलोचना के साथ किसका प्रयोग करते थे ?
- आचार्य शुक्ल ने शब्दकोश में 'करना' शब्द का क्या अर्थ दिया?

एक अच्छा लेखक लिखने से पूर्व गहन अध्ययन करता है। शुक्ल जी ने यूरोपीय दार्शनिकों में कान्ट, स्पेन्सर, शोपनहाअर आदि का विस्तृत अध्ययन करते हुए उनके सिद्धान्तों पर भारतीय दृष्टि से विचार करते हुए स्वतन्त्र चिन्तनधारा का निर्माण किया था। 1918 के लगभग उन्होंने 'मनोवृत्तियों का विकास' शीर्षक एक लेखमाला लिखी, तभी स्पष्ट हो गया था कि साहित्य के क्षेत्र में एक चिन्तनशील व्यक्तित्व उदित हो रहा है। उस लेखमाला का एक मार्मिक वाक्य उल्लेखनीय हैं- 'ईर्ष्या-द्वेष क्रोध के अचार-मुरब्बे हैं।' इन लेखों के लिखने के बाद वे एक दिन काशी के कार्माडकल पुस्तकालय में गए और डरते-डरते अंग्रेजी की इस विषय वाली एक प्रामाणिक पुस्तक निकाली कि कहीं उसके विचार तो उनके विचारों से नहीं लड़ गए हैं। उन्होंने यह जान कर संतोष की साँस ली कि दोनों अलग चीजें हैं। इसके बाद उनके विचारपूर्ण लेख बराबर प्रकाशित होते रहें। 'कविता क्या है?' शीर्षक निबन्ध में उन्होंने इस विषय का तात्त्विक विचार एक नये ही दृष्टिकोण से किया। क्रमशः उनकी चिन्तनशीलता अद्वितीय होती गई। जायसी, सूर और तुलसी के साहित्यिक देन पर उन्होंने जो तात्त्विक विमर्श किए हैं, वे किसी भी वाङ्मय के लिए गर्व के कारक हो सकते हैं।

वे एक ओर ऐसे विषयों पर लिखते जाते, दूसरी ओर कोश का कार्य भी बड़ी योग्यता से करते जाते थे। वास्तव में कोश का कार्य उनका ही है। यह कोश भारतीय भाषाओं के कोशों में सबसे बड़ा तो है ही, इसकी मुख्य विशेषता यह है कि इसमें शब्दों के अर्थ घास-भूसे की तरह नहीं भरे गए हैं, जैसा कि हम अन्य भारतीय भाषाओं के कोश में देखते हैं। इसमें प्रत्येक शब्द की व्युपत्ति, उसका मुख्य अर्थ, गौर्ण अर्थ, उनके सूक्ष्म भेद अलग देकर क्रमानुसार उनके प्रयोग भी दिए गए हैं। अर्थ देते समय इस बात का ध्यान रखा गया है कि वही शब्द अर्थ में न आए। इसका उदाहरण प्रस्तुत करते हुए रायकृष्ण दास कहते हैं, ‘'करना' शब्द का अर्थ देने में बड़ी अड़चन पड़ी। अन्ततः उसका यह अर्थ दिया गया "किसी क्रिया को समाप्ति की ओर ले जाना।" कोश की इन विशेषताओं का सारा श्रेय शुक्ल जी को है।‘

एक ओर कोश निर्माण विभाग में गम्भीर विचार और छानबीन चलता रहता था और दूसरी ओर हास्य-विनोद भी चलता रहता था। शुक्ल जी बड़े ही विनोदी प्रकृति के व्यक्ति थे। उनके परिहास एवं व्यंग्य उच्चस्तरीय और बारीक होते थे। वे हँसना और हँसाना दोनों जानते थे। रायकृष्ण दास उनके विनोदी प्रवृति का उल्लेख करते हुए कहते हैं, ‘ऊपर हमने 'सरोज' नामक प्रस्तावित मासिक पत्र की चर्चा की है। उन्हीं दिनों एक धूमधामी सवारी निकलने वाली थी। शुक्लजी तथा मैं उसे देखने गए थे। मैंने शुक्लजी से कहा- "इसके कुछ नोट ले लीजिए। 'सरोज' में एक विवरण दे दिया जाएगा।" सवारी निकल जाने पर मैंने उनसे पूछा- "कहिए, कुछ नोट लिए ?"

बोले- "नोट लेने योग्य तो कोई बात हुई नहीं। हां, एक कुत्ता दौड़ता हुआ अवश्य चला गया जिसके पीछे लोग थे।"

बात यह हुई थी कि सवारी निकलने के पहले खाली सड़क पर कहीं एक कुत्ता आ गया था, जिसे लोगों ने विशेष सरगर्मी से खदेड़ा था।‘

शुक्ल जी उर्दू शायरी को परिभाषित करते हुए कहते हैं - "यह कविता है या अस्पताल, कहीं कोई जिगर की पीड़ा से तड़फड़ा रहा है, कहीं किसी का खून निकला जा रहा है, कहीं किसी के दिल पर नश्तर चल रहा है।"

शुक्ल जी जब आलोचना लिखने बैठते हैं, तो उनकी आलोचनाओं के बीच-बीच में व्यंग्य के प्रयोग आलोच्य विषय को सजीव ही नहीं बनाते हैं, बल्कि विषय के स्पष्टीकरण में भी विशेष सहायक होते हैं। कुछ नीरस व्यक्ति इन व्यंग्यों के कारण शुक्लजी को छिद्रान्वेषी मानते थे।

शुक्लजी की प्रकृति आलोचनात्मक थी, उनके कुछ निष्कर्षों से वर्तमान पीढ़ी भले न सहमत हो, लेकिन उन्हीं के दिखाए पथ पर चल रही है।

सन् 1935 में काशी के साहित्य-सम्मेलन में शुक्ल जी को व्याख्यान देना था। एक ओर व्याख्यान में जाने की जल्दी, दूसरी ओर बिहार के लोग उन्हें किसी साहित्य-समारोह के लिए पकड़ ले गए। वहाँ से लौटकर वे साँस भी न लेने पाए थे कि सम्मेलन के आयोजकों का तांगा आ पहुँचा। अपनी दयनीय दशा का वर्णन करते हुए उन्होंने एक पत्र में लिखा है-

जिन्दगी है या कोई तूफान है, हम तो इस जीने के हाथों मर चले।'

बोध प्रश्न:

- शुक्ल जी अपने जीवन को तूफान क्यों कहते थे ?
- शुक्ल जी उर्दू शायरी को क्या कहते थे ?
- आचार्य शुक्ल ने भारतीय विचारों के साथ और किन विचारों का समन्वय किया?

6.3.1. 'आचार्य रामचंद्र शुक्ल-कुछ संस्मरण' के लेखक का परिचय

'आचार्य रामचंद्र शुक्ल-कुछ संस्मरण' के लेखक रायकृष्ण दास का जन्म उत्तर प्रदेश के वाराणसी जिले में 13 नवंबर 1892 में हुआ था। वे हिन्दी साहित्य में गद्यगीत के प्रवर्तक के रूप में जाने जाते हैं। भारतेंदु हरिश्चंद्र के साथ पारिवारिक संबंध होने के कारण रायकृष्ण दास के परिजन भी कलाप्रेमी बन गए थे। रायकृष्ण दास के पिता प्रह्लाद दास हिन्दी प्रेमी थे तथा जयशंकर प्रसाद, मैथिलीशरण गुप्त आदि के साथ निकटता का संबंध होने के कारण वे आठ वर्ष की उम्र से ही लिखने लगे थे। पिता की असामयिक मृत्यु के बाद रायकृष्ण दास की विद्यालयीन शिक्षा बाधित हुई, तो स्वाध्याय से हिन्दी,अंग्रेजी और बांग्ला भाषा साहित्य का गहन अध्ययन किया। अज्ञेय जी इनकी तीव्र स्मरण शक्ति के कारण अपनी रचना 'स्मृति लेखा' में रायकृष्ण दास को 'स्मरण का स्मृतिकार' कहा है। अपनी सौम्यता और कला-प्रेम के कारण वे हिन्दी जगत में 'कलानिधि', 'आर्टफुल मैन', 'आर्ट हिस्टोरियन' आदि नामों से जाने जाते थे। साहित्य और कला के क्षेत्र में अपने अप्रतिम योगदान के लिए भारत सरकार द्वारा इन्हें 1963 में 'पद्म भूषण' तथा 1980 में 'पद्म विभूषण' से सम्मानित किया गया। मेरठ तथा काशी विश्वविद्यालय ने रायकृष्ण दास को डी. लिट्. की उपाधि प्रदान की। इसके आलावा 'साहित्य वाचस्पति
तथा 'ललित कला अकादमी' के फेलो के रूप में चयनित हुए।

बोध प्रश्न:

- हिन्दी साहित्य में गद्यगीत का प्रवर्तक किसे माना जाता है ?

- अज्ञेय ने रायकृष्ण दास के तीव्र स्मरण के लिए किन शब्दों का प्रयोग किया है?

कला के प्रति रायकृष्ण दास का समर्पण उनके द्वारा 1920 में स्वयं के खर्च से स्थापित 'भारतीय कला-परिषद्' की स्थापना से सिद्ध होता है, जो 1930 में नागरी प्रचारिणी सभा का अभिन्न अंग बना। आगे चलकर 1950 में उन्होंने काशी हिंदू विश्वविद्याल में 'भारत कलाभवन' की स्थापना की। जयशंकर प्रसाद प्रायः उनसे अपनी रचनाओं से संबंधित सलाह लिया करते थे। मैथिलीशरण गुप्त जी की 'भारत-भारती' तथा निराला के 'तुलसीदास' की भूमिका आदि में रायकृष्ण दास की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। रायकृष्ण दास की प्रमुख रचनाओं में 'ब्रजरज', 'भावुक' काव्य संग्रह, 'साधना'(1916), 'छायापथ' (1929), 'प्रवाह' (1931) आदि गद्यगीत उल्लेखनीय हैं। इनके संवादात्मक निबंधों में 'संलाप', 'प्रवाल' (1929), कहानी संग्रह के रूप में 'अनाख्या', 'सुधांशु', 'आँखों की थाह' तथा खलील जिब्रान के 'दि मैड मैन' का 'पगला' नाम से अनुवाद किया। इनके संस्मरण 'जवाहर भाई' तथा इनके द्वारा संपादित हिन्दी की त्रैमासिक पत्रिका 'कलानिधि' रायकृष्ण दास के बहुमुखी प्रतिभा की मिशाल प्रस्तुत करती है।

बोध प्रश्न:

- रायकृष्ण दास की रचनाओं का उल्लेख कीजिए।
- रायकृष्ण दास को किन-किन पुरस्कारों से सम्मानित किया गया ?

6.3.2. 'आचार्य रामचंद्र शुक्ल-कुछ संस्मरण' की कथावस्तु :

जब हमारी स्मृतियाँ साहित्यिक रूप में प्रस्तुत होती हैं, तो इसे संस्मरण कहा जाता है। संस्मरण शब्द 'स्मृ' धातु में 'ल्युट' प्रत्यय के योग से निर्मित हुआ है। इसका शाब्दिक अर्थ है सम्यक् स्मरण करना। अर्थात किसी घटना, वस्तु, दृश्य अथवा व्यक्ति विशेष से संबंधित संदर्भों को आत्मीय तथा मर्मस्पर्शी रूप में प्रस्तुत करना। इस विधा में भाव प्रवणता, चित्रोपमता, वैयक्तिकता तथा यथार्थवादिता आदि केंद्र में होता है। हिन्दी साहित्य में आचार्य रामचंद्र शुक्ल भारतीय एवं पाश्चात्य विचारों के प्रकांड पंडित के रूप में प्रतिष्ठित हैं। आलोचना जगत में इनके विचारों के सम्यक स्वरूप को देखा जा सकता है। हिन्दी निबंध साहित्य को वैश्विक स्तर प्रदान करने में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। रायकृष्ण दास द्वारा 'आचार्य रामचंद्र शुक्ल-कुछ संस्मरण' में किस्सागोई पद्धति को अपनाते हुए लेखक द्वारा पूरे संस्मरण में अपनेपन के भाव को देखा जा सकता है। 'मेरा यह कहना कि आचार्य शुक्ल को मैं जानता था, अधूरा सत्य होगा, वस्तुतः मेरी उनकी अंतरंगता थी।'

प्रायः शुक्ल जी अपने निबंधों में गंभीर विषयों को सरल बनाने के लिए लोकोक्तियों, काव्योक्तियों के साथ प्रस्तुत करते थे, जिसे हिन्दी जगत में शुक्ल की ललित उड़ान शैली कहा जाता है। इसी संस्मरण का एक अंश यहाँ देखा जा सकता है, 'उसकी इस सज्जनता का लाभ साहित्यिक मगरमच्छ भी उठाते। जैसे सिंदबाद को एक ऐसे लुंजे से काम पड़ा था जिसने उसके कंधे पर सवारी कस ली थी और इस प्रकार यथेष्ट विचरण भी किया करता था। यह हाल एक महाशय ने शुक्ल जी का कर रखा था। उनकी कृतियों पर कृतियाँ आत्मसात किए जा रहे थे।'

बोध प्रश्न:

- आचार्य शुक्ल की सज्जनता का लाभ कौन उठाते थे ?
- आचार्य शुक्ल से किसकी अंतरंगता थी?

शुक्ल जी एक युगपुरुष थे। शुक्ल जी की प्रतिभा रातो-रात सामने न आयी थी। बल्कि समय की कसौटी पर धीरे-धीरे निखरी थी। लेखक ने संस्मरण लिखने में किसी प्रकार की अंधभक्ति नहीं दिखाई है। वे शुक्ल जी की सृजनधर्मिता के साक्षी रहें हैं। रायकृष्ण दास शुक्ल की लेखकीय विशेषताओं के साथ ही उनकी कमियों पर भी पैनी दृष्टि रखते थे। लेखक का शुक्ल जी के विचारों के प्रति अटूट विश्वास था, जो इस वाक्य में दृष्टव्य है- ' 'वस्तुतः शुक्ल जी आलोचना के पथिकृत थे, उनके कुछ निष्कर्षों से वर्तमान पीढ़ी चाहे सहमत न हो,फिर भी वह चल रही है- उन्हीं के दिखाए पथ पर।'

रायकृष्ण दास ने शुक्ल जी की प्रतिभा के लिए उनके अथक प्रयास और अभ्यास की सराहना की है। मिर्ज़ापुर जिले के साधारण शिक्षक से हिन्दी साहित्य के महान आलोचक और निबंधकार बनने में उनके विस्तृत एवं गहन अध्ययन का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। शुक्ल जी के गंभीर एवं विनोदी प्रवृति को रायकृष्ण दास ने बड़े ही चुटीले अंदाज में प्रस्तुत किया है। कुछ विद्वानों का मंतव्य रहा है कि संस्मरण का उपयोग जीवनी के सन्दर्भ में अधिक उपयोगी होगा। इस दृष्टि ये रायकृष्ण दास का यह संस्मरण सटीक बैठता है। शुक्ल जी की रचनाधर्मिता को निखरने का अवसर काशी के नागरी प्रचारिणी सभा में प्राप्त हुआ। शुक्ल जी की अथक साहित्यिक साधना ने सोने पर सुहागा का कार्य किया। उदाहरण के लिए संस्मरण में शब्दकोश में 'करना' शब्द के लिए सही अर्थ निर्धारण शुक्ल जी द्वारा किया जाना। जिस समय में हिन्दी साहित्य में मानक साहित्य कोश का आभाव था, ऐसे समय में शुक्ल जी द्वारा अन्य भारतीय भाषाओं के समृद्ध शब्दों के समक्ष हिन्दी के शब्दकोश को सुदृढ़ करना एक कड़ी चुनौती थी। ऐसे में स्वाधीनता आन्दोलन के स्वदेशी स्वर के रूप में खड़ीबोली हिन्दी को 1905 में सर्वसम्मति से स्वीकारते हुए खड़ीबोली के व्याकरण को सुदृढ़ करने की आवश्यकता महसूस की गयी। अब तक हिन्दी साहित्य

के रूप में ब्रज और अवधी भाषा का ही प्रयोग किया जाता रहा था। हिन्दी-उर्दू और हिंदुस्तानी भाषा का नया स्वर खड़ी बोली को आगे बढ़ने से रोक रहा था।

बोध प्रश्न:

- स्वाधीनता आन्दोलन के समय स्वदेशी स्वर किस भाषा को माना गया ?
- आचार्य शुक्ल मूलतः कहाँ के रहने वाले थे ?

जिस प्रकार तुलसीदास को नरहरिदास ने लोकनायकत्व के लिए तैयार किया, उसी प्रकार शुक्ल जी को केदारनाथ पाठक जैसे विद्वान् का आशीर्वाद प्राप्त था। जिस समय में शास्त्र चर्चा के अवसर पर विवाद होने पर शास्त्र चले और दूसरों के साहित्य को हडप कर अपना साहित्य बनाने का प्रचलन रहा हो, ऐसे समय में प्रेस ऐक्ट की जकड़ होने के बाद भी शुक्ल जी साहित्य जगत में चमक रहे थे, तो इसमें उनकी सदाशयता सर्वोपरी है। शुक्ल जी की निबंध और आलोचनाएँ हास्य-व्यंग्य के साथ प्रस्तुत होने के कारण जीवन के संघर्षों से जूझने के लिए प्रेरित करती रही हैं। प्रस्तुत संस्मरण में केदारनाथ पाठक के व्यक्तित्व और कृतित्व का परिचय प्रस्तुति के सन्दर्भ में आयोजित यात्रा के समय कुत्ते को भगाने का प्रसंग उल्लेखनीय है। उर्दू शायरी पर शुक्ल जी के ये वाक्य उनकी इसी प्रवृति को दर्शाते हैं- 'यह कविता है या अस्पताल। कहीं कोई जिगर की पीड़ा से तड़प रहा है, कहीं किसी का खून निकल जा रहा है, कहीं किसी के दिल पर नश्तर चल रहा है।'

हिन्दी की खड़ी बोली अपने विकास काल में जब शब्दों और व्याकरणिक प्रक्रिया से संघर्ष कर रही थी, तब शुक्ल जी तारणहार का कार्य करने के लिए प्रतिबद्ध थे। लेखक ने शुक्ल जी को हिन्दी आलोचना का 'पथिकृत' कहकर उन्हें सम्मानित किया है ,जिसका अर्थ संभवतः राह बताने या बनाने वाला होता है।

इस प्रकार कथात्मक तथा किस्सागोई शैली में प्रस्तुत इस संस्मरण आचार्य रामचंद्र शुक्ल के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का रोचक प्रस्तुतीकरण हुआ है। हिन्दी साहित्य में ऐसे लेख को धरोहर के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त हुई है। इस संस्मरण में विवरण, वर्णन, भाव, विचार, आत्मकथात्मक तथा हास्य-व्यंग्य शैली का उत्तम प्रयोग किया गया है।

बोध प्रश्न:

- शुक्ल जी को किसका आशीर्वाद प्राप्त था?
- हिन्दी की व्याकरणिक प्रक्रिया का संघर्ष किसके द्वारा सुलझाया गया ?

6.3.3. 'आचार्य रामचंद्र शुक्ल-कुछ संस्मरण' के प्रमुख पात्र का चरित्र-चित्रण :

'आचार्य रामचंद्र शुक्ल-कुछ संस्मरण' के माध्यम से लेखक ने हिन्दी साहित्य के आधुनिक कालीन साहित्य के आचार्य शुक्ल के समग्र व्यक्तित्व को बड़ी ही स्पष्टता एवं अपनेपन के साथ

प्रस्तुत किया है। आचार्य शुक्ल जितने बड़े साहित्यकार थे, उससे भी अधिक विशाल उनका व्यक्तित्व था। लेखक ने आचार्य शुक्ल के गुण, स्वभाव तथा साहित्य के प्रति उनके दृष्टिकोण के विविध कोणों को विवेचित करते हुए आचार्य शुक्ल के चरित्र की अत्यंत सुरुचिपूर्ण व्याख्या प्रस्तुत की है।

प्रस्तुत संस्मरण में हिन्दी साहित्य की रचना पर टिप्पणी करते हुए वे कहते हैं, 'साहित्य केवल भावुकता का खेल नहीं, बल्कि समाज और मानव जीवन का दर्पण होना चाहिए।' साहित्य के औचित्य का इससे अच्छा उदाहरण भला और क्या हो सकता है।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल के विचारों में स्पष्टवादिता उनकी लेखनी से व्यक्त होती है। वैसे तो वे संवेदनशील साहित्यकार थे, किन्तु सत्य और सार्थक रचना के लिए वे बेझिझक अपने विचार व्यक्त करते थे। एक नवोदित रचनाकार के द्वारा अपनी कविता पढ़े जाने के बाद उनकी टिप्पणी इस संदर्भ में उल्लेखनीय है – 'इसमें गहराई और मौलिकता का अभाव है। केवल शब्दों की सजावट से कविता महान नहीं बनती।' निश्चित रूप से ऐसी टिप्पणी निराशाजनक कही जाएगी, किंतु साहित्य का स्तर गिरने से बच जाएगा।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल के जीवन में अनुशासन का अत्यधिक महत्व था। वे स्वयं समय का महत्त्व समझते थे, साथ ही वे सामने वालों से भी इसी की अपेक्षा किया करते थे। प्रस्तुत संस्मरण में एक स्थान पर लेखक ने उल्लेख किया है कि जब एक विद्यार्थी उनके व्याख्यान में देर से आया, तो उसे आचार्य शुक्ल ने कक्षा से बाहर भेजते हुए कहा- 'जिसे समय की कद्र नहीं, वह ज्ञान अर्जित करने के लायक नहीं।'

मिर्ज़ापुर से संबंधित होते हुए भी शुक्ल जी दिखावे से कोसो दूर रहते थे। क्योंकि उस स्थान से जुड़ी कहावतें वहाँ के दिखावे वाली जिंदगी को व्यक्त करती है। आचार्य शुक्ल प्रायः खादी के वस्त्र पहनते थे। वे पैदल चलना अधिक पसंद करते थे। लेखक रायकृष्ण दास लिखते हैं –'उनकी सादगी में एक प्रकार का आकर्षण था, जो उनकी विद्वता को और प्रभावशाली बनाता था।'

आचार्य शुक्ल अपने समय के हिन्दी साहित्यकारों के लिए पथ प्रदर्शक साहित्यकार थे। संस्मरण में एक स्थान पर लेखक ने इस बात का उल्लेख करते हुए लिखा है। जब एक बार हिन्दी का नया लेखक अपनी कहानी लेकर शुक्ल जी के पास आया तो उसे पढ़कर उन्होंने कहा कि –' भाषा सरल और प्रवाहमई है लेकिन पात्रों के संघर्ष को और गहराई से चित्रित करें।' जब बाद में लेखक ने अपनी कहानी में परिवर्तन करके पुनः दिखाया, तो उसकी उन्होंने खूब प्रशंसा की।

आचार्य शुक्ल जी ऊपर से नारियल की भांति कठोर तथा अन्दर से अत्यंत मृदुल थे। अपने बीमार विद्यार्थी की दयनीय आर्थिक स्थिति से द्रवित होकर उसे आर्थिक सहायता देते हुए कहा

कि- 'ज्ञान का दीप जलाने के लिए आवश्यक है कि जीवन की प्राथमिक समस्याओं का समाधान पहले हो।'

आचार्य शुक्ल साहित्य को समाज की समस्याओं तथा कुरीतियों को दूर करने के लिए सहायक मानते थे। वे कहते थे- 'समाज को प्रगति के मार्ग पर ले जाने के लिए इन अवरोधों को समाप्त करना होगा। साहित्य को भी इसमें योगदान देना चाहिए।'

इस प्रकार लेखक ने 'आचार्य रामचंद्र शुक्ल-कुछ संस्मरण' लेख में आचार्य शुक्ल के विविधमुखी व्यक्तित्व का चित्रण किया है। इस लेख में शुक्ल के चारित्रिक औदात्य को निरुपित किया गया है।

बोध प्रश्न:

- आचार्य शुक्ल के साहित्य के संदर्भ में क्या विचार थे ?
- आचार्य शुक्ल का व्यक्तित्व किस प्रकार का था ?

6.3.4. 'आचार्य रामचंद्र शुक्ल-कुछ संस्मरण' में देश-काल का चित्रण:

रायकृष्ण दास ने प्रस्तुत संस्मरण में उस काल के देशकाल को जीवंत प्रस्तुति दी है। जैसे साहित्यिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक गतिविधियों का विविध घटनाओं के माध्यम से लेखक ने चित्रण किया है।

जिस समय में हिन्दी साहित्य रचना के लिए ब्रज और अवधी भाषा से खड़ीबोली में प्रवेश कर रहा था, ऐसे में मानकता का निर्धारण बहुत जरुरी था। रीतिकालीन हिन्दी साहित्य धारा अपने समय की आवश्यकता को पूरा करने के लिए गद्य की विविध विधाओं में लिखा जाने लगा था। शुक्ल जी साहित्य को समाज से हटकर कल्पना भी नहीं करते थे, इसलिए रीतिकालीन साहित्य और साहित्यकारों की उन्होंने कड़ी आलोचना की है। शुक्ल जी के शब्दों में – 'यह साहित्य केवल राजदरबार की चाटुकारिता है। साहित्य का उद्देश्य समाज के जीवन को प्रेरणा देना और मानवीय संवेदनाओं को जागृत करना होना चाहिए।

हिन्दी साहित्य जगत में जिस समय शुक्ल जी ने प्रवेश किया था, उस समय हमारा भारतीय समाज कई तरह की बुराइयों से जकड़ा हुआ था। समाज में धर्म, जाति, रूढ़िवादिता, अंधविश्वास का बोलबाला था। प्रस्तुत लेख में रायकृष्ण दास ने शुक्ल जी के उस वक्तव्य का उल्लेख किया है, जिसमें उस समय के समाज के लिए शुक्ल जी के सुधारवादी विचार प्रकट हुए हैं। शुक्ल जी कहते हैं- 'साहित्य को जाति और धर्म की दीवारों को तोड़कर मानवता की सेवा करनी चाहिए। यदि यह समाज को नहीं बदलेगा, तो इसका उद्देश्य अधूरा रह जाएगा।' शुक्ल जी साहित्य को समाज का स्पष्ट और स्वच्छ दर्पण बनाने के हिमायती थे।

शुक्ल जी अपने समय के स्वतंत्रता आन्दोलन और स्वदेशी प्रचार अभियान से पूर्णतः प्रभावित थे। यही कारण है कि उनका समग्र जीवन एवं साहित्य सांस्कृतिक जागृति का परिचायक बना। लेखक ने शुक्ल जी के स्वदेशी विचारों को इन शब्दों में व्यक्त किया है –' शुक्ल जी खादी पहनकर पैदल चलते थे। उन्होंने हमेशा विदेशी वस्त्रों और दिखावे से दूरी बनाए रखी।'
शुक्ल जी का हिन्दी साहित्य में प्रवेश हिन्दी आलोचना को ऐतिहासिक तथा सामाजिक व्याख्या को महत्त्व देता है। शुक्ल जी के शब्दों में –' साहित्य केवल शब्दों का संग्रह नहीं, यह अपने समय की चेतना का दस्तावेज होता है।'

शुक्ल जी के समय में जनसाधारण का जीवन संघर्षपूर्ण तथा अत्यंत साधारण था। शुक्ल जी अपने जीवन को उसी के अनुरूप जीते थे। वे प्रायः खादी के वस्त्र पहनते थे। घर का भोजन करते थे, साथ ही कहीं भी वे पैदल आते-जाते थे। उनके पास साधन आवश्यकता के अनुरूप ही होते थे।

लेखक ने प्रस्तुत लेख में देश-काल का बड़ा ही सूक्ष्म, संक्षिप्त और सजीव चित्रण किया है। आचार्य शुक्ल का व्यक्तित्व उन्हीं परिस्थितियों के अनुरूप प्रस्तुत हुआ है।

बोध प्रश्न:

- आचार्य शुक्ल के लेखन काल में साहित्यिक वातावरण किस प्रकार का था?
- आचार्य शुक्ल के अपने समय के समाज के बारे में क्या विचार थे ?

6.3.5. 'आचार्य रामचंद्र शुक्ल-कुछ संस्मरण' में कथोपकथन

रायकृष्ण दास की रचना 'आचार्य रामचंद्र शुक्ल –कुछ संस्मरण' में लेखक ने कथोपकथन को अत्यंत रोचक स्वरूप में प्रस्तुत किया है। कथोपकथन के द्वारा शुक्ल जी के व्यक्तित्व और कृतित्व का परिचय अधिक प्रभावी बन गया है। लेख में प्रस्तुत कथोपकथन शुक्ल जी के व्यक्तित्व के कई बिंदुओं को जीवंत बनाते हैं। जिन्हें इस प्रकार समझा जा सकता है –

शुक्ल जी की दृष्टि अत्यंत स्पष्ट एवं साहित्य के प्रति पूर्णतः प्रतिबद्ध थी। प्रस्तुत लेख में जब नवोदित कवि कहते हैं- 'आचार्य जी, मेरी कविता के बारे में आपकी राय जानना चाहता हूँ।' तो वे उनकी कविता पढ़कर कहते हैं-'भाषा तो ठीक है, लेकिन कवि होने के लिए केवल शब्दों की सजावट पर्याप्त नहीं। भावों की गहराई कहाँ है? कविता में जीवन का यथार्थ और समाज का प्रतिबिंब होना चाहिए।'

शुक्ल जी अपने जीवन में सख्त अनुशासन का पालन करते थे। वे अपने शिक्षण कार्य के प्रति अत्यंत गर्व का अनुभव करते थे। प्रस्तुत लेख में जब विद्यार्थी कक्षा में देर से पहुँचता है और क्षमा माँगते हुए कहता है-'आचार्य जी, गलती हो गई, रास्ते में देर हो गई।' तो वे कहते हैं –' समय

की पाबन्दी केवल घड़ी देखने के लिए नहीं, बल्कि जीवन का अनुशासन है। जो समय की कद्र नहीं कर सकता, वह जीवन में कुछ बड़ा नहीं कर सकता।'

रायकृष्ण दास को शुक्ल जी के साथ एक लंबे समय तक साथ रहने का अनुभव था। उन्होंने लेख में संवाद प्रस्तुति अत्यंत सटीक रूप में किया है। एक घटना का उल्लेख करते हुए लेखक ने बताया है कि किसी सभा में जब एक व्यक्ति ने शुक्ल जी की आलोचना शैली को केंद्र में रखकर कहा कि-'आचार्य जी, आपकी आलोचनाओं से लोग डरते हैं। क्या आपको नहीं लगता कि आप कुछ नरमी से काम ले सकते हैं?' तो वे कहते हैं – 'सत्य में नरमी हो सकती है, लेकिन वह कमजोर नहीं हो सकता। यदि लोग डरते हैं, तो यह उनकी तैयारी की कमी है, सत्य की कठोरता नहीं।'
आचार्य शुक्ल जी साहित्य को समाज का अभिन्न अंग मानते थे। उनका मानना था कि शब्द से साहित्य और साहित्य से समाज का अत्यंत प्रगाढ़ संबंध होता है। किसी कार्यक्रम के दौरान शिष्य द्वारा यह पूछे जाने पर कि –'गुरूजी, क्या साहित्य समाज को बदलने का माध्यम हो सकता है?' इस पर वे कहते हैं 'साहित्य केवल शब्दों का खेल नहीं है। यह समाज का दर्पण है और सुधार का साधन भी। यदि साहित्य समाज की कुरीतियों पर प्रहार नहीं करेगा, तो उसका उद्देश्य ही समाप्त हो जाएगा।'

आचार्य शुक्ल की सादगी, संपन्नता और गहन जीवन दृष्टि इस कथोपकथनों में स्पष्टतः देखा जा सकता है। जब एक व्यक्ति उनकी सादगी पर रीझ कर पूछता है –'आचार्य जी, आप इतने बड़े विद्वान् हैं, लेकिन जीवन में इतने साधारण क्यों ?' तब वे कहते हैं –' सादगी से बड़ा कोई आभूषण नहीं। विद्या और आडम्बर का साथ नहीं हो सकता। बाहरी सजावट ज्ञान को ढँक लेती है।'
इस प्रकार इस संस्मरण को कथोपथनों के माध्यम से लेखक ने अपने समय के सामाजिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक विषयों को सजीव बना दिया गया है। विशेष रूप से लेखक रायकृष्ण दास द्वारा आचार्य शुक्ल जी के साथ जिए हुए क्षण को अधिक ग्राह्य बना दिया है।

रायकृष्ण दास के 'आचार्य रामचंद्र शुक्ल-कुछ संस्मरण' का भाषा-सौष्ठव उनके व्यक्तित्व और विचारों की गहराई को अत्यंत प्रभावी रूप से प्रस्तुत करता है। इसमें भाषा की सरलता, भावप्रवणता, और व्यावहारिकता का अनूठा मेल दिखाई देता है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल की शैली में विषय को सहजता से प्रस्तुत करने की अद्भुत क्षमता थी, जो इस संस्मरण में भी झलकती है।

बोध प्रश्न:

- आचार्य शुक्ल ने सादगी को किस प्रकार परिभाषित किया है?
- शुक्ल की रचनाओं में समाज को क्या स्थान दिया गया है?

6.3.6. 'आचार्य रामचंद्र शुक्ल-कुछ संस्मरण' का भाषा-सौष्ठव :

विवेच्य संस्मरण में लेखक ने शुरू से अंत तक किस्सागोई के अंदाज में सरल शब्दों का प्रयोग किया है। भाषा में कहीं भी अनावश्यक अलंकरण अथवा आडंबर का प्रयोग किंचित भी नहीं हुआ है। रायकृष्ण दास इतने बड़े विद्वान् होते हुए भी अपनी विद्वता का प्रदर्शन कभी नहीं करते थे। यही कारण है कि अपने सहज स्वभाव के कारण हिन्दी जगत के लोग उनकी ओर खींचे चले आते थे। संस्मरण में सर्वत्र आत्मीयता झलकती है। लेखक की माधुर्यपूर्ण वाणी के द्वारा कठिन बातें भी अत्यंत सहज बन जाती थीं। रायकृष्ण दास के संस्मरण में चित्रात्मक भाषा का जीवंत अनुभव होता है। लेखक ने पूरे पाठ में एक व्यवस्थित भाषा का प्रयोग किया है। साहित्य ही नहीं, वे मानव जीवन की भी गहरी समझ रखते थे। यही कारण है कि उनकी रचानाओं में जीवन का व्यावहारिक पक्ष भी साहित्य के समान ही प्रस्तुत हुआ है। संस्मरण में विचारों की स्पष्टता तथा प्रस्तुति की प्रामाणिकता लेखक के भाषिक सौष्ठव का परिचायक है।

बोध प्रश्न:

- विवेच्य संस्मरण में कैसी भाषा का प्रयोग किया गया है?

6.3.7. 'आचार्य रामचंद्र शुक्ल-कुछ संस्मरण' की शैली:

रायकृष्ण दास द्वारा लिखे गए संस्मरण 'आचार्य रामचंद्र शुक्ल- कुछ संस्मरण' की शैली वर्णनात्मक, संवादात्मक, आत्मपरक तथा प्रभावी रूप में प्रस्तुत किया गया है। संस्मरण की शैली को इस प्रकार से समझा जा सकता है-

लेखक ने शुक्ल जी के साथ अपने अनुभवों को बड़ी ही आत्मीयतापूर्वक प्रस्तुत किया है। लेखक ने अपनी भावनाओं को अपनेपन के साथ प्रस्तुत किया है। उदाहरण स्वरूप 'शुक्ल जी का व्यक्तित्व सरल था, लेकिन उनकी गहराई को समझना आसान नहीं था। उनकी आँखों में तीव्र बुद्धि और हृदय में गहरी संवेदनाएँ थीं।'

लेखक ने शुक्ल जी के व्यक्तित्व को अधिक प्रभावी स्वरूप में प्रस्तुत करने हेतु संवाद शैली को अपनाया है। शुक्ल जी की विद्वता इन संवादों के माध्यम से लेखक ने स्पष्ट की है। 'मैंने उनसे पूछा, 'गुरूजी, कविता की परिभाषा क्या है ?'

शुक्ल जी मुस्कराए और बोले, 'कविता वह है, जो हृदय को छुए और मस्तिष्क को झकझोरे। शब्दों का खेल नहीं, भावनाओं का आवेग कविता है।'

लेखक द्वारा शुक्ल जी के विविध जीवन प्रसंगों को व्यक्त करने के लिए संस्मरण में वर्णनात्मक शैली को अपनाया गया है। शुक्ल जी की सादगी औए उनके युग के परिवेश की प्रस्तुति इन वाक्यों में दृष्टव्य है-

'शुक्ल जी का कमरा अत्यंत साधारण था- दीवारों पर किताबों की आलमारियाँ, मेज पर कागज़ और कलम, और एक कोने में खादी का कुरता टंगा हुआ।'

प्रस्तुत संस्मरण में भाषा सरल होने के कारण अर्थ ग्रहण करना अत्यंत सहज एवं प्रभावी हो गया है। सरलता के साथ ही साहित्यिक एवं दार्शनिकतापूर्ण शैली इसकी अलग विशेषता बन गयी है। जैसे-'शुक्ल जी के शब्द केवल शब्द नहीं थे, वे जीवन के अनुभव और गहरी संवेदनाओं का संकलन थे। वे जितने सरल दिखते थे, उनकी विचारधारा उतनी ही गहन थी।'

आचार्य शुक्ल की बात बिना उनके आलोचक व्यक्तित्व के पूरी ही नहीं हो सकती है। प्रस्तुत लेख में आचार्य शुक्ल के विचारों की गंभीरता उनके आलोचक व्यक्तित्व का परिचायक है। उदाहरण के लिए –'शुक्ल जी का मानना था कि साहित्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि समाज के विचारों को दिशा देने का माध्यम है। उन्होंने रीतिकालीन साहित्य की सीमाओं को उकेरते हुए इसे यथार्थ के निकट लाने का प्रयास किया।'

हिन्दी साहित्य के बहुमुखी प्रतिभा संपन्न रचनाकार के प्रभावी व्यक्तित्व को लेखक ने अत्यंत रोचक स्वरूप में प्रस्तुत किया है।

बोध प्रश्न:

- लेखक ने शुक्ल जी के कमरे का किस प्रकार से चित्रण किया है ?
- कविता के संबंध में शुक्ल जी के क्या विचार थे ?

6.4 पाठ सार

रायकृष्ण दास द्वारा लिखे गए 'आचार्य रामचंद्र शुक्ल-कुछ संस्मरण' लेख में हिन्दी साहित्य जगत के महान विद्वान् आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। आचार्य शुक्ल के रचना पथ के साक्षी रायकृष्ण दास ने अत्यंत आत्मीयतापूर्वक चित्रण किया है। इस संस्मरण में आचार्य शुक्ल के विचारों, उनके स्वभाव और उनकी विद्वता से पाठकों को परिचित कराने का प्रयास किया गया है। आचार्य शुक्ल अत्यंत साधारण जीवन जीने वाले, किन्तु परम विद्वान् व्यक्ति थे। उनकी अनुशासनप्रियता, स्पष्टवादिता तथा तार्किक बुद्धि ने उन्हें कालजयी रचनाकार के रूप में ख्याति दिलाई है।

हिदी साहित्य का व्यवस्थित इतिहास लेखक के रूप में आचार्य शुक्ल को ख्याति प्राप्त है। एक आलोचक तटस्थ भाव से साहित्य को साहित्य एवं समाज के मध्य सामंजस्य बिठाने का कार्य करता है। हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल को स्वर्णिम कहते हुए, उन्होंने जहाँ साहित्य के औदात्य पक्ष को प्रतिष्ठा दिलाई, वहीं रीतिकाल के साहित्य की कड़ी आलोचना भी की। शुक्ल जी हिन्दी साहित्य की आलोचना ऐतिहासिक तथा तार्किक आधार पर करते हुए साहित्य को समाज सुधार का केंद्र मानते थे।

एक आदर्श शिक्षक के रूप में आचार्य शुक्ल ने अपने विद्यार्थियों को भाषा और विचारों की गहराई से परिचित कराया। शुक्ल जी के अनुसार, साहित्य को मात्र मनोरंजन का माध्यम नहीं होना चाहिए, बल्कि मानवता की भावना का पोषक होना चाहिए। वे समाज और संस्कृति के प्रति सदैव समर्पित रहें। सामाजिक कुरीतियों पर वे सदा खुलकर बात करते थे। आचार्य शुक्ल का सादगी भरा जीवन उनके स्वदेशी आन्दोलन एवं गाँधीवादी विचारों का प्रतीक है। साहित्य में रचनात्मकता को वे सदैव बढ़ावा देते रहें। रायकृष्ण दास ने कुछ प्रसंगों के माध्यम से उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व को प्रभावशाली ढंग से व्यक्त किया है। आचार्य शुक्ल के स्पष्टवादिता, सत्यनिष्ठा तथा अनुशासन पूर्ण व्यक्तित्व को उन के जीवन से जुड़े विविध प्रसंगों के माध्यम से लेखक ने प्रस्तुत किया है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि इस संस्मरण में केवल एक साहित्यकार का परिचय नहीं है, बल्कि उस समय की सामाजिक, सांस्कृतिक तथा साहित्यिक झाँकी को प्रस्तुत किया गया है। यदि इसे हिन्दी साहित्य का अमूल्य संस्मरण कहा जाय, तो अत्युक्ति न होगी।

6.5 पाठ की उपलब्धियाँ

उपर्युक्त इकाई के अध्ययन के द्वारा निम्नलिखित जानकारियाँ प्राप्त हुईं ;

1. 'आचार्य रामचंद्र शुक्ल-कुछ संस्मरण' के विवेच्य विषय की जानकारी प्राप्त हुई।
2. 'आचार्य रामचंद्र शुक्ल-कुछ संस्मरण' के लेखक का परिचय मिला।
3. 'आचार्य रामचंद्र शुक्ल-कुछ संस्मरण' के प्रमुख पात्र आचार्य शुक्ल के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से परिचित हुए।
4. प्रस्तुत पाठ के द्वारा संस्मरण के कला पक्ष की यथोचित जानकारी मिली।
5. हिन्दी साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले आचार्य रामचंद्र शुक्ल के लेखकीय अवदान का परिचय प्राप्त हुआ।

6.6 शब्द संपदा

1. घनिष्ठ	=	गहरी
2. दुरूह	=	कठिन
3. दक्ष	=	कुशल
4. रीझे	=	प्रसन्न होना
5. खीझे	=	क्रोधित होना
6. सरबस	=	सब कुछ

7. विलक्षण = अनोखा

8. अवशेष = बचा हुआ

9. तरहदारी = साज-सज्जा

10 शकुन = शुभ संकेत

11. उत्तरोत्तर = एक के बाद, दूसरा

12. अक्खडपन = उग्रता

13. अनखाकर = अप्रसन्न होना

14. साहचर्य = साथ

15. धावा = हमला

16. व्यवधान = बाधा

17. गहन = गंभीर

18. उदित = सामने आना

19. अद्वितीय = तुलनारहित

20. परिहास = मजाक

21. छिद्रान्वेशी = कमी निकालने वाले

22. तारणहार = पार ले जाना

23. प्रगाढ़ = गहरा

24. ग्राह्य = लेने योग्य

25. आडंबर = दिखावा

26. आवेग = जोश।

6.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड –अ

अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न : निम्नलिखित प्रश्नों के 250 शब्दों में उत्तर लिखिए-

1. आचार्य रामचंद्र शुक्ल के व्यक्तित्व का विस्तार से परिचय दीजिए।

2. रायकृष्ण दास की साहित्यिक विशेषताएँ बताइए।

3. आचार्य रामचंद्र शुक्ल-कुछ संस्मरण' की कथावस्तु पर विस्तार से चर्चा कीजिए।

4. आचार्य रामचंद्र शुक्ल-कुछ संस्मरण' के कला पक्ष का उल्लेख कीजिए।

खंड – ब

आ) लघु श्रेणी के प्रश्न : निम्नलिखित प्रश्नों के 150 शब्दों में उत्तर लिखिए-

1. आचार्य शुक्ल की चरित्रिक विशेषताएँ बताइए।

2. आचार्य शुक्ल के आलोचक स्वरूप को व्यक्त कीजिए।

3. आचार्य रामचंद्र शुक्ल-कुछ संस्मरण' के कथोपकथन को उदाहारण सहित प्रस्तुत कीजिए।

4. आचार्य रामचंद्र शुक्ल-कुछ संस्मरण' के लेखन काल में हिन्दी के साहित्यिक वातावरण का परिचय दीजिए।

खंड – स

इ) वैकल्पिक प्रश्न :

I. सही विकल्प चुनिए -

1. 'यह कविता है या अस्पताल..' –यह वाक्य उर्दू शायरी के लिए किसने कहा **?**

अ) रायकृष्ण दास **आ)** आचार्य शुक्ल **इ)** चौधरी बदरीनारायण

2. 'संस्मरण' शब्द किस धातु रूप से निर्मित हुआ है?

अ) स्मृ **आ)** स्मरण **इ)** संस्मन

3. काशी की नागरी प्रचारिणी सभा ने हिन्दी का बृहत्कोश निकालने का निश्चय कब किया?

अ) 1906में **आ)** 1908 में **इ)** 1907में

4. शुक्लजी किससे प्रभावित होकर हिन्दी क्षेत्र में आए?

अ) रायकृष्ण दास **आ)** केदारनाथ पाठक **इ)** चौधरी बदरीनारायण उपाध्याय

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

1. .....का स्वभाव ऐसा था कि 'रीझे सरबस देत हैं, खीझे दण्ड कठोर।'।

2. केदारनाथ पाठक के व्यक्तित्व और कृतित्व के सन्दर्भ में आयोजित यात्रा के समय .....को भगाने का प्रसंग उल्लेखनीय है।

3. काशी में सन्..... में शुक्लजी से राय कृष्णदास का परिचय हुआ।

4. नागरी प्रचारिणी सभा के प्राण ..... थे।

अIII. सुमेल कीजिए –

1. 'मनोवृत्तियों का विकास' शीर्षक लेखमाला **अ)** 1892

2. रायकृष्ण दास का जन्म **आ)** 1918

3. 'भारतीय कला-परिषद्' **इ)** 1980

4. काशी हिंदू विश्वविद्याल में 'भारत कलाभवन' की स्थापना **ई)** 1920

5. रायकृष्ण दास को 'पद्म विभूषण' सम्मान **उ)** 1950

6.8 पठनीय पुस्तकें

1. राय कृष्णदास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल-कुछ संस्मरण
2. शर्मा,रामविलास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल और हिन्दी आलोचना
3. शुक्ल, आचार्य रामचंद्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास
4. शुक्ल, आचार्य रामचंद्र, रस मीमांसा
5. द्विवेदी(डॉ.) परमात्मा नाथ, आचार्य रामचंद्र शुक्ल स्मृति ग्रंथ

इकाई 7 : संस्मरण : महाकवि जयशंकर प्रसाद (शिवपूजन सहाय) की विवेचना

इकाई की रूपरेखा -

7.1. प्रस्तावना

7.2. उद्देश्य

7.3. मूल पाठ : संस्मरण महाकवि जयशंकर प्रसाद (शिवपूजन सहाय) की विवेचना

7.3.1 लेखक का परिचय

7.3.2 कथावस्तु

7.3.3 प्रमुख पात्र/ पात्रों का चरित्र-चित्रण

7.3.4 देश-काल चित्रण

7.3.5 भाषा-सौष्ठव और शैली

7.4 पाठ सार

7.5 पाठ की उपलब्धियाँ

7.6. शब्द संपदा

7.7. परीक्षार्थ प्रश्न (दीर्घ, लघु, वस्तुनिष्ठ)

7.8. पठनीय पुस्तकें एवं ऑनलाइन संदर्भ।

7.1 प्रस्तावना

प्रिय छात्रो! स्मृति के आधार पर किसी विषय, व्यक्ति, स्थान पर लिखित आलेख को 'संस्मरण' कहा जाता है। संस्मरण को 'साहित्यिक निबंध' कहना भी पूर्णतया गलत नहीं होगा। हिन्दी के प्रारम्भिक संस्मरण लेखक के रूप में पद्मसिंह शर्मा का नाम लिया जाता है। इनके अलावा महादेवी वर्मा, बनारसीदास चतुर्वेदी, रामवृक्ष बेनीपुरी आदि का नाम प्रमुख रूप से लिया जाता है। संस्मरण को अंग्रेजी में 'Memoirs' कहा जाता है। डॉ. नगेंद्र ने संस्मरण को 'व्यक्ति का अनुभव तथा स्मृति से रचा गया इतिवृत्त अथवा वर्णन' कहा है। अतः संस्मरण में तीन तत्वों का रहना बहुत आवश्यक है- चित्रात्मकता, कथात्मकता, और तटस्थता। प्रस्तुत इकाई में आपको शिवपूजन सहाय के संस्मरण के माध्यम से जयशंकर प्रसाद को जानने का अवसर मिलेगा।

7.2 उद्देश्य

प्रिय छात्रो! इस इकाई के अध्ययन के उपरांत आप-

- संस्मरणात्मक रेखाचित्र के प्रमुख बिंदुओं को समझ सकेंगे।
- शिवपूजन सहाय के जीवन की मुख्य बातों को समझ सकेंगे।
- जयशंकर प्रसाद के चरित्र की विशेषताओं से अवगत हो सकेंगे।

- तत्कालीन देशकाल की परिस्थितियों से अवगत हो सकेंगे।

7.3 मूल पाठ : संस्मरण : महाकवि जयशंकर प्रसाद (शिवपूजन सहाय) की विवेचना

7.3.1 लेखक का परिचय-

शिवपूजन सहाय का जन्म 1 अगस्त, 1893 को बिहार के भोजपुर जिले के उनवांस गाँव में हुआ। पहले उनका नाम भोलानाथ रखा गया था। दसवीं पास करने के बाद वे बनारस चले गए और वहीं बनारस की अदालत में नकलनवीस की नौकरी में लग गए। कई सालों तक इस नौकरी को करने के बाद वे अध्यापन पेशे के साथ जुड़ गए। उन्होंने स्वाधिनता आंदोलन में सक्रिय रूप में भाग लिया था। असहयोग आंदोलन के साथ जुड़ने के लिए उन्होंने अपनी सरकारी नौकरी से भी त्यागपत्र दे दिया था और साहित्यिक पत्रकारिता के साथ जुड़ गए। देश सेवा का काम वे पूर्ण मनोयोग के साथ करना चाहते थे। उन्होंने पत्रकारिता के द्वारा देश में चेतना लाने को अपना लक्ष्य बनाया। इसी कारण से वे सन् 1921 में कलकत्ता में सबसे पहले 'मारवाड़ी सुधार' के संपादन का काम किया। इसके बाद 1923 से 'मतवाला' पत्रिका का संपादन करने लगे। सन् 1924 में वे लखनऊ चले गए वहाँ उन्होंने 'माधुरी' पत्रिका के संपादकीय विभाग में काम करने लगे। वहीं वे प्रेमचंद के कार्य-सहयोगी बने साथ ही प्रेमचंद की 'रंगभूमि' तथा कुछ अन्य कहानियों के संपादन का भी काम किया। सन् 1925 वे फिर कोलकाता लौट गए और वहाँ समन्वय, मौजी, गोलमाल, उपन्यास तरंग जैसी कुछ अल्पकालिक पत्रिकाओं का संपादन किया। सन् 1926 में वे काशी चले गए और वहाँ स्वतंत्र पत्रकार के रूप में काम करने लगे। सन् 1932 में जयशंकर प्रसाद और उनके मित्रमंडली द्वारा प्रकाशित होनेवाली पाक्षिक साहित्यिक पत्रिका 'जागरण' के साथ वे जुड़े इस दौरान वे प्रेमचंद के कार्य-सहयोगी रहे। सन् 1939 में उन्हें राजेंद्र कॉलेज, छपरा में हिन्दी प्राध्यापक के रूप में उन्हें नियुक्त किया गया। वर्ष 1950 में शिवपूजन सहाय जी को 'बिहार राष्ट्र भाषा परिषद' का सचिव नियुक्त किया गया इस पद पर कर्मरत रहते हुए उन्होंने हिन्दी संदर्भ ग्रंथों के 50 से अधिक संस्करणों का संपादन और प्रकाशन किया। बाद में 'बिहार राष्ट्र भाषा परिषद' के वे निर्देशक भी नियुक्त हुए थे। उनके द्वारा लिखित प्रमुख रचनाएँ- देहाती दुनिया, महिला महत्व, विभूति, वे दिन वे लोग, माता का आँचल, ग्राम सुधार आदि है। उन्होंने द्विवेदी अभिनंदन ग्रंथ, जयंती स्मारक ग्रंथ, हिन्दी साहित्य और बिहार, बिहार की महिलाएँ आदि पुस्तकों के संपादन का भी कार्य किया। उनके द्वारा किए गए कार्यों को उनके पुत्र मंगल मूर्ति द्वारा संपादित पुस्तक 'शिवपूजन सहाय साहित्य समग्र' के 10 खंडों में प्रकाशित किया गया है। इस पुस्तक का प्रकाशन सन् 2011 में किया गया। 'बिहार राष्ट्र भाषा परिषद' ने भी 'शिवपूजन रचनावली' के नाम से उनकी रचनाओं का संपादन और प्रकाशन सन् 1956-59 के बीच में 4 खंडों में करवाया।

सन् 1960 में भारत सरकार ने उन्हें 'पद्म भूषण' की उपाधि से सम्मानित किया। उनके नाम से डाक टिकट भी जारी किया गया है। शिव पूजन सहाय जी की मृत्यु 1 जनवरी सन् 1963 में हुई।

बोधगम्य प्रश्न

1. शिव पूजन जी के पुत्र का नाम क्या है?

2. 'मतवाला' पत्रिका का संपादन उन्होंने किस सन् में किया?

3. वे किस संस्था के निर्देशक नियुक्त हुए थे?

4. सन् 1960 में भारत सरकार ने उन्हें किस सम्मान से सम्मानित किया था?

7.3.2 कथावस्तु-

प्रस्तुत रेखाचित्र/संस्मरण जिसका नाम है 'महाकवि जयशंकर प्रसाद' शिव पूजन सहाय जी के द्वारा लिखित है। वे जयशंकर प्रसाद जी के सान्निध्य में कैसे आए? यह बताने से पहले उन्होंने उन सभी घटनाओं की चर्चा की है जिनके द्वारा वे 'प्रसाद' जी के सान्निध्य को प्राप्त कर सके। अपनी जीवनयात्रा को सांझा करते हुए उन्होंने लिखा है सन् 1912 में वे मैट्रिक पास करने के बाद ही वे मुगलसराय चले गए जहाँ उनकी दूसरी शादी के जो बड़े साले थे वे रेलवे में गार्ड थे। उन्हीं के सान्निध्य और संगति में रहते हुए ही शिवपूजन जी ने पं. बदरी द्विवेदी जो राजघाट काशी स्टेशन पर टिकट चेकर थे और पं. शिवप्रसाद द्विवेदी जो बनारस के दीवानी अदालत में मुनसरिम थे को जाना पहचाना था। इन्हीं मुनसरिम साहब की सिफ़ारिश के द्वारा ही शिवपूजन सहाय जी को बनारस की दीवानी अदालत में हिन्दी नकलनवीस के रूप में नियुक्त हुए। सिफ़ारिश से शिवपूजन जी नियुक्त हुए जैसे यह एक सच है ठीक वैसे ही एक सच यह भी है है कि शिवपूजन जी ने निर्भीक होकर यह भी स्वीकार किया है कि सिफ़ारिश के बाद भी नियुक्ति से पहले सहाय जी को योग्यता परीक्षा देनी पड़ी। इस परीक्षा के अंतर्गत उनकी वर्तनी, लिखावट की शैली आदि को वकील बाबू गौरीशंकर प्रसाद ने जाँचा था। सन् 1909 में जब सहाय जी इंट्रेस क्लास में थे तब उर्दू-फारसी को पढ़ा था। सन् 1910 में जब वे इंट्रेस ही मैट्रिक हो गया तब सहाय जी ने संस्कृत-हिन्दी की भी पढ़ाई की थी। सहाय जी उर्दू को भी फारसी लिपि में ख़ुशख़त लिख पाते थे। इस प्रकार से शिवपूजन सहाय बहुभाषाविद व्यक्ति थे। जिस कारण से बाबू गौरीशंकर प्रसाद के साथ ही ऐडिशनल मुंसिफ़ बाबू रघुवरदयाल के भी वे स्नेहभाजन के पात्र बन सके थे। मुंसिफ़ बाबू रघुवरदयाल आगरा निवासी थे। उन्हीं के दफ्तर में एक और सज्जन व्यक्ति कार्यरत थे जिनका नाम राधाकृष्ण जी था। राधाकृष्ण जी गोवर्धनसराय मुहल्ले में रहनेवाले थे। गोवर्धनसराय मुहल्ले में ही जयशंकर प्रसाद रहते थे। उन्हीं के कारण से शिवपूजन सहाय जी को जयशंकर प्रसाद को देखने का अवसर मिला। शिवपूजन सहाय जी अवश्य ही हिन्दी प्रेमी थे। स्कूल में जब वे पढ़ते थे तब आरा की नागरी प्रचारिणी सभा में प्रायः जाया करते थे। अब वे अदालत से छुट्टी मिलने के बाद काशी नागरी प्रचारिणी सभा में जाने लगे। शिवपूजन सहाय जी ने लिखा है दूर से ही वे बाबू श्यामसुंदर दास तो कभी प्रसाद जी को देख लिया करते थे। शिवपूजन सहाय जी उन्हें दूर से

देखकर ही तृप्त हो जाया करते थे। संकोच के मारे अपना परिचय भी नहीं दे पाते थे। आरा के नागरी प्रचारिणी सभा में सहाय जी ने 'इन्दु' पत्रिका को देखा था। उनके मन में इच्छा थी कि 'इंदु कार्यालय' को देखे। सभा के वाचनालय में एक पाठक के साथ उनकी भेंट हुई थी, उन्होंने ही सहाय जी को 'इंदु कार्यालय' दिखाया था और ऐसे ही पहली बार जयशंकर प्रसाद को देखने का अवसर शिवपूजन सहाय जी को मिला था। एक व्यक्ति को जानना केवल उसे ही जानना नहीं होता है, अपितु उनके आसपास रहनेवाले व्यक्तियों को जानना-समझना भी रोमांचकारी होता है। यह तथ्य शिवपूजन सहाय जी के संस्मरणात्मक रेखाचित्र की कथावस्तु के विश्लेषण को देखने से हमें स्पष्टतया समझ आ ही जाता है। जयशंकर प्रसाद के साथ मिलने से पहले, उन्हें जानने से पहले, उनके बारे में लिखने से पहले वे दूसरे कई लोगों से मिल चुके थे, उनसे प्रभावित हो चुके थे, उन्हें अपने व्यक्तित्व के द्वारा प्रभावित कर चुके थे। इन सबकी विस्तारित जानकारी वे दे चुके थे। यही संस्मरणात्मक रेखाचित्र का अपना अलग सौंदर्य होता है। संस्मरणात्मक रेखाचित्र जैसे-जैसे आगे बढ़ता गया शिवपूजन सहाय जी भी प्रसाद के व्यक्तित्व के विभिन्न परतों को अपनी लेखनी के द्वारा खोलते चले गए। साथ ही साथ बनारस की तत्कालीन की जानकारी को प्रस्तुत करना नहीं भूले। काशी केवल एक तीर्थस्थान नहीं है। इस स्थान की अपनी एक अलग साहित्यिक पहचान भी है। शिवपूजन सहाय जी ने काशी और साहित्य के आपसी संबंध को व्यवस्थित सरल भाषा में पाठकों तक पहुंचाया है।

7.3.3 प्रमुख पात्र / पात्रों का चरित्र-चित्रण-

प्रस्तुत पाठ की कथावस्तु का अध्ययन करते हुए यह बात तो स्पष्ट हो गई है कि भले ही लेखक ने इस संस्मरणात्मक रेखाचित्र के केंद्र में जयशंकर प्रसाद को रखा है लेकिन प्रसाद जी के साथ ही साथ दूसरे कई साहित्यकार, भाषाविद, अधिकारियों को को जानने-समझने का अवसर भी यह पाठ देता है। उन सब विद्वतजनों की चारित्रिक विशेषताओं को जानना अवश्य ही लाभप्रद होगा-

1. **शिवपूजन सहाय-** 'महाकवि जयशंकर प्रसाद' संसमरणात्मक रेखाचित्र के लेखक तो है ही उन्होंने अपनी लेखनी के साथ-साथ अपने व्यक्तिगत सूचनाओं के द्वारा भी पाठकों को प्रभावित किया है। इसलिए उनकी चारित्रिक विशेषताओं को समझना आवश्यक हो जाता है-

स्पष्टवक्ता- संस्मरणात्मक रेखाचित्र के प्रारंभ में ही स्पष्ट हो गया है कि शिवपूजन सहाय जी अपने व्यक्तिगत और व्यावसायिक दोनों जीवन को लेकर स्पष्टवादी थे। उन्होंने निःसंकोच अपनी दूसरी शादी को स्वीकारा है, तो सिफ़ारिश से नौकरी मिलने की बात को छिपाया नहीं, संकोचवश वे कभी जयशंकर प्रसाद, प्रेमचंद आदि के सामने वे जा नहीं पाते थे। इसे भी उन्होंने सहज सरल शैली में स्वीकार किया है। ऐसे ही स्पष्टवक्ता लेखक मनुष्य रूप में सम्मानयोग्य होते हैं।

भाषाविद- शिवपूजन सहाय जी को केवल साहित्यकार कहना गलत ही होगा। उर्दू, फारसी, संस्कृत, हिन्दी भाषाओं पर उनका समान अधिकार था। अच्छी लिपि, सही वर्तनी आदि उनकी लेखनी की विशेषता तो है ही साथ ही उनमें पढ़ने की बड़ी भूख थी। हरेक वाचनालय में जाकर बैठना, पढ़ना उनके चरित्र की विशेषता रही।

देशकाल के जानकार- एक अच्छा साहित्यकार वह होता है जो निरपेक्ष होकर अपने देशकाल की सही जानकारी सबको दे पाता है। शिवपूजन सहाय जी ने स्पष्ट रूप में लिखा है, 'इस निर्मम संसार ने जीते-जी न प्रेमचंद को परखा, न 'प्रसाद जी' को और न 'निराला' को ही। जब ये संसार से चले गए तब इनके गुणगान के साथ यह भी अनुभूत होने लगा कि साहित्य-क्षेत्र में ये अमोघ मेधा-शक्ति लेकर आये थे'। इसी प्रकार से उन्होंने एक और घटना का उल्लेख करते हुए लिखा है, 'एक बार प्रेमचंद जी ने अपने 'हंस' में उनके ऐतिहासिक नाटकों पर संपादकीय मत प्रकट करते हुए लिख दिया था कि 'प्रसाद जी' प्राचीन इतिहास के गड़े मुर्दे उखाड़ा करते हैं। किंतु जिस समय यह मत प्रकाशित हुआ उस समय भी प्रेमचंद जी सदा की भांति 'प्रसाद जी' के साथ बैठकर निर्विकार चित्त से साहित्यिक संलाप करते रहे। दोनों महारथियों में कभी किसी प्रकार का मनोमालिन्य अथवा वैमनस्य नहीं हुआ'। यह घटना इस तथ्य को दर्शाती है कि वे एक बहुत अच्छे पर्यवेक्षक भी थे।

बोध प्रश्न

- संस्मरणात्मक रेखाचित्र के प्रारंभ में ही क्या स्पष्ट हो गया है?
- किसने लिखा था कि 'प्रसाद जी' प्राचीन इतिहास के गड़े मुर्दे उखाड़ा करते हैं?
- शिवपूजन सहाय जी कहाँ जाकर पुस्तक पढ़ते थे?

2. जयशंकर प्रसाद- 'महाकवि जयशंकर प्रसाद' प्रस्तुत संस्मरणात्मक रेखाचित्र के केंद्रबिंदु में प्रसाद जी हैं। इसी कारण से प्रस्तुत पाठ के द्वारा उनकी चारित्रिक विशेषताओं का सामने आना तो स्वाभाविक ही है। उनकी चारित्रिक विशेषताओं को नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है-

बहुमुखी प्रतिभासम्पन्न व्यक्ति- प्रसाद जी केवल साहित्यकार नहीं थे। वे एक कुशल व्यवसायी भी थे। ज़र्दा-सुर्ती की उनकी पुश्तैनी व्यवसाय सवा सौ साल पुरानी थी। उस व्यवसाय को प्रसाद जी ने कुशलता के साथ विकसित किया। साथ ही साथ वैदिक ऋचाएं, उपनिषदों के लच्छेदार वाक्य, रत्नशास्त्र से संबंधित जानकारी, शुभाशुभ लक्षणों की जानकारी आदि सब कुछ उनके पास उपलब्ध थे। उनकी स्मरणशक्ति उनके श्रोताओं के लिए हमेशा कौतूहल का विषय बना रहा। महान साहित्यकार तो वे थे लेकिन किसी कवि सम्मेलन में नहीं जाते थे। उनकी अपनी एक अलग मित्र मंडली हुआ करती थी जिनके लिए वे सस्वर उत्साह के साथ कविता पाठ किया करते थे।

कुशल हलवाई- प्रसाद जी कुशल हलवाई थे। शिवपूजन सहाय जी के संस्मरणात्मक रेखाचित्र के माध्यम से पता चलता है कि, 'भोटानी सौदागर जब शिलाजीत, पहाड़ी शहद, कस्तूरी आदि बेचने आते थे तब उनकी चीजों की परीक्षा करने में अद्‌भुत कौशल का परिचय देते थे'।

उनका अपना संयुक्त परिवार तो था ही साथ ही वे अपने मित्रों को भी आमंत्रित करना पसंद करते थे। जब भी ऐसा कोई अवसर आता था प्रसाद जी 'अपने ही हाथों से स्वादिष्ट भोजन बनाते थे। भोज आदि में यदि एक सौ अतिथियों को भोजन कराना है तो बादाम और पिस्ते की बर्फी बनवाने में कितना मेवा और मावा लगेगा, कितनी चीनी और केसर-इलायची पड़ेगी, इसका चिट्ठा भी तैयार करा देते थे और जबानी ही बोलकर लिखवाते थे'।

प्रसाद जी ने अपने जीवन और रुचि के द्वारा यूँ ही इस सत्य को स्थापित कर दिया था कि पाककला भी एक कला है और उसमें दक्षता स्त्री और पुरुष दोनों को रखनी चाहिए।

कुशल पहलवान- प्रसाद जी यौवनावस्था में कुश्ती लड़ा करते थे। उनका शरीर कसरती और गठीला था। उनके पास बैठने से पहलवानों के किस्से कहानियाँ सुनने को मिल जाती थी। वे कहानियाँ अवश्य ही रोचक और शिक्षाप्रद हुआ करती थी।

प्राचीन सभ्यता संस्कृति के रक्षक- जैसा कि हम सभी को पता है प्रसाद जी को प्राचीन भारतीय संस्कृति और सभ्यता से विशेष प्रेम था। यह प्रेम उनकी रचनाओं में भी झलकता है। उन्हें भारतीय होने पर, बनारसी होने पर गर्व था। 'किसी के प्रति उनके मन में कोई राग-द्वेष न था। उनकी अभ्यर्थना करने के लिए कई संस्थाओं से अनुरोध होते रह गए, पर वह सम्मानित होने के लिए कभी कहीं काशी के बाहर नहीं गए'। केवल वे साहित्यकार थे इस कारण से उनका ऐसा आचरण था ऐसा नहीं था। उनके व्यक्तिगत जीवन का अध्ययन करने से पता चलता है कि वे आजीवन अपने पारिवारिक नियमों, संस्कारों के प्रति भी आस्थावान थे। 'उनके घर पर दरवाजे के सामने जो शिव-मंदिर है उसमें फाल्गुनी महाशिवरात्री को महोत्सव हुआ करता था। उनके परिवार की यह पुरानी परंपरा थी। उनमें अधिकतर साहित्यिक-सेवियों का ही समागम होता था। उस गान-वाद्य के समारोह में भी काशी की कोई सर्वश्रेष्ठ गायिका केवल शास्त्रीय संगीत सुनाने आती थी। नृत्य नहीं होता था, पर गेय पद शुद्ध साहित्यिक आनंद देने वाले ही होते थे। बड़े शांतभाव से और बड़ी शिष्टता के साथ वह उत्सव संपन्न होता था। इसी प्रकार अपने वंश की मर्यादा का निर्वाह वह प्रत्येक पर्व पर करते थे'।

जीवट व्यक्तित्व- 'प्रसाद' ने अपने जीवन में कम उतार-चढ़ाव को नहीं देखा था। जीवन के प्रति उनमें असीम श्रद्धा थी। केवल 20 वर्ष की आयु ही तो थी, जब माता-पिता, बड़े भाई, जीवनसंगिनी के मृत्यु को उन्होंने देखा था। पारिवारिक मुक़द्दमे के प्रहार को झेला था। लेकिन अदम्य जिजीविषा ही थी हर बार 'शंकर' विषपान करने के बाद भी 'जय' को ही गले से लगाते थे। साहित्यिक जीवन, व्यक्तिगत जीवन में उन्होंने जिस सम्मान को कमाया वह बहुत कम लोग ही कमा पाते हैं। वे तो

सम्मान और अपमान दोनों को लेकर ही तटस्थ रहते थे। नेतृत्व सभी को देते थे लेकिन उनके नेतृत्व में 'राजा' होने का भाव नहीं था। फिर भी वे लोगों के लिए 'राजा' से कम भी नहीं थे। " 'प्रसाद जी' को देखते ही अनेक काशी-निवासी 'हर-हर-महादेव' मात्र कहकर उन्हें करबद्ध प्रणाम करते थे। यह प्रतिष्ठा बनारस में केवल काशी-नरेश को ही प्राप्त है। किंतु बड़े राग-रंग वाले धनी घराने में पैदा होकर भी अपने निष्कलंक चरित्र के प्रभाव से ही वह प्रतिष्ठा के आजीवन अधिकारी बने रहे"।

गौण पात्र- जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि भले ही शिवपूजन सहाय जी द्वारा लिखित प्रस्तुत संस्मरणात्मक रेखाचित्र के केंद्रबिंदु में प्रसाद जी हैं लेकिन उनके साथ-साथ अनेकों महानुभवों को जानने-समझने का संक्षिप्त ही सही लेकिन अवसर मिला है। हिन्दी संसार के सुप्रसिद्ध कालविद रायकृष्णदास जी प्राचीन भारतीय शिल्पकला और मूर्तिकला के ज्ञाता थे। लाला भगवानदीन शब्दों की व्युत्पत्ति और निरुक्ति पर पकड़ रखते थे। आचार्य रामचंद्र शुक्ल संस्कृत साहित्य की विविध प्रवृत्तियों के ज्ञाता थे, रत्नाकर ब्रजभाषा साहित्य की बारीकियों पर कुशलता के साथ चर्चा करते थे। प्रेमचंद के कथा साहित्य पर मनुष्य का मनोवैज्ञानिक पक्ष तो दिखाई पड़ता ही है साथ ही वे निर्भिक होकर अपने मन की बात रखते थे। जैसे उन्होंने हंस के संपादकीय में लिख दिया कि, " 'प्रसाद जी' प्राचीन इतिहास के गड़े मुर्दे उखाड़ा करते हैं"। इस घटना के बाद प्रसाद और प्रेमचंद के संबंध में कोई दुराव नहीं आया क्योंकि उस समय के साहित्यकार प्रशंसा और निंदा से अधिक साहित्य कर्म को महत्व देते थे।

इन सभी महानुभवों को प्रस्तुत संस्मरणात्मक रेखाचित्र के माध्यम से जानना विद्यार्थी जीवन की उपलब्धि ही है।

बोध प्रश्न

- 'प्रसाद जी' को देखते ही काशी-निवासी क्या कहकर उन्हें करबद्ध प्रणाम करते थे?
- प्रसाद जी यौवनावस्था में क्या लड़ा करते थे?
- सुप्रसिद्ध कालविद रायकृष्णदास जी किस विषय के ज्ञाता थे?
- रत्नाकर किस भाषा की बारीकियों पर कुशलता के साथ चर्चा करते थे?

7.3.4 देश-काल चित्रण-

शिवपूजन सहाय द्वारा रचित जयशंकर प्रसाद पर लिखित संस्मरणात्मक रेखाचित्र 'महाकवि जयशंकर प्रसाद' 1956-59 के बीच प्रकाशित 'शिवपूजन रचनावली' 4 खंड में शामिल है। यह वह समय है 24 मई 1956 को प्रशासनिक आदेश के द्वारा 'काशी' का नाम 'वाराणसी' स्वीकार किया गया था। भले ही उस समय प्रसाद जी जीवित नहीं थे लेकिन प्रसाद जी का नाम बनारस के साथ हमेशा जुसा हुआ है। शिवपूजन सहाय ने प्रसादकालीन बनारस और प्रसादोत्तर बनारस दोनों को देखा था। उन्होंने प्रस्तुत संस्मरणात्मक रेखाचित्र में इन दोनों समयों के देशकाल का निचोड़ अपने परिपक्व अनुभव के समाहित कर दिया है। शिवपूजन सहाय जी ने प्रस्तुत

संस्मरणात्मक रेखाचित्र का प्रारम्भ सन् 1912 में मैट्रिक पास करते ही जब मुगलसराय चले आए थे वही से प्रारंभ की है। उस समय नौकरी की स्थिति कैसी थी? समझ आ जाता है कि सिफ़ारिफ़ पर नौकरी पाने का चलन भले ही था लेकिन योग्यता पर सिफ़ारिश हावी नहीं होती थी। यह आज के समय के लिए उपयुक्त शिक्षा है। भाषा ज्ञान के अंतर्गत लिपि, वर्तनी, लेखन शैली आदि की जाँच-पड़ताल की जाती थी। महँगाई तो उस समय भी थी। 'उन दिनों कचहरी (अरदली-बाजार) से कंपनी बाग (ना.प्र. सभा) तक या बेनिया-बाग (गोवर्धनसराय) तक की सवारी एक-डेढ़ आना एक्का-भाड़ा लगता था'। लेकिन शिवपूजन सहाय जी इस भाड़े को चुका पाते थे क्योंकि योग्यता और उपार्जन के रास्तों के बीच में बहुत अंतर नहीं था। लेकिन क्या सभी योग्य व्यक्तियों को यथोचित सम्मान मिलता था? नहीं, सहाय जी ने प्रसाद, प्रेमचंद, निराला को कैसे तत्कालीन समय में यथोचित सम्मान नहीं मिला इसकी कटु सत्य की चर्चा करते हुए लिखा है, 'किंतु उनके जीवनकाल में ही उनका उत्कर्ष बहुतों को असह्य हो गया था'। फिर भी समाज में साहित्यकारों, विद्वानों की अपनी एक सकारात्मक मंडली हुआ करती थी जो एक-दूसरे की समस्याओं, सुखों, सुझावों आदि का ध्यान रखा करती थी। आलोचना की अपनी मर्यादित सीमा हुआ करती थी और आलोचना के द्वारा नवीन साहित्य सृजन का मार्ग प्रशस्त हुआ करता था। उस समय की काशी का वर्णन करते हुए शिवपूजन सहाय जी ने स्पष्ट रूप में लिखा है कि, 'उस समय काशी में हिन्दी-साहित्य के धुरंधर महारथियों का बड़ा अच्छा जमघट था। सबके साथ उनका सद्भावपूर्ण संबंध था'। शिवपूजन सहाय द्वारा लिखित प्रस्तुत संस्मरणात्मक रेखाचित्र का अद्धयन करने से तत्कालीन काशी के पर्वों-उत्सवों और उन्हें मनाने की विविध तरीकों की जानकारी मिलती है। 'काशी में होली के बाद 'बुढ़वा मंगल' का महोत्सव गंगा की मध्य धारा में हुआ करता था। चैत की चटकीली चाँदनी में प्रशस्त बजड़ों पर सजीले शामियानों में नृत्य-गान का दर्शनीय आयोजन होता था। उन सुसज्जित बजड़ों के चारों ओर दर्शकों और श्रोताओं की नौकाएँ डटी रहती थीं'।

कैसा सजीव चित्रण शिवपूजन सहाय जी ने प्रस्तुत संस्मरणात्मक रेखाचित्र में किया है। इसी सजीवता ने ही प्रस्तुत संस्मरणात्मक रेखाचित्र को उत्कृष्ट बना दिया है। प्रस्तुत संस्मरणात्मक रेखाचित्र को लिखते समय एक सजग साहित्यकार के रूप में उन्होंने यह सुझाव भी दिया है कि, 'विशिष्ट व्यक्तियों के जीवन की दिनचर्या लिखते चलने का काम साहित्य की समृद्धि के लिए किया जाना चाहिए। यदि 'प्रसाद जी' की बातें उस समय आँक ली गयी होती तो आज वे साहित्य की अमूल्य संपत्ति समझी जाती'। यह सुझाव इस दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है कि साहित्यिक विधा के रूप में संस्मरणात्मक रेखाचित्र लिखते रहना क्यों आवश्यक है? इस प्रश्न का उत्तर भी मिल जाता है।

बोध प्रश्न

- काशी में होली के बाद कौन सा उत्सव मनाया जाता था?
- विशिष्ट व्यक्तियों के जीवन की दिनचर्या लिखने का काम क्यों करना चाहिए?
- काशी का नाम 'बनारस' कब किया गया?

7.3.5 भाषा-सौष्ठव और शैली- शिवपूजन सहाय जी की भाषा सहज हुआ करती थी। इन्होंने उर्दू के शब्दों का प्रयोग धड़ल्ले के साथ किया है और वे प्रचलित मुहावरों के संतुलित उपयोग के द्वारा लोकरुचि को स्पर्श करने की चेष्टा करते थे। प्रस्तुत संस्मरणात्मक रेखाचित्र में भी सरल भाषा में उन्होंने न केवल जयशंकर प्रसाद जी से संबंधित जानकारी पाठकों के साथ सांझा किया है बल्कि उन्होंने हिन्दी संसार के सुप्रसिद्ध कालविद रायकृष्णदास जी, लाला भगवानदीन, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, 'इंदु' पत्रिका, काशी नागरी प्रचारिणी सभा, आरा नागरी प्रचारिणी सभा आदि से संबंधित न जाने कितने बहुमूल्य जानकारियों को प्रस्तुत किया है। प्रस्तुत संस्मरणात्मक रेखाचित्र की भाषा में ओज और शक्ति दोनों गुण विद्यमान है जो पाठकों को प्रभावित करती है। जयशंकर प्रसाद जी को लेकर लिखते समय उन्होंने अपनी यादों के साथ-साथ अपने सुझावों को भी पाठकों तक पहुँचा दिया है इसी कारण से प्रस्तुत संस्मरणात्मक रेखाचित्र में उनकी वक्तृत्व कला को देखा जा सकता है। संस्मरण को पढ़ने से पता चलता है कि प्रसाद जी के प्रति शिवपूजन सहाय जी की भावनात्मक पक्ष को काफी मजबूत था। कुल मिलाकर यह कहना गलत न होगा कि विवेच्य संस्मरणात्मक रेखाचित्र की भाषा सभी प्रकार की भावनाओं को व्यक्त करने में सक्षम है।

7.4 : पाठ सार

छात्रो! प्रस्तुत संस्मरणात्मक रेखाचित्र में लेखक शिवपूजन सहाय जी ने वे जयशंकर प्रसाद जी के सान्निध्य में कैसे आए? यह बताने से पहले उन्होंने उन सभी घटनाओं की चर्चा की है जिनके द्वारा वे 'प्रसाद' जी के सान्निध्य को प्राप्त कर सके। शिवपूजन सहाय का जन्म 1 अगस्त, 1893 को बिहार के भोजपुर जिले के उनवांस गाँव में हुआ। पहले उनका नाम भोलानाथ रखा गया था। दसवीं पास करने के बाद वे मुगलसराय चले गए और वहीं बनारस की अदालत में नकलनवीस की नौकरी में लग गए। यह नौकरी उन्हें सिफ़ारिश और योग्यता रूपी दोनों नौकाओं के बीच में संतुलन बिठाने के बाद ही मिली थी। हुआ यह कि उनकी दूसरी शादी के जो बड़े साले थे वे रेलवे में गार्ड थे। उन्हीं के सान्निध्य और संगति में रहते हुए ही शिवपूजन जी ने पं. बदरी द्विवेदी जो राजघाट काशी स्टेशन पर टिकट चेकर थे और पं. शिवप्रसाद द्विवेदी जो बनारस के दीवानी अदालत में मुनसरिम थे को जाना पहचाना था। इन्हीं मुनसरिम साहब की सिफ़ारिश के द्वारा ही शिवपूजन सहाय जी को बनारस की दीवानी अदालत में हिन्दी नकलनवीस के रूप में नियुक्त हुए। सिफ़ारिश से शिवपूजन जी नियुक्त हुए जैसे यह एक सच है ठीक वैसे ही एक सच यह भी है है कि शिवपूजन जी ने निर्भीक होकर यह भी स्वीकार किया है कि सिफ़ारिश के बाद भी नियुक्ति से पहले सहाय जी को योग्यता परीक्षा देनी पड़ी। इस परीक्षा के अंतर्गत उनकी वर्तनी, लिखावट की

शैली आदि को वकील बाबू गौरीशंकर प्रसाद ने जाँचा था। सहाय जी उर्दू को भी फारसी लिपि में ख़ुशख़त लिख पाते थे। इस प्रकार से शिवपूजन सहाय बहुभाषाविद व्यक्ति थे। जिस कारण से बाबू गौरीशंकर प्रसाद के साथ ही ऐडिशनल मुंसिफ़ बाबू रघुवरदयाल के भी वे स्नेहभाजन के पात्र बन सके थे। मुंसिफ़ बाबू रघुवरदयाल आगरा निवासी थे। उन्हीं के दफ्तर में एक और सज्जन व्यक्ति कार्यरत थे जिनका नाम राधाकृष्ण जी था। राधाकृष्ण जी गोवर्धनसराय मुहल्ले में रहनेवाले थे। गोवर्धनसराय मुहल्ले में ही जयशंकर प्रसाद रहते थे। शिवपूजन सहाय जी ने लिखा है दूर से ही वे बाबू श्यामसुंदर दास तो कभी प्रसाद जी को देख लिया करते थे। शिवपूजन सहाय जी उन्हें दूर से देखकर ही तृप्त हो जाया करते थे। संकोच के मारे अपना परिचय भी नहीं दे पाते थे। फिर वह समय भी आया जब सभा के वाचनालय में एक पाठक के साथ उनकी भेंट हुई थी, उन्होंने ही सहाय जी को 'इंदु कार्यालय' दिखाया था और ऐसे ही पहली बार जयशंकर प्रसाद को देखने का अवसर शिवपूजन सहाय जी को मिला था। प्रस्तुत पाठ में सहाय जी ने स्वयं ही लिखा है, 'विशिष्ट व्यक्तियों के जीवन की दिनचर्या लिखते चलने का काम साहित्य की समृद्धि के लिए किया जाना चाहिए। यदि 'प्रसाद जी' की बातें उस समय आँक ली गयी होती तो आज वे साहित्य की अमूल्य संपत्ति समझी जाती'। यह सुझाव इस दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है कि साहित्यिक विधा के रूप में संस्मरणात्मक रेखाचित्र लिखते रहना क्यों आवश्यक है? इस प्रश्न का उत्तर भी मिल जाता है। एक व्यक्ति को जानना केवल उसे ही जानना नहीं होता है, अपितु उनके आसपास रहनेवाले व्यक्तियों को जानना-समझना भी रोमांचकारी होता है। संस्मरणात्मक रेखाचित्र जैसे-जैसे आगे बढ़ता गया शिवपूजन सहाय जी भी प्रसाद के व्यक्तित्व के विभिन्न परतों को अपनी लेखनी के द्वारा खोलते चले गए। साथ ही साथ बनारस की तत्कालीन की जानकारी को प्रस्तुत करना नहीं भूले। काशी केवल एक तीर्थस्थान नहीं है। इस स्थान की अपनी एक अलग साहित्यिक पहचान भी है। शिवपूजन सहाय जी ने काशी और साहित्य के आपसी संबंध को व्यवस्थित सरल भाषा में पाठकों तक पहुंचाया है।

प्रस्तुत संस्मरणात्मक रेखाचित्र को पढ़ने से यह ज्ञात होता है कि शिवपूजन सहाय जी अपने व्यक्तिगत और व्यावसायिक दोनों जीवन को लेकर स्पष्टवादी थे। उन्होंने निःसंकोच अपनी दूसरी शादी को स्वीकारा है, तो सिफ़ारिश से नौकरी मिलने की बात को छिपाया नहीं, संकोचवश वे कभी जयशंकर प्रसाद, प्रेमचंद आदि के सामने वे जा नहीं पाते थे। इसे भी उन्होंने सहज सरल शैली में स्वीकार किया है। शिवपूजन सहाय जी को केवल साहित्यकार कहना गलत ही होगा। उर्दू, फारसी, संस्कृत, हिन्दी भाषाओं पर उनका समान अधिकार था। उनमें पढ़ने की बड़ी भूख थी। हरेक वाचनालय में जाकर बैठना, पढ़ना उनके चरित्र की विशेषता रही। एक अच्छा साहित्यकार वह होता है जो निरपेक्ष होकर अपने देशकाल की सही जानकारी सबको दे पाता है। प्रस्तुत पाठ में वर्णित घटनाओं को पढ़ने से पता चल जाता है कि शिवपूजन सहाय जी एक बहुत अच्छे पर्यवेक्षक भी थे।

'महाकवि जयशंकर प्रसाद' प्रस्तुत संस्मरणात्मक रेखाचित्र के केंद्रबिंदु में प्रसाद जी हैं। प्रसाद जी को साहित्यकार के रूप में तो सभी जानते हैं यह जानना भी आवश्यक है कि साहित्यकार होने के साथ ही साथ वे वे एक कुशल व्यवसायी भी थे। ज़र्दा-सुर्ती की उनकी पुश्तैनी व्यवसाय सवा सौ साल पुरानी थी। उस व्यवसाय को प्रसाद जी ने कुशलता के साथ विकसित किया। साथ ही साथ वैदिक ऋचाएं, उपनिषदों के लच्छेदार वाक्य, रत्नशास्त्र से संबंधित जानकारी, शुभाशुभ लक्षणों की जानकारी आदि सब कुछ उनके पास उपलब्ध थे। उनकी स्मरणशक्ति उनके श्रोताओं के लिए हमेशा कौतूहल का विषय बना रहा। प्रसाद जी कुशल हलवाई थे। शिवपूजन सहाय जी के संस्मरणात्मक रेखाचित्र के माध्यम से पता चलता है। प्रसाद जी ने अपने जीवन और रुचि के द्वारा यूँ ही इस सत्य को स्थापित कर दिया था कि पाककला भी एक कला है और उसमें दक्षता स्त्री और पुरुष दोनों को रखनी चाहिए। प्रसाद जी यौवनावस्था में कुश्ती लड़ा करते थे। उनका शरीर कसरती और गठीला था। उनके पास बैठने से पहलवानों के किस्से कहानियाँ सुनने को मिल जाती थी। जैसा कि हम सभी को पता है प्रसाद जी को प्राचीन भारतीय संस्कृति और सभ्यता से विशेष प्रेम था। यह प्रेम उनकी रचनाओं में भी झलकता है। उन्हें भारतीय होने पर, बनारसी होने पर गर्व था। केवल वे साहित्यकार थे इस कारण से उनका ऐसा आचरण था ऐसा नहीं था। उनके व्यक्तिगत जीवन का अध्ययन करने से पता चलता है कि वे आजीवन अपने पारिवारिक नियमों, संस्कारों के प्रति भी आस्थावान थे। 'प्रसाद' ने अपने जीवन में कम उतार-चढ़ाव को नहीं देखा था। जीवन के प्रति उनमें असीम श्रद्धा थी। केवल 20 वर्ष की आयु ही तो थी, जब माता-पिता, बड़े भाई, जीवनसंगिनी के मृत्यु को उन्होंने देखा था। पारिवारिक मुक़द्दमे के प्रहार को झेला था। लेकिन अदम्य जिजीविषा ही थी हर बार 'शंकर' विषपान करने के बाद भी 'जय' को ही गले से लगाते थे। साहित्यिक जीवन, व्यक्तिगत जीवन में उन्होंने जिस सम्मान को कमाया वह बहुत कम लोग ही कमा पाते हैं। वे तो सम्मान और अपमान दोनों को लेकर ही तटस्थ रहते थे। नेतृत्व सभी को देते थे लेकिन उनके नेतृत्व में 'राजा' होने का भाव नहीं था। फिर भी वे लोगों के लिए 'राजा' से कम भी नहीं थे।

भले ही शिवपूजन सहाय जी द्वारा लिखित प्रस्तुत संस्मरणात्मक रेखाचित्र के केंद्रबिंदु में प्रसाद जी हैं लेकिन उनके साथ-साथ अनेकों महानुभवों को जानने-समझने का संक्षिप्त ही सही लेकिन अवसर मिला है। हिन्दी संसार के सुप्रसिद्ध कालविद रायकृष्णदास जी प्राचीन भारतीय शिल्पकला और मूर्तिकला के ज्ञाता थे। लाला भगवानदीन शब्दों की व्युत्पत्ति और निरुक्ति पर पकड़ रखते थे। आचार्य रामचंद्र शुक्ल संस्कृत साहित्य की विविध प्रवृत्तियों के ज्ञाता थे, रत्नाकर ब्रजभाषा साहित्य की बारीकियों पर कुशलता के साथ चर्चा करते थे। प्रेमचंद के कथा साहित्य पर मनुष्य का मनोवैज्ञानिक पक्ष तो दिखाई पड़ता ही है साथ ही वे निर्भिक होकर अपने मन की बात रखते थे।

7.5 : पाठ की उपलब्धियाँ

प्रस्तुत संस्मरणात्मक रेखाचित्र 'महाकवि जयशंकर प्रसाद' को पढ़ने के बाद अब आप –

1. संस्मरणात्मक रेखाचित्र लिखने के प्रमुख तथ्यों को जान गए हैं।
2. शिवपूजन सहाय की जीवन कहानी और उनकी चारित्रिक विशेषताओं को जान गए हैं।
3. जयशंकर प्रसाद की जीवन कहानी और उनकी चारित्रिक विशेषताओं को जान गए हैं।
4. बनारस की तत्कालीन परिस्थितियों को जान गए हैं।

7.6 : शब्द संपदा

1. ख़ुशख़त - सुलेख
2. ऐडिशनल - अतिरिक्त
3. भोटानी सौदागर- भूटानी व्यवसायी
4. बुढ़वा मंगल- एक लोक नाट्य
5. शालिहोत्र - अश्व विद्या
6. हलवाई - खाना पकाने वाले
7. शास्त्रीय संगीत- classical music
8. मर्मज्ञ - जाननेवाले
9. कंठस्थ - याद रखना

7.7 : परीक्षार्थ प्रश्न

खंड-(अ)

अ) निम्न प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिये।

1. 'महाकवि जयशंकर प्रसाद' संस्मरणात्मक रेखाचित्र के कथासार को अपने शब्दों में लिखिए।
2. सन् 1912 में जब शिवपूजन सहाय मुगलसराय आए तो उनकी यात्रा कैसी रही समझाइए।
3. साहित्यकारों की जीवन की विडम्बना को अपने शब्दों में लिखिए।
4. शिवपूजन सहाय की चारित्रिक विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।

खंड-(ब)

आ)निम्न प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिये।

1. प्रसाद जी के परिवार में त्योहारों को किस प्रकार से मनाया जाता था? स्पष्ट कीजिए।

2. जयशंकर प्रसाद की चारित्रिक विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।
3. शिवपूजन सहाय जी ने किन-किन गौण साहित्यकारों की विशेषताओं को विश्लेषित किया है?
4. शिवपूजन सहाय जी ने तत्कालीन बनारस की देशकाल से संबंधित किन जानकारियों को प्रस्तुत किया है।

खंड-(स)

iii. सही विकल्प चुनिए।

1. प्रसाद जी की पत्रिका का नाम क्या था?

A) हंस B) इंदु C) कल्पना D) इनमें से कोई नहीं

2. लेखक सन् 1912 में कहाँ गए थे?

A)मुगलसराय B) देहारादून C) कोलकाता D) मुंबई

3. रेखाचित्र शब्द का अँग्रेजी अनुवाद क्या होगा?

A) colour B) drawing C) sketch D) paper

4. 'शिवपूजन सहाय' के बचपन का नाम क्या था?

A) भोलानाथ B) राम C) श्याम D) इनमें से कोई नहीं

ii) रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

1) होली के बाद बनारस _____ महोत्सव मनाया जाता था।

2) पंडित बदरी द्विवेदी राजघाट स्टेशन पर _____ थे।

3) प्रसाद जी का परिवार _____ का व्यापार किया करता था।

4) शिवपूजन सहाय ने 'इंदु' पत्रिका को सबसे पहले _____ में देखा था।

iii) सुमेल कीजिए।

1) ख़ुशख़त – (a) जयशंकर प्रसाद

2) हलवाई - (b) मैट्रिक परीक्षा

3) 'सन् 1912 '- (c) संस्कृत साहित्य

4) आचार्य रामचंद्र शुक्ल - (d) सुलेख

7.8 : पठनीय पुस्तकें

1. गूगल के सौजन्य से प्राप्त महत्वपूर्ण सूचनाएँ
2. जयशंकर प्रसाद एक विशेष अद्धयन - डॉ. गंगा सहाय 'प्रेमी' एवं जगदीश शर्मा

इकाई 8 : संस्मरण: राजेन्द्र बाबू (रामधारी सिंह 'दिनकर') की विवेचना

इकाई की रूपरेखा

8.1 प्रस्तावना

8.2 उद्देश्य

8.3 मूल पाठ: संस्मरण: राजेन्द्र बाबू (रामधारी सिंह 'दिनकर') की विवेचना

8.3.1 विवेच्य संस्मरण के लेखक का परिचय

8.3.2 विवेच्य संस्मरण की कथावस्तु

8.3.3 देशकाल का चित्रण

8.3.4 भाषा वैशिष्ट्य

8.3.5 शैलीगत वैशिष्ट्य

8.4 पाठ सार

8.5 पाठ की उपलब्धियाँ

8.6 शब्द-सम्पदा

8.7 परीक्षार्थ प्रश्न

8.8 पठनीय पुस्तकें

8.1 : प्रस्तावना

इस इकाई में आप रामधारी सिंह 'दिनकर' द्वारा रचित संस्मरण 'राजेंद्र बाबू' का अध्ययन करने जा रहे हैं। यह संस्मरण भारत के जनप्रिय राष्ट्रपति श्री राजेंद्र प्रसाद जी के निधन के उपरांत लिखा गया है। यह भी उल्लेखनीय है कि उक्त संस्मरण एक प्रसिद्ध साहित्यकार द्वारा एक जनप्रिय राष्ट्रपति के विषय में लिखा गया है। यह संस्मरण न केवल उनके राजनीतिक निर्णयों को केंद्र में रखकर लिखा गया है बल्कि एक साहित्यिक द्वारा एक राष्ट्रपति की साहित्यिक अभिरुचि और मानवीयता को आधार बनाकर लिखा गया है।

स्मरणीय है कि डॉ. राजेंद्र प्रसाद भारत के पहले राष्ट्रपति थे। उन्होंने 26 जनवरी, 1950 से लेकर 13 मई, 1962 तक भारत के प्रथम नागरिक के पद को सुशोभित किया। उनका जन्म 3 दिसंबर, 1884 को बिहार राज्य के सिवान जिले के जीरादेई नामक गाँव में हुआ था। वे भारतीय स्वाधीनता संग्राम के प्रमुख सिपाही थे और भारतीय राजनीति के एक दिग्गज नेता। वे आजीवन अपनी विनम्रता, बुद्धिमत्ता और राष्ट्र के प्रति समर्पण के लिए जन-जन के बीच लोकप्रिय रहे। राजेंद्र प्रसाद जी बाल्यकाल से ही एक प्रतिभाशाली छात्र थे। उन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय से अपनी उच्च शिक्षा प्राप्त की। आरंभ में उन्होंने कानून के क्षेत्र में अपना करियर शुरू किया और

अपनी तीव्र कानूनी सूझबूझ के लिए वे जल्द ही मशहूर हो गए। हालाँकि, राष्ट्रीय स्वतंत्रता के आह्वान ने उन्हें अपने आगोश में ले लिया और वे सबकुछ छोडकर स्वतंत्रता संग्राम में शामिल हो गए। यह ज्ञात तथ्य है कि महात्मा गांधी के करीबी सहयोगी में से एक राजेंद्र प्रसाद जी भी थे। महात्मा गांधी के प्रभाववश उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में एक प्रमुख भूमिका निभाई। उन्होंने 1906 में 'बिहारी छात्र सम्मेलन' के गठन में सहयोग किया, जो आगे चलकर भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के इतिहास में मील का पत्थर साबित हुआ।

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास में एक महत्वपूर्ण घटना है – भारतीय संविधान का निर्माण। 'भारतीय संविधान सभा' की स्थापना 6 दिसंबर, 1946 को हुई थी। भारत की स्वाधीनता के बाद डॉ. राजेंद्र प्रसाद जी को संविधान सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना गया। उन्होंने खाद्य और कृषि पर संविधान सभा की समिति की अध्यक्षता भी की। 26 जनवरी, 1950 को प्रसाद भारत के पहले राष्ट्रपति चुने गए। उनका कार्यकाल विनम्रता, निष्पक्षता और लोकतंत्र के सिद्धांतों के प्रति समर्पण के श्रेष्ठ उदाहरण के रूप में आज भी याद किया जाता है। देश के प्रथम नागरिक होने के बावजूद, वे अपनी सरल जीवनशैली और अपने सार्वजनिक कर्तव्यों के प्रति प्रतिबद्धता के लिए प्रसिद्ध थे। प्रसाद जी ने राष्ट्रपति के रूप में दो कार्यकाल पूरे किए और फिर सक्रिय राजनीति से संन्यास ले लिया, अपना शेष जीवन बिहार के पटना में सदाकत आश्रम में बिताया। 28 फरवरी, 1963 को उनका निधन हो गया। स्वतंत्रता सेनानी, राजनेता, भारतीय संविधान सभा के अध्यक्ष और भारत के पहले राष्ट्रपति के रूप में डॉ. राजेंद्र प्रसाद की विरासत आज भी प्रेरणा देती है। लोकतंत्र के सिद्धांतों के प्रति उनकी विनम्रता, समर्पण और गहन प्रतिबद्धता भारत में सार्वजनिक सेवा की कसौटी बनी हुई है। इतना ही नहीं वरन् वे अपनी साहित्यिक अभिरुचि के कारण साहित्यकारों के सर्वाधिक निकट रहे हैं, उनके लिए सर्वथा सुलभ भी रहे हैं।

8.2 : उद्देश्य

इस इकाई में आप प्रमुख छायावादोत्तर कवि रामधारी सिंह 'दिनकर' द्वारा रचित संस्मरण 'राजेंद्र बाबू' का अध्ययन करेंगे। इकाई को पढ़ने के उपरांत आप :

- रामधारी सिंह 'दिनकर' की रचनात्मकता के एक नए पहलू, उनके गद्यकार/संस्मरणकार व्यक्तित्व, के विषय में जान सकेंगे;
- संस्मरण विधा को समझ सकेंगे;
- संस्मरण विधा से अन्य गद्य विधाओं के संबंध (साम्य-वैषम्य) को व्याख्यायित कर सकेंगे;
- विवेच्य संस्मरण के विषय-वस्तु को व्याख्यायित कर सकेंगे;
- संस्मरण के प्रयोजन और वैचारिकता को विश्लेषित कर सकेंगे और

- भारत के प्रथम राष्ट्रपति राजेंद्र प्रसाद के हिन्दी प्रेम और साहित्यिक अभिरुचि की समुचित व्याख्या कर सकेंगे।

8.3 : मूल पाठ : संस्मरण: राजेन्द्र बाबू (रामधारी सिंह 'दिनकर') की विवेचना

8.3.1 विवेच्य संस्मरण के लेखक का परिचय :

विवेच्य संस्मरण के लेखक रामधारी सिंह दिनकर हैं। हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध साहित्यकार श्री रामधारी सिंह 'दिनकर' का जन्म 30 दिसम्बर, सन् 1908 ई. में बिहार प्रदेश के बेगूसराय जिला के सेमरिया ग्राम में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री रवि सिंह एवं माता का नाम मनुरूपा देवी था। दिनकर जी का विवाह समस्तीपुर जिला के टभका ग्राम में श्यामवती देवी से हुआ था। इनके पिता एक किसान थे। श्री रवि सिंह के तीन लड़के थे। बड़े लड़के का नाम बसन्त सिंह, मझले लड़के का नाम रामधारी सिंह तथा छोटे लड़के का नाम सत्यनारायण सिंह था। बताया जाता है कि रामधारी सिंह को अपने पिता श्री रवि सिंह के नाम से अगाध प्रेम था। इसी प्रेम के कारण उन्होंने अपने पिता के नाम का पर्याय 'दिनकर' उपनाम रख लिया। उसी समय से इनका नाम रामधारी सिंह 'दिनकर' हो गया। रामधारी सिंह दिनकर जब दो वर्ष के थे, तभी इनके पिता का निधन हो गया। इनकी माता ने बच्चों के पालन-पोषण आदि का कार्य किया।

रामधारी सिंह दिनकर की प्रारम्भिक शिक्षा संस्कृत से आरंभ हुई। इन्होंने सन् 1920 ई. में गाँव की पाठशाला से प्राथमिक परीक्षा पास करने के बाद आगे की शिक्षा के लिए बारीगाँव के एक राष्ट्रीय विद्यालय में प्रवेश लिया। इस विद्यालय का मूल उद्देश्य छात्रों में राष्ट्रीयता की भावना जागृत करना था। 'दिनकर' जी में राष्ट्रीयता, उत्साह तथा कर्मठता की भावना को जन्म देने में इस विद्यालय की भूमिका भी रही है। इसी विद्यालय से उर्दू की भी शिक्षा 'दिनकर' ने प्राप्त की। यही कारण है कि इनकी रचनाओं में उर्दू के शब्द भी दिखाई देते है। मिडिल स्कूल से पास होने के बाद उन्होंने सरकारी हाईस्कूल में शिक्षा प्राप्त की। सन् 1928 ई. में मुकामाघाट से मैट्रिक की परीक्षा पास करने के बाद चार वर्ष तक पटना कॉलेज में अध्ययन किया।

पटना कालेज में पढ़ाई के दौरान दिनकर जी ने बहुत से विद्वानों एवं राजनायिकों से सम्पर्क स्थापित किया। यहीं पर दिनकर जी की मुलाकात रामवृक्ष बेनीपुरी, पं. राहुल सांकृत्यायन, गंगाशरण सिंह जैसे विद्वानों से हुई थी। इन साहित्यकारों का प्रभाव दिनकर के रचना-कर्म में दिखाई देता है। बी. ए. की परीक्षा पास करने के बाद से ही दिनकर को पारिवारिक जिमेदारियों से जूझना पड़ गया। उनकी आर्थिक स्थिति बहुत ठीक नहीं थी। आर्थिक संकट के कारण वे अत्यन्त चिन्तित रहते थे। लेकिन अपनी जीवटता एवं उत्साह से इस चिंता व अभावपूर्ण जीवन को दरकिनार कर हिन्दी साहित्य को न केवल समृद्ध किया बल्कि मनुष्यता का एक सर्वग्राही संदेश भी दिया। दिनकर जी आजीविका के लिए पहले अध्यापक बने, फिर बिहार सरकार में सब-रजिस्टार की नौकरी की। आज़ादी के बाद लंगट सिंह कॉलेज, मुज़फ़्फ़रपुर में हिन्दी के

विभागाध्यक्ष बने। सन् 1952 में उन्हें राज्यसभा का सदस्य निर्वाचित किया गया जहाँ दो कार्यकाल तक उन्होंने सांसद के रूप में कार्य किया। इसके उपरांत वह भागलपुर विश्वविद्यालय के कुलपति नियुक्त किए गए और इसके एक वर्ष बाद ही भारत सरकार के हिन्दी सलाहकार बने। 24 अप्रैल 1974 ई. में दिनकर जी का निधन हुआ।

कृतियाँ/रचनाएँ-

'राष्ट्रकवि', 'समय-सूर्य' व 'अधैर्य का कवि' आदि नामों से ख्याति प्राप्त रामधारी सिंह 'दिनकर' का रचना-संसार अत्यंत ही समृद्ध है। दिनकर जी के साहित्यिक जीवन का शुभारंभ हाई स्कूल की शिक्षा ग्रहण के दौरान हो गया था। उन्होंने सर्वप्रथम रामवृक्ष बेनीपुरी द्वारा प्रकाशित 'युवक' पत्र में 'अमिताभ' नाम से अपनी रचनाएँ प्रेषित की थी। इसके बाद 'बारदोली-विजय संदेश'(1928 ई.) नाम से पहला काव्य-संग्रह प्रकाशित हुआ। यद्यपि दिनकर ने पद्य एवं गद्य दोनों ही रूपों में अनेक उत्कृष्ट रचनाओं का सृजन किया है, लेकिन सर्वाधिक ख्याति एक कवि के रूप में है। इस ख्याति का मूल कारण है - कविता में राष्ट्रीयता की भावना से ओतप्रोत क्रांतिपूर्ण संघर्ष की प्रेरणा। सामाजिक और आर्थिक असमानता, अन्याय तथा शोषण के विरुद्ध स्वर की प्रमुखता। उनकी कविताओं में राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना तथा प्रगतिवादी चेतना दोनों विद्यमान हैं। एक मानववादी, प्रगतिवादी और जनपक्षधर कवि के रूप में उन्होंने ऐतिहासिक व पौराणिक पात्रों और घटनाओं को ओजस्विता के साथ चित्रित किया है। ओज, विद्रोह, आक्रोश, क्रांति आदि के साथ कोमल भावना का अंकन भी उन्हें आमजन के करीब ले जाती है।

काव्य-कृतियाँ -

1. रेणुका (1935)
2. हुंकार (1939)
3. रसवंती (1940)
4. द्वन्द्वगीत (1940)
5. कुरुक्षेत्र (1946) (प्रबन्ध काव्य)
6. सामधेनी (1947)
7. इतिहास के आँसू (1951)
8. धूप और धुआँ (1951)
9. रश्मिरथी (1952) (खण्ड काव्य)
10. दिल्ली (1954)
11. नीम के पत्ते (1954)
12. नील कुसुम (1954)
13. उर्वशी (1961) (गीति नाट्य)
14. परशुराम की प्रतीक्षा (1963)
15. आत्मा की आँखें (1964)
16. हारे के हरिनाम (1970)

वैसे तो दिनकर जी की सभी रचनाएँ विशिष्ट हैं और सभी का अपना अलग महत्व है, लेकिन प्रमुख काव्य-कृतियों में 'करुक्षेत्र', 'रश्मिरथी', 'उर्वशी' और 'परशुराम की प्रतीक्षा' आदि शामिल हैं। उर्वशी को छोड़कर दिनकर की अधिकतर रचनाएँ वीर रस से ओतप्रोत हैं। दिनकर को रीतिकालीन कवि शिवराज भूषण के बाद वीर रस का सर्वश्रेष्ठ कवि माना जाता है।

प्रबंध-काव्य 'कुरुक्षेत्र' महाभारत के शान्तिपर्व का काव्य रूप है। यह काव्य मूल रूप से महाभारत के भीष्म-युधिष्ठिर के संवाद पर आधारित है। सात सर्गों में सृजित इस काव्य में युद्ध को एक निंदित कर्म बताया गया है। 'उर्वशी' प्रेम और सौन्दर्य का काव्य है। इसमें अप्सरा उर्वशी और पुरुरवा के प्राचीन आख्यान को एक नए संदर्भ में प्रस्तुत किया गया है। मानवीय प्रेम, वासना और सम्बन्धों के इर्द-गिर्द घूमते उर्वशी और पुरुरवा अलग-अलग तरह की प्यास लेकर आये हैं। पुरुरवा धरती पुत्र है और उर्वशी देवलोक से उतरी हुई नारी है। पुरुरवा के भीतर देवत्व की तृष्णा और उर्वशी सहज निश्चित भाव से पृथ्वी का सुख भोगना चाहती है। 'परशुराम की प्रतीक्षा' एक खण्डकाव्य है। इस कविता संग्रह में अठारह कविताएँ संग्रहीत हैं। इस कविता संग्रह का मूल संदेश है कि हमें अपने नैतिक मूल्यों की रक्षा के साथ-साथ अपने राष्ट्रीय सम्मान की रक्षा के लिए सतत प्रयत्नशील एवं जागरूक रहना चाहिए। साथ ही यह भी कि युद्धभूमि में शत्रु का विनाश करने के लिए हिंसा अनुचित नहीं है।

गद्य साहित्य -

1. मिट्टी की ओर (1946)
2. चित्तौड़ का साका (1948)
3. अर्धनारीश्वर (1952)
4. रेती के फूल (1954)
5. हमारी सांस्कृतिक एकता (1955)
6. भारत की सांस्कृतिक कहानी (1955)
7. संस्कृति के चार अध्याय (1956)
8. उजली आग (1956)
9. देश-विदेश (1957)
10. राष्ट्रभाषा और राष्ट्रीय एकता (1955)
11. काव्य के भूमिका (1958)
12. पन्त-प्रसाद और मैथिलीशरण (1958)
13. वेणुवन (1958)
14. धर्म, नैतिकता और विज्ञान (1969)
15. वट-पीपल (1961)
16. लोकदेव नेहरू (1965)
17. शुद्ध कविता की खोज (1966)
18. साहित्य-मुखी (1968)
19. राष्ट्रभाषा आंदोलन और गांधीजी (1968)
20. संस्मरण और श्रद्धांजलियाँ (1970)
21. भारतीय एकता (1971)
22. मेरी यात्राएँ (1971)
23. दिनकर की डायरी (1973)
24. चेतना की शिला (1973)
25. विवाह की मुसीबतें (1973)
26. आधुनिकता बोध (1973)

दिनकर जी की प्रमुख गद्य-कृतियों में 'संस्कृति के चार अध्याय', 'शुद्ध-कविता की खोज', 'दिनकर की डायरी', 'अर्धनारीश्वर', 'रेती के फूल', 'संस्मरण और श्रद्धांजलियाँ' तथा 'मिट्टी की ओर', आदि हैं जिनमें उनके विभिन्न विचारात्मक एवं समीक्षात्मक निबंध और संस्मरण शामिल हैं।

'संस्कृति के चार अध्याय' चार अध्यायों में लिखा गया एक विशद, गंभीर खोजपूर्ण ग्रंथ है। इस ग्रंथ का प्रथम अध्याय- 'भारतीय जनता की रचना और हिन्दू-संस्कृति का आविर्भाव', द्वितीय अध्याय- 'प्राचीन हिन्दुत्व से विद्रोह', तृतीय अध्याय- 'हिन्दू संस्कृति और इस्लाम' तथा चतुर्थ अध्याय- 'भारतीय संस्कृति और यूरोप' है। 'संस्कृति के चार अध्याय' नामक पुस्तक दिनकर जी को महान दार्शनिक गद्यकार के रूप में प्रतिष्ठित करती है। अध्यात्म, प्रेम, धर्म, अहिंसा, दया, सह-अस्तित्व आदि भारतीय संस्कृति के विशिष्ट गुण है। 'शुद्ध कविता की खोज' में काव्य के प्रयोजन के आधार पर कविता के शुद्धतावादी आंदोलन का शोधपूर्ण इतिहास प्रस्तुत किया गया है। 'संस्मरण और श्रद्धांजलियाँ' उनकी ऐसी पुस्तक है, जिसमें समकालीन साहित्यकारों के साथ-साथ राजनेताओं के भी संस्मरण संकलित हैं।

'अर्धनारीश्वर', 'रेती के फूल', 'वेणुवन', 'वटपीपल', 'आधुनिक बोध', 'धर्म, नैतिकता और विज्ञान' आदि निबंध संग्रह में, उन्होंने राष्ट्रीयता, आधुनिकता और परंपरा, धर्म और विज्ञान तथा नैतिकता आदि विषयों के साथ काम, प्रेम, ईर्ष्या जैसी मनोवृत्तियों पर बड़ी सूक्ष्मता से विचार व्यक्त किया है। दिनकर जी ने आलोचनात्मक गद्य का भी सृजन किया है। 'मिट्टी की ओर', 'काव्य की भूमिका' 'पंत, प्रसाद और मैथिलीशरण' उनके आलोचनात्मक ग्रंथ हैं। राष्ट्रभाषा की समस्या पर राष्ट्रकवि दिनकर जी अत्यंत गंभीर थे। उन्होंने इस विषय पर दो पुस्तकें लिखी है। 'राष्ट्रभाषा और राष्ट्रीय एकता' तथा 'राष्ट्रभाषा आंदोलन और गाँधीजी'। दिनकर जी का मन्तव्य है कि हिन्दी को राष्ट्रभाषा इसलिए माना गया कि केवल वही भारत की सांस्कृतिक एकता व राजनीतिक अखंडता को अक्षुण्ण बनाए रखाने में समर्थ है।

दिनकर जी के साहित्यिक जीवन की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि राजनीति और शासन के द्वारा लगातार सम्मानित किए जाने और महत्वपूर्ण पद पाने के बावजूद उन्होंने अपनी लेखन-शैली को स्वच्छंद रखा। उनका रचनाकर्म सत्ता के गलियारों से अप्रभावित रहा है। राष्ट्रकवि की रचनाओं को अगर हम ध्यान से देखते हैं तो यह पाते हैं कि उनके साहित्य लेखन की शुरुआत काव्य से हुई और धीरे-धीरे यह गद्य की तरफ मुड़ती चली गई। इसका एक कारण यह है कि कविता में स्वच्छंद कल्पना-वैभव की अधिकता होती है तथा गद्य में चिंतन की। आरंभ में युवा-मन का उत्साह, आक्रोश और भावनाएँ कविता के रुप में अभिव्यक्त होती हैं और जैसे-जैसे ज्ञान में प्रौढ़ता आती है, यह दर्शन-चिंतन में अभिव्यक्त होने लगती हैं। दिनकर जी की रचनाएँ इस बात की साक्षी हैं। आरंभ में राष्ट्रप्रेम, क्रांति का उद्घोष करने वाली कविताओं की जगह वे 'संस्कृति के चार अध्याय' जैसी विचारोत्तेजक और चिंतन-प्रधान रचना करने लगे। ओज और उत्साह से पूर्ण लयात्मक काव्यों ने धीरे-धीरे बौद्धिक व गंभीर चिंतन का स्थान ग्रहण किया। इसके साथ ही आलोचनात्मक निबंध और आलेख भी सृजित होने लगे। विचारों में परिवर्तन किसी भी चिंतनशील व्यक्ति का स्वाभाविक लक्षण है और जब यह व्यक्ति एक साहित्यकार होता है तब यह परिवर्तन सिर्फ विचारों तक सीमित

न रहकर शैली तक दृष्टि में भी होने लगता है। दिनकर जी की साहित्यिक यात्रा इसी प्रकार गतिशील रही है। उनके रचना-संसार में कविताएँ, संस्मरणात्मक गद्य, राष्ट्रभाषा, धर्म, विज्ञान और नैतिकता आदि से संबंधित आलोचनात्मक निबंधों के साथ-साथ भारतीय संस्कृति के विकास को प्रस्तुत करती शोधपूर्ण रचनाएं भी हैं। दिनकर जी के रचना-कर्म के केंद्र में मानव है और दृष्टि मानवतावादी।

बोध प्रश्न

- रामधारी सिंह दिनकर का जन्म कहाँ और किस वर्ष हुआ था?
- रामधारी सिंह दिनकर के पाँच प्रमुख गद्य कृतियों का नाम बताएं।

8.3.2 विवेच्य संस्मरण की कथावस्तु :

रामधारी सिंह 'दिनकर' द्वारा रचित यह संस्मरण राष्ट्रपति राजेंद्र बाबू के जीवन के विभिन्न पहलुओं को उजागर करता है। दिनकर जी ने स्वतंत्रता संग्राम में राजेंद्र बाबू की भूमिका, राष्ट्रपति बनने के बाद उनके कार्यों और उनके व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों को अपने शब्दों में बयान किया है। चूंकि यह संस्मरण राष्ट्रपति राजेंद्र प्रसाद के निधन के बाद लिखा गया है इसलिए विवेच्य संस्मरण का आरंभ ही उनके देहावसान से होने वाली क्षति के उल्लेख के साथ हुआ है। लेखक ने राजेंद्र प्रसाद के निधन को महात्मा गांधी और सरदार वल्लभ भाई पटेल के निधन के साथ जोड़कर विवेचित किया है लेकिन भावों में बहकर नहीं बल्कि लेखकीय चातुर्य के साथ। दिनकर जी ने लिखा है कि, 'देशरत्न राजेंद्र प्रसाद के देहावसान से भारत की अपार जनता को गहरा शोक हुआ। ऐसा शोक या दुख गांधीजी और सरदार पटेल की मृत्यु के बाद नहीं हुआ था।'

राजेंद्र प्रसाद जी के स्वभाव की सबसे बड़ी विशेषता थी – समावेशीपन। उनके इस स्वाभाविक गुण को ध्यान में रखकर ही लेखक ने उन्हें 'मूर्तिमान भारतवर्ष' की संज्ञा से विभूषित किया है। कहने की आवश्यकता नहीं है कि भारत वर्ष में अनेक जातियाँ, भाषाएँ, धर्म और लिंग के लोग निवास करते हैं लेकिन इन सभी के भीतर भारत प्रेम सदैव विद्यमान रहता है। इसी तत्व को साधारण जनता अनेकता में एकता का भाव समझती है। महात्मा गांधी इस भाव के मूर्तिमान प्रतीक थे और इस प्रतीक के प्रतिरूप थे - राजेन्द्र बाबू। राजेन्द्र बाबू ने गांधी-धर्म को अपने भीतर पूर्ण रूप से आत्मसात कर लिया था। गांधी जी के जीवन-काल में ही अपार जनता को यह विश्वास हो गया था कि बापू की समस्त रचनात्मक प्रवृतियों का उत्तराधिकार राजेन्द्र बाबू के पास जाएगा। अपार जनता को जिस उत्तराधिकार की कामना थी वह पूर्ण नहीं हुई। उन्हें पहले मंत्री और बाद में राष्ट्रपति बनाकर राजभवन में बैठ दिया गया। इसके बावजूद भी गांधी-मार्गी उन्हें अपना नैतिक संरक्षक मानते रहे।

प्रेरणा के स्रोत राजेन्द्र बाबू : राजेन्द्र बाबू को अपार जनता एवं विभिन्न संस्थाएं प्रेरणा-स्रोत मानती थीं। महात्मा गांधी ने अपने जीवन-काल में गांवों की साधारण जनता की स्थिति को देखते हुए उनके विकास हेतु शिक्षा, स्वास्थ्य और उद्योग के क्षेत्र में महत्वपूर्ण पहल की थी। शिक्षा के क्षेत्र में उन्होंने बुनियादी शिक्षा और नई तालीम की न केवल अवधारणा प्रस्तुत की थी बल्कि उसे

जगह-जगह पर लागू (विद्यालयों की स्थापना) करके भी दिखाया था। उद्योग के क्षेत्र में खादी का विकल्प प्रस्तुत किया। इसके माध्यम से प्रत्येक घर को आत्मनिर्भर बनाने की योजना थी। यह अकारण नहीं है कि स्वाधीनता संग्राम के दौर में प्रत्येक घर में चरखा की ध्वनि सुनाई देने लगी। चरखा स्वाधीनता आंदोलन का सबसे बड़ा प्रतीक बन गया। इसी तरह चिकित्सा के क्षेत्र में भी उन्होंने आधुनिक अंग्रेजी चिकित्सा की जगह पारंपरिक चिकित्सा को महत्व दिया। कहना न होगा कि उनके इस चिंतन का प्रभाव सम्पूर्ण भारतीय जनता पर पड़ा। ऐसे में राजेंद्र बाबू पर उनके इस चिंतन का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक ही था। दिनकर जी ने विवेच्य संस्मरण में बताया है कि खादी और ग्रामोद्योग के कार्यकर्ता राजेन्द्र बाबू पर अपना नैसर्गिक अधिकार मानते थे। स्वाधीनता आंदोलन के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर थे - विनोबा भावे। राजेंद्र बाबू को वे बहुत मानते थे। उन्होंने समाज में मौजूद वैषम्य को मिटाने हेतु भूदान-आंदोलन चलाया। इस आंदोलन से जुड़े लोग भी राजेंद्र बाबू को अपना निश्चल सलाहकार के रूप में देखते थे। विवेचया संस्मरण में दिनकर जी ने इस बात का भी उल्लेख किया है कि, 'हरिजनों का उद्धार और आदिवासियों का कल्याण चाहने वाली संस्थाएँ उनके ओर गुरूभाव से देखती थीं। राष्ट्रीय एकता और विशेष रूप से हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए काम करने वाले लोग राजेंद्र बाबू को अपना प्रेरणा-स्रोत समझते थे। इसके साथ-साथ समाज में मौजूद नवीनतावादी और परंपरावादी दोनों समूह के लोगों को राजेंद्र बाबू पर पूरा भरोसा था।'

सरल स्वभाव: दिनकर जी ने राजेंद्र बाबू को एक सरल और मिलनसार व्यक्ति के रूप में चित्रित किया है। वे अपने पद और प्रतिष्ठा के बावजूद हमेशा सामान्य जनता के करीब रहना पसंद करते थे। राजेंद्र बाबू के व्यक्तित्व का यह विशिष्ट गुण था कि न केवल उनकी राजनीतिक विचारधारा के लोग ही उनके व्यक्तित्व से अभिभूत होते थे बल्कि उनसे वैचारिक धरातल पर भिन्न मत रखने वाले व्यक्ति भी उनकी सादगी और निष्ठा के मुरीद थे। उनके ईमानदार व्यक्तित्व और मृदुभाषिता के सभी कायल थे। यही कारण है कि उनके निधन से होने वाली क्षति को रामधारी सिंह दिनकर जी ने इस तरह से वर्णित किया है, 'उनके निधन से राष्ट्र के हर तबके और हर विचार के लोग दुखी हुए हैं और उनमें से ऐसे लोगो की संख्या भी काफी बड़ी है, जिन्हें राष्ट्रीय क्षति के अलावा वैयक्तिक दुख का बोध हुआ।' स्पष्ट है कि भारतीय जनता राजेंद्र बाबू को न केवल नेता मानती थी बल्कि उन्हें अपने घर का सदस्य मानती थी। 'वैयक्तिक दुख का बोध' इसी भाव को अभिव्यक्त करता है।

राष्ट्रप्रेम: राजेंद्र बाबू के व्यक्तित्व में असीम राष्ट्रप्रेम दिखाई पड़ता है। उनके लिए राष्ट्र किसी कोरे कागज पर बना हुआ नक्शा अथवा चित्र नहीं हैं। वह किसी भूमिगत सीमा में आने वाला भी नहीं है। उनके लिए राष्ट्र का मतलब वहाँ की जनता है जो दिन-रात अथक परिश्रम करके अपने देश को उन्नति के पथ पर आगे ले जाना चाहती है। यही कारण है कि वे राष्ट्र की शक्ति जनता में निहित करना चाहते हैं न कि शासन-सत्ता में। दिनकर जी ने इस संबंध में लिखा है कि, 'वे देश में ऐसा शासन चाहते थे, जिसके अधीन सरकार दिनों-दिन नर्म और प्रजा बलवती होती जाए। जनता को

सरकार पर आश्रित करने की योजना उन्हें नापसन्द थी। वे सरकार को ही जनता की इच्छा पर आश्रित रखना चाहते थे।' वे अहिंसा के समर्थक थे लेकिन आपद स्थिति में अपनी सुरक्षा के लिए किए जाने वाले कार्य के समर्थक भी थे।

राजेंद्र बाबू ने भाषा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण चिंतन उपस्थित किया है। आज राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 2020 में जिस प्रकार भारतीय भाषाओं की महत्ता पर प्रकाश डाला गया है, उसी प्रकार का चिंतन राजेंद्र बाबू ने आज से लगभग पचास वर्ष पहले उपस्थित किया था। दिनकर जी ने उनके भाषा चिंतन के विषय में लिखा है कि, 'राजेन्द्र बाबू का निश्चित मत था कि भारत को विश्व की उन्नति में जो भी योगदान देना है, वह योगदान तभी दे सकता है, जब अपनी बात वह अपनी भाषाओं में सोचे और शासन के सभी काम वह अपनी ही भाषाओं में करे। ... जब तक भारत की शिक्षा और शासन के कार्य अंग्रेजी में चलते रहेंगे, तब तक इस देश की स्वतंत्रता पर जनता का अधिकार अपूर्ण रहेगा।' ध्यातव्य है कि उस दौर के सभी चिंतकों ने स्वराज की अवधारणा प्रस्तुत करने के क्रम में सबसे पहले भाषिक गुलामी से मुक्त होने की बात कही थी। यहाँ तक कि भारतीय संविधान में भी यही प्रावधान किया गया था कि आरंभिक पंद्रह वर्षों में भारतीय जनता को अपनी भाषा (हिन्दी) में कार्य करने हेतु दक्ष कर दिया जाएगा। दुःख की बात यह है कि हिन्दी के विकास हेतु सविधान सभा ने जो स्वप्न देखा था वह पंद्रह वर्ष की जगह आज़ादी के आठ दशक बाद भी पूर्ण होता हुआ दिखाई नहीं दे रहा है। इन्हीं स्वप्नद्रष्टा चिंतकों में से एक थे - राजेंद्र बाबू। उनकी इसी चिंतन दृष्टि को देखकर दिनकर जी ने इनकी तुलना राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन से की है, 'हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने की दिशा में गांधी जी के बाद राजेन्द्र बाबू को उतना ही श्रेय है, जितना राजर्षि पुरुषोत्तमदास जी टंडन को।' राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन ने हिन्दी के विकास हेतु अनेक कार्य किए, पुस्तकों का प्रकाशन, शब्दकोश की योजना आदि को इसी कार्य का अंग मानकर उन्होंने इसे सुरुचिपूर्ण ढंग से संपादित किया। लेकिन ध्यान देने वाली बात यह है कि राजेंद्र बाबू न केवल हिन्दी भाषा के विकास हेतु कार्यरत थे बल्कि वे आधुनिक साहित्य के न केवल प्रेमी बल्कि मर्मज्ञ भी थे। उनके पसंदीदा कुछ काव्य-संग्रहों के नाम इस प्रकार हैं - मैथिलीशरण जी की 'भारत-भारती', 'यशोधरा' और 'साकेत' तथा रामनरेश त्रिपाठी जी की 'पथिक'। उल्लेखनीय है कि उनके पसंदीदा काव्य-संग्रहों में अधिकांश राष्ट्रप्रेम से संबंधित ग्रंथ ही थे। उनके चयन के आधार पर उनकी वैचारिकी का सहज ही अंदाज लगाया जा सकता है।

बोध प्रश्न

- राजेन्द्र बाबू को मूर्तिमान भारतवर्ष क्यों कहा गया ?
- विवेच्य संस्मरण के आधार पर बताएं कि हिन्दी को राष्टभाषा बनाने की दिशा में सर्वाधिक योगदान किसका है?

8.3.3 देश-काल का चित्रण :

विवेच्य संस्मरण मुख्यतः भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान और उसके तुरंत बाद के वर्षों की घटनाओं पर केंद्रित है। दिनकर ने इस कालखंड की उथल-पुथल, आंदोलनों और देशभक्ति के भाव को शब्दों में पिरोया है। लेखक ने राजेंद्र प्रसाद के चिंतन की निगाह से उस समय के भारत को न केवल देखा बल्कि उसे ठीक ढंग से वर्णित भी किया। यह वही दौर है जब भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस सशक्त रूप से भारतीय स्वाधीनता के लिए अंग्रेजी शासन-सत्ता से संघर्ष कर रही थी। इस कार्य में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का साथ सम्पूर्ण भारतीय जनता ने दिया। उस दौर में कांग्रेस का प्रभाव बढ़ रहा था। कांग्रेस पार्टी उस समय भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का केंद्रबिंदु थी। दिनकर ने कांग्रेस के भीतर के राजनीतिक गतिविधियों, नेताओं के बीच संबंधों और पार्टी के विभिन्न धड़ों के बीच संघर्ष को भी चित्रित किया है। इस दौर में अनेक ऐसे व्यक्ति भी थे जिनके प्रभाव की व्यक्ति सम्पूर्ण भारत में हो रही थी। महात्मा गांधी ऐसे व्यक्तियों में से एक थे। महात्मा गांधी का व्यक्तित्व उस समय के भारत पर छाया हुआ था। दिनकर ने गांधीजी के विचारों, उनके नेतृत्व और उनके राजेंद्र प्रसाद के साथ संबंधों को विस्तार से वर्णित किया है।

स्वाधीनता आंदोलन के दौर में जो सामाजिक परिवर्तन हो रहा था उसका प्रभाव विवेच्य संस्मरण पर भी पड़ा है। संस्मरण में उस समय के भारत में हो रहे सामाजिक परिवर्तनों का न केवल उल्लेख है बल्कि उसके दूरगामी प्रभावों का वर्णन भी है जैसे कि जातिवाद, छुआछूत और महिलाओं की स्थिति में हो रहे बदलाव आदि। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत के सामने आने वाली चुनौतियों - देश का विभाजन, सांप्रदायिक दंगे और आर्थिक चुनौतियाँ - को भी दिनकर ने अपने संस्मरण में शामिल किया है।

बोध प्रश्न

- 'राजेन्द्र बाबू' संस्मरण मे किस समयावधि का वर्णन किया गया है?
- भारत के सामने किस प्रकार की चुनौतियों का जिक्र किया गया है?

8.3.4 भाषा वैशिष्ट्य

भाषा अभिव्यक्ति का सर्वाधिक सशक्त एवं मुख्य माध्यम है। समृद्ध, सहज और ग्राह्य भाषा के द्वारा ही लेखक अपनी अभिव्यक्ति को प्रभावशाली बनाता है। विवेच्य संस्मरण की भाषा अत्यंत ही प्रभावशाली एवं बोधगम्य है। दिनकर के संदर्भ में यह पहले भी उल्लेख किया जा चुका है कि वे मूलतः कवि हैं, लेकिन विभिन्न प्रकार के गद्य साहित्य भी उन्होंने लिखा है। उनके गद्य की भाषा संस्कृतनिष्ठ तत्सम शब्दों से भरपूर होने पर भी क्लिष्ट और दुर्बोध नहीं है। उपमाओं और रूपकों के प्रयोग से बनी भाषा उनके मन्तव्य को संप्रेषित करने में पूर्णतः सफल होती है। विवेच्य संस्मरण पर भी यह बात चरितार्थ हो रही है। आरंभ से अंत तक भाषा का सरल और सहज रूप दृष्टिगोचर हो रहा है। यथा - 'गांधी जी की मृत्यु के साथ किसी की मृत्यु की तुलना नहीं की जा सकती, किन्तु यह स्पष्ट है कि राजेन्द्र बाबू का निधन अत्यन्त निदारुण शोक का विषय है और वह बहुत दिनों तक देश के हृदय को मथता रहेगा।' बोलचाल के सामान्य शब्दों के साथ-साथ संस्कृत और ऊर्दू के

शब्दों के प्रयोग के प्रति उनकी विशेष रूचि है। आवश्यक होने पर वे अंग्रेजी से भी परहेज नहीं करते हैं। विवेच्य संस्मरण में यह बखूबी देखा जा सकता है। राजेंद्र बाबू के व्यक्तित्व की महानता का वर्णन करते हुए उन्होंने लिखा है कि 'राजेन्द्र बाबू राष्ट्रपति हुए, इसे मैं राजनीति की 'रूटीन घटना' मात्र मानता हूँ। असल में, वे अपनी राजनीतिक उपलब्धियों से कहीं महान थे। वे उस उच्च कोटि के महापुरुष थे, जिसके अधिकार में रहने या न रहने से कोई फर्क नहीं आता। ऐसे महापुरुषों का जीवित रहना ही काफी होता है।'

भाषा सर्वत्र प्रवाहमयी और सहज है। किसी भी स्तर पर बोझिल, भ्रमसाध्य और क्लिष्टता का बोध नहीं जगाती है। यह न केवल विवेच्य संस्मरण की बल्कि दिनकर के गद्य-भाषा की सहज प्रकृति है। भाषा की यह सहजता ही उसे किसी भी स्तर पर दुर्बोध होने से बचाती है। निःसंदेह यह कहा जा सकता है कि भाषिक विशिष्टता के दृष्टिकोण से विवेच्य संस्मरण एक बेहतरीन रचना है।

बोध प्रश्न

- दिनकर जी के भाषा के स्वरूप पर प्रकाश डालिए।
- लेखन को प्रभावशाली बनाने में भाषा की भूमिका को संक्षिप्त रुप में स्पष्ट करें।

8.3.5 शैलीगत वैशिष्ट्य:

संस्मरण में अभिव्यक्त शैली रचना को विशिष्ट बना देती है। दिनकर जी संस्मरण लिखने की अपनी शैली से काफी प्रभावित करते हैं। प्रस्तुत संस्मरण में उन्होंने वर्णन, विश्लेषण और भावात्मक शैली का प्रयोग किया है। उन्होंने वर्णन शैली में राजेंद्र प्रसाद की स्वाभाविक गुणों और विशेषताओं को शब्दबद्ध किया है। दिनकर जी ने लिखा है 'खादी और ग्रामोद्योग के कार्यकर्त्ता राजेन्द्र बाबू पर अपना नैसर्गिक अधिकार मानते थे और भूदान-आन्दोलन उन्हें अपना निश्छल सलाहकार समझता था। हरिजनों का उद्धार और आदिवासियों का कल्याण चाहने वाली संस्थाएँ उनकी ओर गुरुभाव से देखती थीं। राष्ट्रीय एकता, विशेषतः हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए काम करने वाले लोग राजेन्द्र बाबू को अपना प्रेरणास्रोत समझते थे और हिन्दी का प्रचार करने वाली सभी संस्थाओं के वे सर्वस्व थे।... विशाल धर्मप्राण जनता राजेन्द्र प्रसाद पर सात्विक श्रद्धा रखती थी क्योंकि राजेन्द्र बाबू स्वयं परम वैष्णव और राम तथा कृष्ण के भक्त थे एवं सभी धर्मों का वे सच्चे हृदय से सम्मान करते थे।... देश में जो राजनीतिक लोग हैं, राजेन्द्र बाबू पर उनकी भी श्रद्धा थी क्योंकि डॉ. राजेन्द्र प्रसाद मेधावी होते हुए भी सीधे-सादे और विनम्र थे तथा उनकी किसी भी बात से किसी को कष्ट नहीं पहुँचता था। निश्चित ही यह वर्णन शैली रचना को सजीवता और सुंदरता प्रदान करती है।

संस्मरण में विश्लेषणात्मक शैली का अत्यंत ही महत्व है। विश्लेषणातमक शैली के माध्यम से लेखक संस्मरण में उन अनुभवों और घटनाओं का विश्लेषण करता है, जिसका वह वर्णन करना चाहता है। इस शैली से पाठक को यह समझने में मदद मिलती है कि इन घटनाओं या वर्णित

व्यक्तिव ने लेखक को कैसे प्रभावित किया है। विवेच्य संस्मरण में दिनकर जी ने विश्लेषण शैली में अपने व राजेन्द्र बाबू के विचारों को प्रतिपादित किया है। जैसा कि हम जानते हैं कि विवेच्य संस्मरण के प्रमुख पात्र या नायक राजेंद्र बाबू हैं, जो राष्ट्रीयता के प्रतीक है। अपने नायक के संदर्भ में दिनकर जी ने कई घटनाओं का विश्लेषण किया है। इस संस्मरण में राजेन्द्र बाबू के द्वारा आणविक अस्त्रों के विरोध स्वरूप दिल्ली में आयोजित सार्वभौम समारोह में दिए सुझाव व राष्ट्रभाषा हिन्दी या भारतीय भाषाओं के संबंध में प्रकट विचार आदि को देखा जा सकता है। उक्त घटनाओं के विश्लेषण से राजेन्द्र बाबू के देश-प्रेम व अपने देश की भाषाओं से लगाव को समझने में मदद मिलती है।

संस्मरण में भावात्मक शैली का भी विशिष्ट महत्व है। यह शैली रचना को ना केवल आकर्षक या रोचक बनाती है, बल्कि वर्ण्य विषय से पाठक को जोड़ने का भी कार्य करती है। रचना को शुष्क विवरण और विश्लेषण से इतर आत्मीय और प्रभावशाली बनती है। पाठक को संवेदनशील बनाने के साथ साथ भावनाओं से जोड़ने में विशेष भूमिका निभाती है। विवेच्य संस्मरण में भी भावात्मक शैली का अत्यंत ही प्रभावी और सुंदर प्रयोग हुआ है। लेखक ने राजेन्द्र प्रसाद जी को केवल महान राजनीतिक व्यक्तित्व के रूप में चित्रित नहीं किया है। उन्होंने राजेन्द्र प्रसाद की सादगी,संवेदनशीलता, विनम्रता, करुणा, आत्मीयता और मानवीय गुणों आदि भावात्मक स्तर पर चित्रित किया है। दिनकर जी की यह शैली पाठक को सहज रूप में भावात्मक यात्रा पर ले जाती हुई दिखती है। विवेच्य संस्मरण मे ऐसे अनेक प्रसंग आए है जहां पाठक भावात्मक स्तर राजेन्द्र बाबू के व्यक्तित्व से जुड़ते है। यह अकारण नहीं था कि 'उनके निधन से राष्ट्र के हर तबके और हर विचार के लोग दुखी हुए हैं और उनमें से ऐसे लोगों की संख्या भी काफी बड़ी है, जिन्हें राष्ट्रीय क्षति के अलावा वैयक्तिक शोक का बोध हुआ है।' दिनकर जी ने इस संस्मरण में राजेन्द्र बाबू की संवेदनशीलता, करुणा और भावनाओं का सजीव चित्रण किया गया है। एक प्रसंग में उन्होंने लिखा है 'उस दिन 'हिमालय' और 'नई दिल्ली' शीर्षक कविताएँ सुनते-सुनते पहले तो उनकी आँखें डबडबा आईं, फिर वे सिसक-सिसककर रोने लगे। उन्हें रोते देखकर आँसू मेरी आँखों से भी छलकने लगे और रो-रोकर ही मैंने अपना काव्य-पाठ किसी तरह पूर्ण किया।'

बोध प्रश्न

- संस्मरण लेखन में शैली की क्या भूमिका है?
- 'राजेन्द्र बाबू' संस्मरण में प्रयुक्त किसी एक शैली का परिचय दीजिए।

8.4 : पाठ सार

'राजेन्द्र बाबू' संस्मरण प्रसिद्ध कवि रामधारी सिंह दिनकर द्वारा रचित पुस्तक 'संस्मरण और श्रद्धांजलियाँ' में संकलित हैं। लेखक ने इस संस्मरण में राष्ट्रपति राजेंद्र बाबू के जीवन के विभिन्न पहलुओं को उजागर किया है। दिनकर जी ने स्वतंत्रता संग्राम में राजेंद्र बाबू की भूमिका, राष्ट्रपति बनने के बाद उनके कार्यों और उनके व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों को अपने शब्दों में बयान किया है। चूंकि यह संस्मरण राष्ट्रपति राजेंद्र प्रसाद के निधन के बाद लिखा गया है इसलिए

विवेच्य संस्मरण का आरंभ ही उनके देहावसान से होने वाली क्षति के उल्लेख के साथ हुआ है। लेखक ने राजेंद्र प्रसाद के निधन को महात्मा गांधी और सरदार वल्लभ भाई पटेल के निधन के साथ जोड़कर विवेचित किया है। उन्होंने बताया है कि देशरत्न राजेंद्र प्रसाद के देहावसान से भारत की अपार जनता को अत्यंत ही गहरा शोक हुआ। ऐसा शोक या दुख गांधीजी और सरदार पटेल की मृत्यु के बाद नहीं हुआ था।

इस संस्मरण में दिनकर ने भारत के महान नेता और प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद की व्यक्तित्व, उनके विचार, और उनके समर्पण का बखान किया है। राजेन्द्र बाबू की सरलता, साहस और मानवता के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को उजागर किया है। उन्हें एक ऐसे महान व्यक्तित्व के रूप में चित्रित किया है जो हमेशा दूसरों के कल्याण के लिए न केवल चिंतित रहा बल्कि सदैव उनका मार्गदर्शन भी किया। यही कारण है कि राजेन्द्र प्रसाद सभी धर्म, जाति, वर्ग और कल्याणकारी संस्थाओं के लिए प्रेरणा स्रोत रहे हैं। विवेच्य संस्मरण में राजेन्द्र बाबू के उन सिद्धांतों को भी उजागर किया जिसमें परंपरावादी और नवीनतावादी दोनों को भरोसा रहता है। उनके सामाजिक दृष्टिकोण पर भी चर्चा की है, जिसमें उन्होंने नवीन भारत के निर्माण के लिए शिक्षा, संस्कृति, और किसानों की भलाई पर जोर दिया। वे एक ऐसे नेता थे जो केवल राजनीतिक दृष्टि से नहीं, बल्कि सामाजिक दृष्टि से भी व्यापक दृष्टिकोण रखते थे। दिनकर ने प्रस्तुत संस्मरण में राजेन्द्र बाबू के राष्ट्रभाषा और हिन्दी प्रेम के साथ-साथ अपने व्यक्तिगत अनुभवों का भी उल्लेख किया है। उनके साथ की गई आत्मीय बातचीत, अपनी कुछ प्रसिद्ध रचनाओं के पाठ और उनके विचारों ने दिनकर को गहराई से प्रभावित किया। वे उन्हें एक महान मार्गदर्शक और नेतृत्वकर्ता के रूप में मानते थे। संस्मरण के अंत में, दिनकर ने राजेन्द्र प्रसाद को श्रद्धांजलि देते हुए उनकी जीवंतता और महानता को स्मरण किया है। यह संस्मरण उनके लिए एक सच्चे मित्र और प्रशंसक की ओर से एक भावुक सम्मान है। इस संस्मरण के माध्यम से दिनकर जी ने न केवल राजेन्द्र प्रसाद के व्यक्तित्व का चित्रण मात्र किया है, बल्कि एक सिद्धांतवादी और सामाजिक नेता के रूप में उनके योगदान को भी रेखांकित किया है। यह संस्मरण भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और उसके तुरंत बाद के महानायकों की स्मृति को जीवित रखने में एक महत्वपूर्ण कड़ी है।

8.5 : पाठ की उपलब्धियाँ

प्रस्तुत इकाई में रामधारी सिंह दिनकर द्वारा रचित 'राजेन्द्र बाबू' संस्मरण का परिचयात्मक विवरण दिया गया है। इस इकाई के अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि –

- रामधारी सिंह 'दिनकर' की रचनात्मकता का कैनवास अत्यंत व्यापक है। वे केवल एक कवि ही नहीं बल्कि गद्य लेखक भी हैं। गद्य साहित्य के सृजन की दिशा में उन्होंने आलोचना, डायरी और संस्मरण विधा में तो लिखा ही साथ ही भारत का सांस्कृतिक इतिहास (संस्कृति के चार अध्याय) भी लिखा।

- गद्य साहित्य लेखन की दुनिया में संस्मरण विधा को प्रायः गौण समझा जाता है लेकिन रामधारी सिंह दिनकर द्वारा रचित 'राजेन्द्र बाबू' नामक संस्मरण को पढ़कर यह धारणा निर्मूल हो जाती है।
- संस्मरण विधा गद्य साहित्य की अन्य विधाओं से इस अर्थ में विशिष्ट है कि उसमें सूक्ष्म विवेचन-विश्लेषण की अपेक्षा जीवन के सरस पहलुओं का वर्णन किया जाता है।
- विवेच्य संस्मरण का प्रयोजन यह है – राजेन्द्र प्रसाद जी के व्यक्तित्व के सरस एवं सहज पहलुओं का वर्णन। उनकी साहित्यिक अभिरुचि का वर्णन।

8.6 : शब्द संपदा

1. निदारुण शोक: भयानक पीड़ा, असहनीय कष्ट
2. मथता रहेगा : किसी बात को बारंबार विचारना/सोचना
3. मूर्तिमान : प्रत्यक्ष, साकार
4. नैसर्गिक : प्राकृतिक, स्वाभाविक
5. वांछनीय : चाहने योग्य
6. सार्वभौम : विश्वव्यापी, सम्पूर्ण धरती
7. आपद्धर्म : संकट काल में अपनाया गया धर्म
8. हितैषी : भला चाहने वाला / मित्र
9. तत्वावधान : देख-रेख / संरक्षण
10. अभिमत : व्यक्तिगत विचार/ सम्मति/ राय
11. रूटीन-घटना : दैनंदिन कार्य/ सामान्य घटना

8.7 : परीक्षार्थ प्रश्न

खंड : अ

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. रामधारी सिंह दिनकर द्वारा रचित संस्मरण का सारांश अपने शब्दों में प्रस्तुत कीजिए।
2. 'स्वर्गीय राजेन्द्र बाबू' संस्मरण के प्रयोजन पर प्रकाश डालिए।
3. 'स्वर्गीय राजेन्द्र बाबू ' संस्मरण के आधार पर रामधारी सिंह दिनकर की संस्मरण-शैली को विवेचित कीजिए।

खंड : आ

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. रामधारी सिंह दिनकर की पाँच प्रसिद्ध रचनाओं का उल्लेख करें।
2. राजेन्द्र बाबू संस्मरण की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।

खंड : इ

I सही विकल्प का चुनाव कीजिए :

1. 'संस्मरण और श्रद्धांजलियाँ' रचना का प्रकाशन वर्ष है –

   A) 1952 B)1970 C) 1973 D) 1962

2. संस्मरण में आये प्रसंग के अनुसार किसके मृत्यु के साथ किसी की मृत्यु की तुलना नहीं की जा सकती है?

   A) जवाहरलाल नेहरू B) पुरुषोतमदास टंडन C) महात्मा गांधी D)सरदार पटेल

3. राजेन्द्र बाबू का जन्म किस राज्य में हुआ था ?

   A) उत्तर प्रदेश B) मध्य प्रदेश C) महाराष्ट्र D) बिहार

4. रामधारी सिंह दिनकर की राजेंद्र बाबू से आखिरी मुलाकात हुई थी ?

   A) 5 फरवरी 1963 ई. B) 26 जनवरी 1950 ई.

   C)5 फरवरी 1953 ई. D) 15 अगस्त 1947 ई.

II रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

1. .....को राष्ट्रभाषा बनाने की दिशा में, गाँधी के बाद, राजेंद्र बाबू को उतना ही श्रेय है, जितना राजर्षि पुरुषोत्तमदास जी टण्डन को।
2. …….. मूर्तिमान भारतवर्ष थे।
3. गांधीजी के जीवन-काल में ही जानकार लोग यह कहा करते थे कि . ……की समस्त रचनात्मक प्रवृतियों का उत्तराधिकार ……के पास जाने वाला है।

III निम्नलिखित को सुमेलित कीजिए

1. बापू के कदमों में	क. रामनरेश त्रिपाठी
2. परशुराम की प्रतीक्षा	ख. राजेन्द्र प्रसाद
3. भारत-भारती	ग. रामधारी सिंह दिनकर
4. पथिक	घ. मैथिलीशरण गुप्त

8.8 : पठनीय पुस्तकें

1. मोदी, उर्मिला (संपा). (1995). संस्मरण और रेखाचित्र, वाराणसी, अनुराग प्रकशन
2. सिंह, दिनकर रामधारी.(2019). संस्मरण और श्रद्धांजलियाँ, इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन.
3. मिश्र, दयानिधि (संपा). (2020) हिन्दी का कथेतर गद्य: परंपरा और प्रयोग, नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन.

4. तिवारी, रामचंद्र. (2009). हिन्दी का गद्य साहित्य. वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन.
5. सिंह, विजेन्द्र नारायण, (2023). रामधारी सिंह दिनकर, नई दिल्ली, साहित्य अकादमी प्रकाशन.